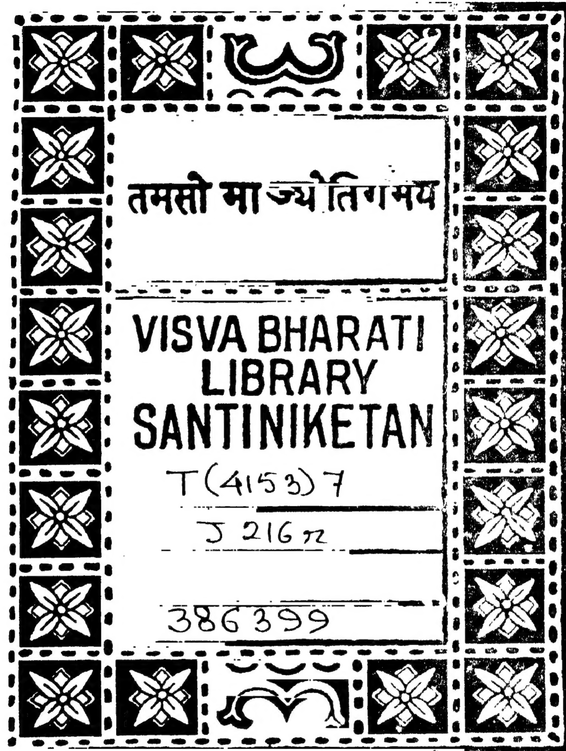
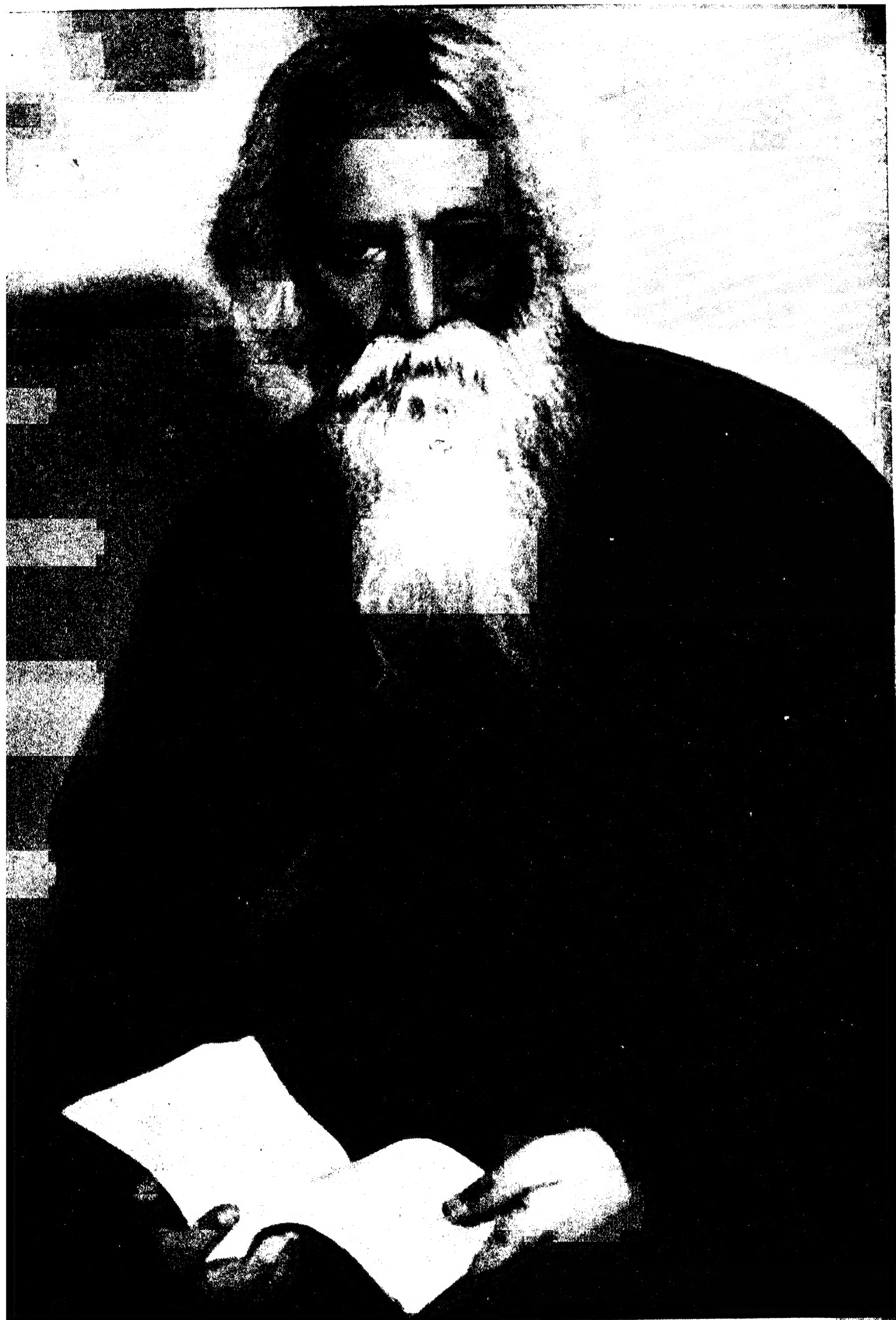


रवीन्द्र गीत एवं स्वरवितान

(सुनिर्वाचित गीत)



रवीन्द्रनाथ
१९३०

रवीन्द्र गीत एवं स्वरवितान
(सुनिर्वाचित गीत)

जलज भादुड़ी

अनुवाद तथा संकलन



विश्वभारती ग्रंथनविभाग

कोलकाता

नवीन संवर्धित संस्करण : २००३

अनुवादिका : जलज भादुड़ी

मूल्य : १५० रुपये

ISBN-81-7522-343-X

प्रकाशक प्रोफेसर सुधेन्दु मंडल
विश्वभारती। ६ आचार्य जगदीशचंद्र बोस रोड। कोलकाता १७
टाइप सेटिंग श्री धनंजय चौबे। २० मैंगो लेन। कोलकाता १
मुद्रक मैसकट प्रेस। २४६ए / बि मानिकतल्ला मेन रोड। कोलकाता ६

Price Rs. 150
$10

उत्सर्ग

शांतिनिकेतन ब्रम्हचर्याश्रम

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा स्थापित

(बंगाब्द १३०८)



कविगुरु के साथ अवनीन्द्रनाथ

प्रस्तावना

रवीन्द्र साहित्य, संगीत एव चित्रकला इत्यादि के, सस्ता और निर्भूल प्रकाशहित प्रकाशक के रूप में, विश्वभारती ग्रंथन विभाग विश्वविख्यात है । निःसंदेह इस प्रकाशन की प्रतिष्ठा ही रवीन्द्र भक्तों की मांग पूरी करने के लिये हुई थी। रवीन्द्र के अनुवाद साहित्य में, उनका संगीत पक्ष आज भी उपेक्षित है। जबकि संगीत कविगुरू का सबसे प्रिय विषय रहा है। 'प्राण' उनकी प्रसिद्ध कविता है जहाँ कवि अंतिम चार पंक्तियों में कहते हैं :-

''तोमरा तुलिबे बले सकाल विकाल
नव-नव संगीतेर कुसुम फुटाइ ।
हासि मुखे नियो तुले तार परे हाय
फेले दियो फूल यदि से शुकाय ।।''

कविगुरू के संगीत में विश्वमोहिनी शक्ति है। उनके गीत की शक्ति तलवार से बढ़कर है। तलवार केवल शत्रु को हनन कर सकता है, उनके गीत में शत्रु के हनन किये बिना, शत्रुता को निर्मूल करने वाली महाशक्ति है। अपने गीत को कवि कभी ''अर्धनारीश्वर'' कहते है ; कभी ''जल में हाइड्रोजन और ऑक्सिजन'' और कभी उसे एक ''आदर्श दंपति'' जैसा कहते हैं। कवि के गीतों की वाणी और स्वरों की मधुरतम गठबंधन को अनुवाद में, मूल के समकक्ष, प्रकट करना अत्यधिक कठिन काम है। तथापि, भारत की अनेक भाषाओं तथा अंग्रेजी, चीनी, जापानी एवं रशियन जैसी विदेशी भाषाओं में भी, छुटपुट गीतों के अनुवाद हुये, जिन्हें ग्रंथाकार- स्वरलिपि- सहित, सुरक्षित कहीं भी रखा नहीं गया है।

कविगुरु को हिन्दी भाषा से विशेष लगाव था। उत्तर भारत के शास्त्रीय संगीत और उसके स्वरलिपिकार विष्णुनारायण भातखंडे के प्रति वे बेहद श्रद्धावान थे। अतः कवि के संगीत प्रेम, हिन्दी के राष्ट्रभाषा बनने की योग्यता पर उनका विश्वास तथा उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत के स्वरलिपिकार पर श्रद्धा, इन तीनों बातों को ध्यान में रखते हुये विश्वभारती विश्वविद्यालय प्रथम बार अपने ग्रंथन विभाग से भातखंडे स्वरलिपि में आबद्ध रवीन्द्र गीतों के हिन्दी अनुवाद का संकलन प्रकाशित कर रही है। अपने ढंग का यह अनुवाद विश्व में प्रथम बार भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी में प्रकाशित हो रहा है। आशा है हिन्दी अनुवाद में रवीन्द्र संगीत

की यह त्रिमुखी साहित्य कीर्ति, बांग्ला भाषा को विश्व के प्रमुख भाषाओं के निकट लायेगी। इस प्रकार कवि के द्धारा स्थापित आश्रम, विश्वभारती का यह एक महति अभिधेय सफल होगा।

इस असाध्य कार्य को देवी भारती की आशीर्वाद से अनुवादिका डॉ(श्रीमती) जलज भादुड़ी ने, दीर्घ पच्चीस वर्षों से, एक यज्ञ जैसे निष्ठा और लगन के साथ, साधा है। जन्म सूत्र से श्रीमती जलज भादुड़ी साहित्य संगीत में रचे-बसे एक सुसंस्कृत प्रवासी बांग्ला परिवार की सदस्या रही हैं। आपने अपना जन्म हिन्दी के सर्वख्यात नगरी इलाहाबाद में होने का और क्षेत्रफल के हिसाब से उत्तर प्रदेश हिन्दीभाषी सर्वप्रधान राज्य होने की सुविधा का, पूर्णरूपेण सदुपयोग किया है। विवाह उपरांत आप मातृभाषा के समृद्ध नगरी कोलकाता में आ बसीं और क्रमशः अनुवाद के द्धारा भाषाई सेतुबंधन की दिशा में आपने अपनी कलम मजबूत की। हमारे ग्रंथन विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर सुधेन्दु मंडल जी ने पूरी निष्ठा के साथ इस ग्रंथ को द्धितीय बार परिमार्जित, परिशोधित और परिवर्धित संस्करण के रूप में प्रकाशित करने का बीड़ा उठाया है। कविगुरु के संगीत का यह नवीन शिलापट्ट, विश्वभारती ग्रंथन विभाग के सहित अनुवादिका एवं प्रोफेसर मंडल की आंतरिक सहभागिता से ही स्थापित हो रहा है।

शांतिनिकेतन
९ श्रावण, १४१० (बंगाब्द)

सुजित कुमार बसु
उपाचार्य
विश्वभारती

नवीन संस्करण के लिये मेरा निवेदन

लघु संगीत या आधुनिक संगीत के क्षेत्र में नए युग का श्रीगणेश करने में महासंगीतज्ञ कविगुरु रवीन्द्रनाथ का नाम सर्वोपरी है। केवल बंगाल ही नहीं, सारे भारत में उनकी शैली ने लघु संगीत के रूपमें पहल किया और उनकी मृत्यु के बासठ वर्ष बाद भी वह अलंघ्य बना हुआ है। उनकी इस रचना-विधा में कौन-सी ऐसी अमोघ शक्ति रही होगी जिसके बलबूते पर उन्होंने ऐसा संगीत रचा! आज भी देशकाल, जाति या स्थान-काल निर्विशेष के लिए उनका यह संगीत समान रूप से प्रयोगधर्मिता की रक्षा करता आ रहा है। अपने सुर और शब्दों में सामंजस्य रखते हुए उनके संगीत की सर्वभौम संवेदनाजन्य अभिव्यक्ति के कारण ही यह प्रतिष्ठा है।

हिन्दुस्तानी संगीत की सार्वभौमिकता को कविगुरु रवीन्द्रनाथ ने जड़ से पकड़ा था। रवीन्द्र संगीत की नयी धारा का जन्म देने से पहले मूल तत्वों को समझने के लिए उन्होंने हिन्दुस्तानी संगीत को ही नींव बनाया। मध्ययुगीन भक्ति काव्य, अष्टछाप कवियों के अष्टप्रहर का रागाश्रित हिन्दी भजन और कीर्तन को भलीभांति हृदयंगम किया। इस विषय में उन्होंने कहा, 'मैंने तो अपने संगीत में एक दशमांश हिन्दुस्तानी संगीत से उधार लिया है।' उन्होंने २१५ से ऊपर ऐसे संगीत की रचना की जो कहीं-कहीं प्रयोजन के अनुसार भाषांतर है, अन्यथा कुछ गीतों के शब्द-सुर दोनों में एक से ही रखे गये हैं।

कविगुरु की एक अप्रकाशित नोटबुक मिली थी। जिसे उन्होंने खेरोर खाता (यानी खैराती खाता) नाम दिया था। यह समीरचंद्र मजूमदार के पास मिली। समीरचंद्र के पिता श्रीशचंद्र कविगुरु के मित्र थे। खाते पर १८८९ की तारीख पड़ी है। कभी बंगाब्द १२९२ में कविगुरु ने एक सौ दस पद भक्तियुगीन वैष्णव कवियों की पदावली के अनुकरण पर रचना की थी। उसे पद 'रत्नावली' नाम दिया था। इस नोटबुक की सबसे बड़ी विशेषता है कि कवि ने स्वयं इन गीतों के बारे में उस खाते में उल्लेख किया है।

काठियावाड़ के कांग्रेस अधिवेशन में कविगुरु ने हिन्दी में भाषण दिया। साबरमती के आश्रम में हिन्दी भजन गाए। रात वहीं गांधी जी के साथ बिताया। हिन्दी भाषा को सम्मान देते हुए उन्होंने अपनी सम्मति जताई-'कभी न कभी देश को स्वराज मिलने के पश्चात हिन्दी ही हमारी राष्ट्रभाषा होगी। कारण यही सर्वाधिक

लोगों की बोली जानेवाली भाषा है।'एक स्थान पर कहा'मैंने स्वयं हिन्दुस्तानी गीतों को तोड़कर अपने संगीत में ढाला है। तब भला दोनों भाषाओं में 'कोंहड़े.और कटारी संपर्क यह कैसे मान लूं।'

कविगुरु ने यह भलीभांति परख लिया था कि हिन्दुस्तानी संगीत और कर्नाटक संगीत के मूल तत्व व प्रयोजन एक ही हैं। उसी प्रकार सिखों के भजन के राग-ताल भी पृथक नहीं है। साथ ही निर्गुण और सगुण भक्त कवियों के भजन का प्रभाव भी कविगुरु पर पड़ा।

पंजाब के **टप्पा** ने या राजस्थान की **लावणी** ने तो कभी उत्तर प्रदेश की **कजरी** ने कवि पर प्रभाव डाला था। कवि जो कुछ सुनते थे उसे पूरी तरह मन में बसा लेते थे, उन्होंने स्वयं लिखा ह **'मेरे दो हजार गीतों में से करीब २१५ गीत मैंने हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के आधार पर ही रचे हैं।'** उन्होंने राग संगीत की बंदिशें जदु भट्ट और राधिका प्रसाद गोस्वामी जी से ग्रहण किया था। इसी तरह (बंगाब्द १३०३-१३०४) हिन्दी के ध्रुपद धमार और टप्पा के आधार पर बहुत सारा रवीन्द्र संगीत बना। मूल संगीत का पहले कविगुरु चयन कर लेते थे। उसे नोटबुक में लिख लेने के बाद उसी पर अपनी गीत रचना करते थे, जो कभी-कभी मूल गीत से मिलता-जुलता या कभी उसकी छाया होती थी। यह हिंदुस्तानी वाणी का प्रभाव था। राग-रागिनियों का प्रभाव रवीन्द्र संगीत पर और अधिक पड़ा। नब्बे से अधिक संख्या में मौलिक राग-रागिनियां और मिश्र राग रवीन्द्र संगीत में आए हैं। उन्होंने भारतीय संगीत की रागमयता (मेलोडी) और पाश्चात्य के स्वर संवाद (हारमोनी) के विषय में भी कई जानकारियाँ हासिल की थी।

भारतीय संगीत के प्रमुख आधार उनके ताल होते हैं। दक्षिण में जिसे 'जाति' और उत्तर में 'लय' कहा जाता है। इस जाति या लय को लेकर भी कविगुरु ने नए ढंग से विचार किया। उन्होंने पांच, आठ, नौ, ग्यारह, पंद्रह और अठारह मात्राओं के ताल रचे और उन पर अपने गीतों को संवारा। रवीन्द्रनाथ की गीतों को किसी जाति वर्ग या क्षेत्र के घेरे में बांधा नहीं जा सकता, न ही इसमें कोई सांस्कृतिक अलगाव की भावना है बल्कि सांस्कृतिक समन्वय व एकता को ही उन्होंने अपने गीतों में संवारा है। रवीन्द्र संगीत अनुवाद की दिशा में नहीं के बराबर काम होना, इसके पीछे कारण निसंदेह काफी महत्त्वपूर्ण हैं। पृथक भाषा के ढांचे वर्तनी व्याकरण, उच्चारण तथा स्वरलिपि के गणित को तोडना मरोडना एक भाषा के तुलादंड में तौल कर दोनों में तादात्म काफी टेढी खीर वाली बात है। अतः रवीन्द्र संगीत को

अर्थात गीतवितान में संकलित गीतों तथा स्वरवितान में संकलित स्वरलिपि को आज तक अनुवाद में अनदेखा या उपेक्षित रखा गया पर ऐसा रखना भारत की (एकता, आदर्श, मर्यादा) नैतिक धार्मिक तथा उसके असली रूप को बिगाड़ कर दिखाने में ही सहयोग दे रहा है।

अतः मैंने देश और भारतीयता के वास्तव के पहचान दिलाने के क्षेत्र में कड़ी मेहनत से यह पहल करना चाहा और किया। जिसको हमारे नये प्रजन्म आगे बढ़ायेंगे यही मेरी पूरी आशा है।

ऐसे दुरूह कार्य को साधने में भूल-त्रुटि का होना कोई अनहोनी नहीं है। आचार्य हमारे बांग्ला और हिन्दीप्रेमी प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी तथा उपाचार्य सुजित बसु महोदय के आशिर्वाद ने हमें धन्य बनाया। इसे सफल और अधिक से अधिक रूचिसंपन्न, आकर्षक तथा उपयोगी बनाने में जितनी सहायता हमारे तीनों दिवंगत गुरुवों ने की है, उतनी ही मेहनत ग्रंथन विभाग के अध्यक्ष महोदय प्रो. सुधेन्दु मंडल जी ने की है। पद तथा स्वरों के मुद्रण प्रमाद के शोधन में अकथ परिश्रम श्री अशोक भट्टाचार्य तथा देवाशीष राय ने की है। मैं विशेष आभारी हूँ।

डीटीपी के सम्पूर्ण सहयोग तथा स्वरलिपि टाइप के कठिन कार्य को सम्हालने का कठिन कर्तव्य साधनें के लिये हम धनंजय चौबे के विशेष आभारी हैं। मैं उन सभी बम्बई एवं कोलकाता के बड़े और मध्यम कलाकारों के आभारी हूं जिन्होंने इन अनुवाद गीतों को सन् १९८५ से लेकर अब तक गाये और गाते जा रहे हैं।

संगीत प्रेमी सभी गुणी संगीतज्ञ तथा पाठकों के स्नेहधन्य अनुवादिका-

कोलकाता जलज भादुड़ी

१० श्रावण १४१० (बंगाब्द)

कविगुरु रवीन्द्रनाथ के 'खेरोर खाता' के कुछ गीत

हिन्दी गीतों पर रचे बांग्ला रवीन्द्र संगीत

1.शीतल तब पद छाया
2.निशिदिन जागिया आछ नाथ हे
3.आज हृदि आसने तोमारे
4.तुमि बिना काटे जीवन हे प्रभु
5.हृदय आवरण खुले दाओ
6. मधुर रूपे विराजो हे
7. आजि मम मन चाहे
8. हरषे जागो आजि जागो रे
9. शांति करो बरिषन
10. सुंदर बहे आनंद
11. मधुर रूपे विराजो हे
12. गगनेर थाले रवि चंद्र दीपक
13. बडो आशा करे एसेछी गो
14. आजि शुभ दिने
15. नमो नमो भारती
16. जीओ अंतरधामे
17. ए कि अधिकार ए भारत भूमि
18. मम चित्ते निति नृत्ये
19. ए कि लावण्ये पूर्ण प्राण
20. यदि तोर डाक सुने केउ ना आसे
21. आमार सोनार बांग्ला
22. एबार तोर मरा गांगे
23. आनन्दलोके मंगलालोके
24. ए की ए सुंदर शोभा
25. प्रथम आदि तब शक्ति
26. बिपुल तरंग रे
27. बहे निरंतर अनंत आनंदधारा
28. तब प्रेमसुधा रसे
29.आनन्दधारा बहिछे भुवने
30.शुभ्र आसने विराजो
31.आनंद तुमि स्वामी मंगल तुमि
32.पांथ एखनो केनो अलसित अंग
33.नित्य सत्य चिंतन करो रे
34.के बसिले हृदय आसने
35.उठि चलो सुदिन आइलो
36.आनंद सुगंध उच्छ्वसिलो
37.लहो लहो तुमि लहो हे
38.सुधा सागर तीरे हे
39.स्वपन यदि भांगिलो
40.दुख राते हे
41.मंदिरे मम के
42. मम प्राण काडिया लहो
43. बाजे करुण सुरे
44. रचने की इच्छा, पर बांग्ला गीत लिखा नहीं
45. रचना नहीं है
46. रचना नहीं है

हिन्दी गीतों की बंदिशें जिन पर बांग्ला गीत रचे गए थे

1.बांगुडी मेरी मूर गई जिन छुओ
2.ठकुरिया आंचड मोरी छांडि दे
3. प्यारी तोरे पावना पकडो सब मिलि
4. तुम बिनु कैसे रहूंगी ते पियु
5. नसिरे माँ वरण कोयलिया
6.फूलि वन घन मोर आये बसंत री
7.फूलि वन घन मोर आये बसंत री
8. हरख जागो लाल, लय कनारा
9. शंभू हरपद युग ध्यान बखानी नाथ रंग
10. शंकर शिव पिनाक गंगाधर
11. कौन रूप बने हो राजाधिराज
12. सिखों के भजन सुन कर रचना
13. कन्नड़ गीत से ली हुई रचना
14. कन्नड गीत से ली हुई रचना
15. मूल गीत लिखा हुआ नहीं है
16. मूल गीत लिखा हुआ नहीं है
17. गुजराती भजन से
18. कश्मीरी गीत से
19. मैसूरी भजन से
20. बांग्ला बाऊल हरिनाम दिये जगत माताल
21. बाऊल गीत-कोथाय पाबो तारे आमि
22. बाऊल गीत- मन माझी संभाल संभाल
23. महीसुरी भजन से
24. तमिल गीत से
25.प्रथम आदि शिव शक्ति
26. नाचत त्रिभंग ये
27. दुसह दोष दुख दलनी
28. कारी कारी कमरिया
29. लागी मोरी ठुमका
30. रुद्र देव नमन
31. ओंकार महादेव शंकर तुम
32. सकल कला पूरन करात आस रंगे युगत
33. काली नाम चिंतन करो रे मेरे मन
34. पंजाबी टप्पा, पारीजां तांडे-तांडे
35. उठि चल सुदिन नाचत रे आली
36. हूं आयी तोहे लेने
37. हिन्दी गीत लिखा नहीं है
38. आयो फागुन बढयो मान नंद को छैला
39. आरा मोरी बांगुडी भरन के गई ढीट लंगडवा
40. रंग रातमात आए पिया
41. सुन्दर लागे हे पिया चपल चखन
42. हंसी हंसी गरबा लगायो कन्हैया मोको
43. मद्रासी तमिल गीत से, नितु चरण मूले
44. कंगनवा मोरी ला दे री
45. राजदुलारे का बनरा आईल
46. सुंदर दुरै आयो री सो मुरा मुरा

रवीन्द्र संगीत की नवीन संयोजक स्वरलिपि

रवीन्द्रनाथ द्वारा निर्मित आकारमात्रिक स्वरलिपि को हिन्दुस्तानी उत्तरभारतीय भातखण्डे स्वरलिपि में रूपांतरित करते समय आकारमात्रिक स्वरलिपि के कुछ एक चिन्हों का संयोजन किया गया है। इससे रवीन्द्रीय गायन पद्धति तथा मूल गीत-स्वर-ताल, हिन्दी भाषा-भाषियों के लिए अधिकाधिक बोधगम्य हो जाएंगे।

आकारमात्रिक बांग्ला स्वरलिपि के संयोजन से बने, सामान्य परिवर्तित भातखण्डे स्वरलिपि को मैंने संयोजक स्वरलिपि नाम दिया है। इसे समझने के लिए दिए गए निम्नलिखित 'बयान' को आधार मानकर चलें। इस स्वरलिपि के अनुकरण से, स्वर को लिखने की आदत बना ली जाए तो केवल रवीन्द्र संगीत ही नहीं, गीत, ग़ज़ल और भजनों के सूक्ष्म सुरांतरों को दोहराने वाली पंक्तियों को, आसानी से याद रखा जा सकता है। अतः इस स्वरलिपि से उत्तर तथा दक्षिण भारत के स्वरलिपि लेखन पद्धति में सुधार और अधिक शुद्धता लाई जा सकती है।

रवीन्द्र संगीत के होनहार गायक विशिष्ट रवीन्द्र संगीतविद, श्री सुविनय राय कहते हैं, हमारे देश के किसी भी दूसरे संगीत की तुलना में रवीन्द्र संगीत की स्वरलिपि का हूबहू प्रयोग, उच्चारण प्रकृति, मात्रा विभाजन, गीतलय निर्वाचन और अलंकरणहीन मार्जित गायन प्रणाली में बन्धे नियमों का अधिकाधिक पालन होते देखा जाता है। रवीन्द्र संगीत शिक्षा पाने और सिखाने में प्रयोग के लिए, स्वरवितान की दी गई स्वरलिपि ही भविष्य में इस संगीत के प्रचार में पथ प्रदर्शक का काम करेगी।

स्वरलिपि के विषय में रवीन्द्रनाथ भी बड़े चिन्तित हुआ करते थे कारण उन्हें स्वयं स्वरलिपि निर्माण की जानकारी नहीं थी। इसके लिए वे श्री अनादि कुमार दोस्तिदार, दिनेन्द्रनाथ ठाकुर, इन्दिरादेवी प्रभृति व्यक्तियों से, खासकर अनादि कुमार और दिनेन्द्रनाथ से ही सहायता लिया करते थे।

रवीन्द्रनाथ को विष्णु नारायण भातखण्डे के स्वरलिपि पद्धति पर पूरी आस्था तथा श्रद्धा थी। श्री भातखण्डे ने अंग्रेजी युग के विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त की थी। उन्हें स्टाफ नोटेशन का पूरा ज्ञान था और उनकी मिश्रण प्रणाली की भी जानकारी थी। उनके द्वारा बने स्वरलिपि पर गुरुदेव का भी पूरा विश्वास था, जो पाश्चात्य स्टाफ नोटेशन के सहयोग से बनाई गई स्वरलिपि थी।

हिन्दुस्तानी राग संगीत में स्वरलिपि को हूबहू मानकर चलने के लिए कोई बंधे नियम नहीं होते। कारण वहाँ खबरों के विस्तार और अलंकरणों की ही अधिक मर्यादा होती है परन्तु रवीन्द्र संगीत, चूंकि शब्द और सुर प्रधान है, जहाँ काव्य रस की अक्षुण्णता पर विशेष ध्यान दिया जाता है। इसी कारण स्वरलिपि से बाहर सुर-विहार की कोई गुंजाइश इस संगीत में नहीं है। भातखण्डे स्वरलिपि में इतने सूक्ष्म चिन्ह नहीं है, जिससे रवीन्द्र संगीत के सारे नियमों की रक्षा हो सके। यही कारण है कि 'आकारमात्रिक स्वरलिपि' जो उन दिनों बंगाल में प्रचलित थी, उसे ही कवि ने रवीन्द्र संगीत के लिए पूर्णरूपेण उपयुक्त माना था। रवीन्द्रनाथ की गीत-चर्चा द्वारा इस स्वरलिपि को बंगाल में, बहुत प्रचार और प्रसार मिला। जिस प्रकार बंगाल में प्रचलित है आकारमात्रिक स्वरलिपि, उसी प्रकार पूरे भारत में भातखण्डे स्वरलिपि अधिक व्यवहृत है। अतः ये स्वाभाविक है कि हिन्दी अनुवाद द्वारा रवीन्द्र गीतों की चर्चा करने वाले भातखण्डे स्वरलिपि को सहज ही समझ लेंगे। रवीन्द्र संगीत के नियम और बंधनों को मानकर चलने के लिए, भातखण्डे स्वरलिपि के चिन्ह पर्याप्त नहीं है। **रवीन्द्र संगीत के आकारमात्रिक स्वरलिपि के साथ, भातखण्डे स्वरलिपि के मिश्रण के द्वारा, रवीन्द्र संगीत को हूबहू मूल सा बनाये रखने के प्रयास पर यहां बल दिया गया है। इस स्वरलिपि का नामकरण यदि 'रवीन्द्र-भातखंडे संयोजक स्वरलिपि' या 'संयोजक स्वरलिपि' रखा जाए, शायद अनुपयुक्त न होगा।** भविष्य में यह 'संयोजक स्वरलिपि' उत्तर भारत के गीत-गजलों के लिए भी फलदायिनी हो सकती है। सांस्कृतिक एकता के बंधन भी इससे मजबूत होंगे। पाश्चात्य संगीतज्ञ इसे 'इन्टीग्रेटेड नोटेशन' के नाम से जान सकेंगे।

रवीन्द्रनाथ स्वयं अपने समय' में भातखण्डे जी को 'एक अनन्य संगीत शिक्षक मानते थे ''विश्वविद्यालय में संगीत शिक्षा विभाग' के प्रवर्तक होने की योग्यता, एकमात्र भातखण्डे में ही है और मुझे यह स्वीकार करने में संदेह नहीं है। संगीत शिक्षा प्रणाली में उनका नैपुण्य (मास्टरी) सर्वमान्य है। वे केवल गायक ही नहीं, संगीत शास्त्र के महामहोपाध्याय है। सारे भारत की तरह बंगाल में भी, यदि उन्हें ही संगीत शिक्षा के बुनियादी संस्थापक की जिम्मेदारी सौंप दी जाती तो इसका फल अवश्य बंगाल के लिए लाभदायक होता।'' (संगीत चिंता -रवीन्द्रनाथ ठाकुर) यह कहना अनुपयुक्त न होगा कि रवीन्द्र गायन सीखना आकारमात्रिक लिपि को समझे बिना मुश्किल है। इसी कारण हम पहले पाठकों को आकारमात्रिक स्वरलिपि का परिचय कराना चाहेंगे।

आकारमात्रिक स्वरलिपि : आकारमात्रिक का अर्थ क्या है ? इन चिन्हों को देखें - । । । । ।

इस स्वरलिपि में 'प्रति मात्रा' को दर्शाने के लिए जिस चिन्ह का व्यवहार होता है, वह बांग्ला स्वरवर्ण के आकार के स्वरूप के होते हैं। इसी कारण 'आकार द्धारा मात्रा बने स्वरलपि का नाम , 'आकार मात्रिक स्वर लिपि है।'' यहाँ मंद्र-मध्य-तार को निम्न प्रकार में लिखा जाता है:-

स् र् ग् म् प् ध् नि् / स र ग म प ध नि / र्स र्र र्ग र्म र्प र्ध र्नि
उदारा मुदारा तारा
(मंद्र) (मध्य) (तार)
विकृत स्वर या कोमल स्वर = रे (ऋ), ग ঞ (ज्ञ) ध (द) नि (णी)

अनुकोमल स्वर - जो स्वर सा से कोमल, रे के बीच का है उसे कहते। लिखने की विधि है- ऋ , ज्ञ, द, ण ।

अति कोमल स्वर - जो स्वर कोमल रे, से शुद्ध रे, के बीच का हो, उसे कहते हैं लिखने की विधि है : ऋ² ज्ञ² द² ण² । यह नियम भातखंडे में नहीं है।

मात्रा स । रे । ग । पूर्ण मात्रा । । । सा रे ा गा इत्यादि।

आधी मात्रा जैसे सः रः ग्रः म्रः इत्यादि।

एक मात्रा में दो स्वर गमा, पधा

एक मात्रा में तीन स्वर गमपा, पधनी

एक मात्रा में चार स्वर गमपधा, पधनिसां

यह भातखंडे के जैसे ही लिखे जाते हैं।

विभाजन चिह्न - । म प ध । पे ध नि सा । इत्यादि यह भी भातखंडे जैसा है।

सम से सम तक का एक आवर्तन - । स रे ग । म प ध । नि् स रे । ग म प ।
1 2 3

ताल -विभाग : ये सभी भातखंडे जैसे हैं - स रे ग । म प ध । प ध न

पदों के विभाजन : अर्थात स्थायी, अन्तर, संचारी और आभोग। ऐसे हर शुरुआत में ये चिह्न -II तथा हर समाप्ति में ही चिह्न - II ऐसा ही होगा।

इसे भातखंडे में मैंने शामिल किया है।

गीत में कोई मुखड़ा या टुकडा, जो बार-बार घूम घूम कर प्रयोग में आता है। जैसे

''न स'' ''तु म''-म प
''ओ हो''

स्वर से दूसरे स्वर में जाने के बीच, विराम या स्वर को खीचना- ग।।प।।।ध। इसे हम दिखाते हैं इस प्रकार - स - - रे - ग

(स्वर से दूसरे स्वर तक जब , स्वर खींच कर लेना हो)

= रे - - प । म - - प । इत्यादि भातखंडे में।

कोई विशेष स्थानों पर से स्थाई अंतरे की उठान = ग म प ऐसा चिह्न होता है।

स्पर्श स्वर - ग म म प प ध ये हमारे भातखंडे स्वरलिपि जैसे ही होते हैं।

रवीन्द्र संगीत में तीन ब्रैकेटों का महत्वपूर्ण चिन्ह मैंने अपने स्वरलिपि में इस्तेमाल किया है । ( ) पहला, { } दूसरा [ ] तीसरा ब्राकेट का प्रयोग आगे देखें।

मीड़ - स्वर के नीचे चन्द्रमा जैसी वक्र रेखा होगी- प स

भातखंडे में यह ऊपर होता है प स प ध - - स

दोहराने के चिह्न { } ये कहां से कहाँ तक दोहराई जाए उसके लिए यह बंधनी या सेकेंड ब्रॉकिट का प्रयोग जानना आवश्यक है।

छूटते हुए स्वर और वाणी= दोहराते समय बहुधा कुछ एक वाणी या स्वर छोड़ कर भी दोहराते हैं, उन्हें ऐसे चिन्ह () द्धारा दर्शाते है (स रे-) ग म प । ध नि सा। पहला जैसा चिन्ह इसे जनना भी जरूरी है।

जब स्वरों में परिवर्तन तो हो पर वाणियों में नहीं जब दोहराते समय पहले का स्वर, दूसरी बार बदल जाता है और कहाँ से कहाँ तक बदलता है, उसका निशान-

देखिए [ ] उदाहरण जैसे [म नी प सां]

उदाहरण -स ग प ध। नि ध प ध। सांनि रें सां।

स्वर खींचना : स - - प। ध - - नी - -।

वाणी खींचना- तु 0 0 म । कौ 0 0 न

देखें यही चिह्न भातखंडे में - तु ऽ ऽ ऽ म। कौ ऽ ऽ न। ऐसा होता है।

युक्ताक्षरों का खण्डन - युक्ताक्षरों को स्वर के नीचे तोड़ कर लिखते हैं।

ग प म ग प
यथा- उ ल् ला - स= उल्लास। यह भातखंडे में भी कभी कभी आते हैं।
इस प्रकार चिह्नों की अधिकता के कारण भातखंडे की अपेक्षा, आकारमात्रिक स्वरलिपि अधिक पेंचीदा या जटिल प्रतीत होता है। रवीन्द्र संगीत में स्वरों और शब्दों को इच्छानुसार तोड़ने मोड़ने की छूट नहीं है। तभी उस स्वरलिपि में चिह्नों और बंधनों की अधिकता है। यह बात सीखने में बाधा सृष्टि न करे मैंने इस ओर ध्यान दे कर दोनों पद्धतियों को जोड़ा है, कुछ छोड़ा भी है।

रवीन्द्र संगीत के सभी गीतों को गाने के लिए एक निर्धारित लय बना लिया जाता है। भाव गम्भीर या ध्रुपद जैसे गानों को, मध्य या विलम्बित लय में, तो चपल और कभी-कभी अधिक छन्दमय गीतों को, द्रुतलय में, गाने का रिवाज है। रवीन्द्रनाथ ने इसको, कहीं भी किसी प्रकार चिह्नों से नहीं समझाया। गायक अपनी समझ के अनुसार इसे द्रुत-मध्य या विलम्बित गाते हैं। भावानुसार लय स्वयं बाँध लेते हैं। यहाँ पूरे आकारमात्रिक स्वरलिपि का परिचय पाठक से कराया गया है परन्तु पूरी स्वरलिपि के, कुछ विशेष चिह्नों को ही गीत के अनुवादों में सुविधा अनुसार, भातखंडे स्वरलिपि के साथ, जोड़ा या संयोजन किया गया है।
अतः इस स्वरलिपि को 'संयोजक स्वरलिपि' कह कर, नवीन नामकरण करना अनुचित न होगा। बांग्ला के आकारमात्रिक स्वरलिपि से जिन चिह्नों को ग्रहण किया गया है, वह निम्न प्रकार के हैः-

आवर्तन -II तथा गीत का उठान- प ध नी
स्थाई अंतरा आदि का विभाजन = II II, II II
पहला दूसरा तीसरा ब्रैकेट का नियम- ( ) { } [ ]
दी गई स्वरलिपियों को, गीत अभ्यास करते समय, क्रियात्मक रूप से अमल करते रहने से, गीतों का गायन सरल से सरलतम हो जाएगा। इसे भजन ,ग़ज़ल के लिये भी व्यवहारिक बनाने की पूरी छूट है।
स्वरलिपि के द्वारा, स्वर और शब्दों के सम्बन्ध का साधारण ज्ञान तो हो जाता है पर इसके बाद प्रयास तो इस बात का हो, कि उस गीत पर फनकारी या मास्टरी लाने के लिए हम और क्या-क्या करें? इसके लिए बंगला में उसी मूल गीत को,

रेकार्ड या दूरदर्शन अथवा रेडियो पर बजते हुए गौर से सुनें। उस पर अमल करने के लिए, उन्हें कैसेटों में उतार लें। अब हिन्दी अनुवाद गीत को उसी बंगला के स्वरों के साथ-साथ गाते जाएं। जैसा कि नोटेशन में लिखा है। उसे समझ कर गाएँ।

इस प्रकार रवीन्द्रनाथ के सुर और वाणी को, मूल जैसा छन्द, भाव, रस और स्वरों में रख कर, बिना विकृत किए हुए, मौलिक गीतों जैसा ही गाया जा सकता है। जो कुछ भी हो रवीन्द्र संगीत गवैयों को स्वरलिपि को (आदर्श मानकर) अनुसरण करने से रवीन्द्र संगीत के हिन्दी रूपान्तर के गायन में सफलता अवश्य मिलेगी।

हार्दिक आभार :

बांग्ला ग्रंथ	**लेखक**	**प्रकाशक**
रवीन्द्र रचनावली	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	विश्वभारती
संगीत चिंता	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	विश्वभारती
रवीन्द्र जीवन कथा	प्रभातकुमार मुखर्जी	आनन्द प्रकाशन
रवीन्द्र संगीत विचित्रा	शांतिदेव घोष	आनन्द पब्लिसर्स

: **स्वरलिपिकार** :

रवीन्द्रनाथ ठाकुर, दिनेन्द्रनाथ ठाकुर, शैलजारंजन मजुमदार, अनादिकुमार दोस्तिदार, इन्दिरादेवी चौधुरानी, प्रतिभादेवी, कांगालीचरण सेन, सुरेन्द्रनाथ बन्दोपाध्याय, प्रफुल्लकुमार दास आदि।

अनुक्रमणिका

	स्वरवितान सं	पृष्ठ सं.
पूजा तथा प्रेम गीत		
1. विपदे मोरे रक्षा करो	25	25
2. बहे निरन्तर अनन्त आनंदधारा	22	28
3. प्रथम आदि तव शक्ति	36	30
4. की गाब आमि की शुनाब	04	33
5. हे सखा, मम हृदये रहो	04	35
6. आछे दुःख आछे मृत्यु	02	37
7. हे निखिलभारधारण	36	39
8. आजि यत तारा तब आकाशे	22	40
9. ए मणिहार आमाय	41	42
10. दांड़िये आछ तुमि आमार गानेर ओपारे	40	45
11.तुमि केमन करे गान करो	38	47
12. आमार बेला ये याय	33	51
13. आरो आरो प्रभु	09	55
14. एकि लावण्ये पूर्ण प्राण, प्राणेश हे	45	58
15. बिपुल तरंग रे	25	60
16. ये राते मोर दुयारगुलि	39	61
17. एइ करेछ भालो निठुर	38	64
18. आगुनेर परशमणि	43	67
19. एकि ए सुन्दर शोभा	32	69
20. केन चोखेर जले	41	71
21. आनंदधारा बहिछे भुवने	45	74
22. आमार मुक्ति आलोय-आलोय	05	76
23. पिनाकेते लागे टंकार	59	78
24. तोमारि गेहे पालिछ स्नेहे	04	81
25. सखी आंधारे एकेला घरे	02	83
26. आज ज्योत्स्ना राते	40	85
27. नूपुर बेजे याय	03	168
28. जागरणे याय विभावरी	16	88
29. तोमार गोपन कथाटि	10	90

30. तुइ फेले एसेछिस कारे ------------- 07 ------------------- 93
31. तोरा ये या बलिस भाइ ------------- 56 ------------------- 96
32.आमि चिनि गो चिनि ----------- 50---------------------100
33.चांदेर हासिर बांध भेंगेछे ------------- 01 ------------------- 102
34. बाजे करुण सुरे ------------------ 05 ------------------- 105
35. ना, येयो ना, येयो ना ------------- 06 ------------------- 107
36. ना चाहिले यारे ----------------- 59 ------------------- 110
37. हे नवीना, प्रतिदिनेर पथेर धुलाय ------ 01 ------------------- 113
38. सेदिन दुजने दुलेछिनू बने ----------- 01 ------------------- 116

प्रकृति सम्बन्धी गीत (क्रम से ग्रीष्म, वर्षा, शरत, हेमंत, शीत, बसंत)

39. चक्षे आमार तृष्णा ---------------- 18 ------------------- 119
40. एइ श्रावण बेला बादल झरा ---------- 01 ------------------- 121
41. आजि झरो झरो मुखर ------------- 59 ------------------- 124
42. पागला हाओआर बादल दिने --------- 58 ------------------- 127
43. तिमिर अवगुंठने ---------------- 14 ------------------- 131
44. धरणीर गगनेर मिलनेर छंदे ---------- 30 ------------------- 134
45. आजि झड़ेर राते तोमार अभिसार ------- 11 ------------------- 137
46. मोर भावनारे कि हाओआय मातालो ---- 58 ------------------- 139
47. झरे झरो झरो ------------------ 31 ------------------- 142
48. शावन गगने घोर घनघटा ----------- 11, 21 ---------------- 144
49. नमो, नमो, नमो करुणाघन, नमो हे ---- 05 ------------------- 147
50. एसो शरतेर अमल महिमा ----------- 02 ------------------- 149
51. देखो देखो देखो शुकतारा ----------- 31 ------------------- 150
52. धानेर खेते ------------------- 50 ---------------------151
53. मोर वीणा ओठे ----------------- 42 ---------------------152
54. ग्राम छाडा ओइ ----------------- 09 ---------------------153
55. नवकुंदधवल ------------------ 50 ------------------- 154
56. आमार रात पोहालो -------------- 02 ------------------- 154
57. हिमेर राते ओइ गगनेर दीपगुलिरे ------- 02 ------------------- 158
58. शीतेर हाओआर लागलो नाचन -------- 05 ------------------- 162
59. पौष तोदेर डाक दियेछे ------------- 30 ------------------- 165
60. एकटुकु छोंआ लागे ------------- 03 ------------------- 171

61. यदि तारे नाइ चिनि -------------- 06 ------------------------ 172
62. आजि कमलमुकुलदल खूलिल -------- 36 ------------------------ 173
63. आजि खेला भांगार ---------------- 06 ------------------------ 175
64. ओगो वधू सुंदरी ---------------- 01 ------------------------ 177
65. चले याय मरि हाय बसंतेर दिन -------- 05 ------------------------ 180

विचित्र-स्वदेश-नृत्यनाट्य एवं **नाट्य-गीत**

66. नाइ नाइ भय ------------------- 03 ------------------------ 183
67. ओगो नदी, आपन वेगे ------------- 07 ------------------------ 186
68. यदि तोर डाक शुने केउ ------------- 46 ------------------------ 189
69. आलो आमार आलो ओगो ------------ 52 ------------------------ 194
70. मम चित्ते निति नृत्ये -------------- 63 ------------------------ 197
71. चोख ये ओदेर छुटे चले गो ----------- 42 ------------------------ 200
72. दूरदेशी सेइ राखाल छेले ------------- 01 ------------------------ 202
73. हे नूतन, देखा दिक आर-बार ------- 55 ------------------------ 205
74. बड़ो आशा करे एसेछी गो ------------ 08 ------------------------ 208
75. पुरानो सेइ दिनेर कथा ------------- 32 ------------------------ 210
76. दूजने देखा होल ---------------- 32 ------------------------ 212
77. तब प्रेम सुधारसे ---------------- 26 ------------------------ 215
78. दे लो सखी दे पराइये गले ---------- 48 ------------------------ 217
79. फूले फूले ढले ढले बहे ------------ 29 ------------------------ 219
80. प्रमोदे ढालिया दिनु मन ------------ 32 ------------------------ 220
81. सहे ना यातना दिवस गणिया --------- 32 ------------------------ 223
82. गहन कुसुमकुंज-माझे ------------- 21 ------------------------ 225
83. संत्रासेर बिह्वलता निजेरे अपमान ------- 17 ------------------------ 229

विभिन्न मंच एवं कैसेटों में प्रसारित कुछ एक नये अनुवाद

84. नव वसंतेर दानेर डालि ------------ 18 ------------------------ 233
85. खरवायु बय बेगे ---------------- 12 ------------------------ 234
86. बांध भेंगे दाओ ----------------- 12 ------------------------ 235
87. चरण धरिते दियो गो -------------- 40 ------------------------ 236
88. भालोबेसे सखी ----------------- 56 ------------------------ 237
89. मने रबे किना ------------------ 02 ------------------------ 238
90. तुमि रबे नीरबे ----------------- 10 ------------------------ 239
91. विश्व साथे योगे ---------------- 37 ------------------------ 239

প্রাণ

মরিতে চাহি না আমি সুন্দর ভুবনে,
মানবের মাঝে আমি বাঁচিবারে চাই।
এই সূর্যকরে এই পুষ্পিত কাননে
জীবন্ত হৃদয় মাঝে যেন স্থান পাই।
ধরায় প্রাণের খেলা চির তরঙ্গিত,
বিরহ মিলন কত হাসি অশ্রুময়,—
মানবের সুখে দুঃখে গাঁথিয়া সঙ্গীত
যেন গো রচিতে পারি অমর আলয়।
তা যদি না পারি তবে বাঁচি যতকাল
তোমাদেরি মাঝখানে লভি যেন ঠাঁই,
তোমরা তুলিবে বলে' সকাল বিকাল
নবনব সঙ্গীতের কুসুম ফুটাই।
হাসিমুখে নিয়ো ফুল, তার পরে হায়
ফেলে দিয়ো ফুল, যদি সে ফুল শুকায়।

শ্রী রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর

प्राण

न चाहूँ मैं मरना इस सुंदर भुवन में
जीऊँगा जीवन हर मानव जीवन में।
ये सूर्य किरण ये पुष्पित कानन
स्थान दो मुझे हर जीवंत हृदय में।
चिरतरंगित ये प्राण लीला धरा के
विरह मिलन अश्रु और हसी में--
मानव के सुख-दःख की गूंथ गीत माला
अमर एक आलय अब मुझे रचने दे
सफल न हुआ तो जब तक जीऊँ मैं
तुम्हारे ही बीच, थोड़ी जगह दो मुझे,
नए-नए संगीत के फूल मैं खिलाता रहूँ
कि तुम, चुन लो, सुबह शाम उसे
हस-हस कर चुनते रहना फूल मेरे
गिरा देना फूल अगर वे सूखें।।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

रवीन्द्र गीत एवं स्वरवितान
(सुनिर्वाचित गीत)

- पूजा तथा प्रेम गीत।

- प्रकृति सम्बन्धी गीत क्रम से - ग्रीष्म, वर्षा, शरत, हेमंत, शीत, बसंत।

- विचित्र-स्वदेश-नृत्यनाट्य एवं नाट्य-गीत।

- विभिन्न मंच एवं कैसेटों में प्रसारित कुछ नये अनुवाद गीत रवीन्द्र संगीत के गीतवितान तथा स्वरवितान के संख्या सहित।

बांग्ला (गीतांजली से)	हिन्दी
विपदे मोरे रक्षा करो ए नहे मोर प्रार्थना	विपद में मेरी रक्षा करो ये नहीं मेरी प्रार्थना
विपदे आमि ना येन करि भय ।	विपद में मैं न मानूं कभी भय
दुःखतापे व्यथित चिते नाइ बा दिले सांत्वना,	वेदना तप्त व्यथित चित्त को, भले ही न दो सांत्वना-
दुःखे येन करिते पारि जय ॥	वेदना को कर लेने दो जय ॥
सहाय मोर ना यदि जूटे निजेर बल ना येन टूटे	सहाय मुझे न मिले यदि अपना बल, न खोऊं कभी
संसारेते घटिले क्षति, लभिले शुधु वंचना,	जग में यदि खो दूं सभी, मिले केवल वंचना-
निजेर मने ना येन मानि क्षय ॥	अपना मन कभी, न टूटे हाय ॥
आमारे तुमि करिबे त्राण ए नहे मोर प्रार्थना	मुझे आके तारो तुम, ये नहीं मेरी प्रार्थना
तरिते पारि शकति येन रय।	तर सकूं मैं शक्ति ऐसी हो।
आमार भार लाघव करि नाइ वा दिले सांत्वना,	भार मेरा हल्का कर, भले ही न दो सांत्वना
बहिते पारि एमनि येन हय।	अपना भार आप ही ढोने दो।
नम्रशिरे सुखेर दिने तोमारि मुख लइब चिने	नत-माथ सुख के दिनों तेरा मुख सदा पहचानूं
दुखेर राते निखिल धरा ये दिन करे वंचना	दुख के रातों सारा जग जिस दिन करे वंचना
तोमारे येन ना करि संशय॥	तुझपे कभी न करूं संशय ॥

स्वरलिपि

(राग : इमन- झम्पक ताल)

	+			2		+			2		
II	सा	सां-	सां	नि	नि	ध	ध	ध	प	प	I
	वि	पद	में	मे	री	र	ऽ	क्षा	क	रो	
						म॑			म॑		
I	ध	-ध	ध	प	म॑	ग	-म॑ग	म॑	नि	-ध	I
	ये	न	ही	मे	री	प्रा	ऽऽ	र्थ	ना	ऽऽ	
I	ध	ध	प	प	रे	ग	ग	ग	रे	रे	I
	वि	प	द	में	मैं	न	मा	नूं	क	भी	

	+			2		+			2		
I	सा	-	-	-	-	ग	-	ग	रे	रे	I
	भ	य	ऽ	ऽ	ऽ	वे	द	ना	त	प्त	
I	सा	सा	ऩि	ध़-	ऩि	(ऩि)ग	-	रे	सा	ऩि	I
	व्य	थि	त	चित्त	को	भ	ले	ही	न	दो	
I	सा	-	रे	सारे	-ग	प	-	प	प	रे	I
	शा	न	त्व	नाऽ	ऽऽ	वे	-	द	ना	को	
I	ग	ग	ग	रे	रे	सा	-	-	-	-	II
	क	र	ले	ने	दो	ज	य	ऽ	ऽ	ऽ	
II{	प	प	-ग	प	-ध	ध	सां	सां	सां	सां	I
	स	हा	ऽय	मु	ऽझे	न	मि	ले	य	दि	
I	सां	गं	गं	रें	रें	सां	सां	नि	ध	प	}I
	अ	प	ना	ब	ल	न	खो	ऊँ	क	भी	
I	गं	-	गं	रें	रें	सां	सां	-सां	नि	नि	I
	ज	ग	में	य	दि	खो	ऽ	ऽदूं	स	भी	
I	ध	ध	ध	प	म॑-	(म॑)ग	मग	म॑	(म॑)नि	ध	I
	मि	ले	ऽ	के	वल	वं	ऽन	च	ना	ऽ	
I	ध	ध	प	प	रे	ग	ग	ग	रे	रे	I
	अ	प	ना	म	न	क	भी	न	टू	टे	
I	सा	-	-	-	-	II					
	हा	य	ऽ	ऽ	ऽ						

	+			2		+			2		
II{	ग	म॑	ग	प	(ग)प	प	प	प	(म॑)प	-	I
	मु	झे	ऽ	आ	के	ता	रोऽ	ऽ	तु	म	
I	प	-प	प	प	म॑	(म॑)ग	म॑ग	म॑	(म॑)नि	-ध	I
	ये	न	हीं	मे	री	प्रा	ऽऽ	र्थ	ना	ऽऽ	
I	ध	ध	प	प	रे	ग	ग	ग	रे	रे	I
	त	र	स	कूँ	मैं	श	ऽ	क्ति	ऐ	सी	
I	स	-	-	-	-	ग	ग	ग	रे	-	I
	हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	भा	ऽ	र	मे	रा	
I	सा	सा	ऩि	ध़	ऩि	(नि)ग	-	रे	सा	ऩि	I
	ह	ल	का	क	र	भ	ले	ही	न	ढो	
I	सा	-	रे	सारे	-ग	(ग)प	प	प	प	रे	I
	सा	न	त्व	नाऽ	ऽऽ	अ	प	ना	भा	र	
I	ग	ग	ग	रे	रे	सा	-	-	-	-	}I
	आ	प	ही	ढो	ने	दो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
I{	प	-	ग	प	ध	ध	सां	सां	सां	सां	I
	न	ऽ	त	मा	थ	सु	ख	के	दि	नों	
I	सां	गं	गं	रें	-	सां	सां	नि	ध	प	}I
	ते	रा	ऽ	मु	ख	स	दा	पह	चा	नूँ	
I	गं	गं	रें	रें	रे	सां	सां	सां	नि	नि	I
	दु	ख	के	रा	तों	सा	रा	ऽ	ज	ग	

	+			2		+म			2	
I	ध	ध	ध-	प	म	ग	मग	म	नि - ध	I
	जि	स	दिन	क	रे	वंऽ	ऽन	च	ना ऽ ऽ	
I	ध	ध	प	प	रे	ग	ग	ग	रे - -	I
	तु	झ	पे	क	भी	न	क	रूं	संऽ ऽ	
I	सा- -		-	-	-	II II				
	शय ऽ		ऽ	ऽ	ऽ					

झम्पक ताल रवीन्द्रनाथ की अपनी सृष्टि है। इसमें पहले विभाग में तीन फिर दो, इस प्रकार पांच मात्राओं के दो विभाग हैं कोई खाली नहीं है।

***

बांग्ला	हिन्दी
बहे निरंतर अनंत आनंदधारा ॥	बहे निरंतर अनन्त आनंद धारा।
बाजे असीम नभोमाझे अनादि रव,	बाजे असीम नभ मध्य अनादि रव
जागे अगण्य रविचंद्रतारा॥	जागे अगनित रवि-चंद-तारा॥
एकक अखंड ब्रह्मांड राज्ये	एक ही अखण्ड ब्रह्मांड राज्य-
परम-एक सेइ राजराजेन्द्र राजे।	परम एक वही राज राजेन्द्र राजे।
विस्मित निमेषहत विश्व चरणे विनत,	विस्मित निमेष-हत विश्वचरणों पे नत
लक्षशत भक्तचित वाक्यहारा॥	लाखसत भक्त-चित वाक्य हारा॥

स्वरलिपि

(लच्छासार / झपताल)

		+		2			0 प	प	3		ग	
सा नि़ सा	II	रे	-गरे	ग	म	प	ध	-	म	म	-	
ब हें नि		रं	ऽऽ	त	र	अ	नं	ऽ	त	आ	ऽ	
		रे	रे			ध		।				
		ग	-	सा	नि़	नि़	सा	-	रे	नि़	सा	II
		नं	ऽ	द	धा	ऽ	रा	ऽ	ब	हें	नि	

			प								
--- II{	प	-	नि	-ध	नि	सां	-सां	सां	सं	संन	
SSS	बा	S	जे	SS	अ	सी	S	म	न	भS	
	न										
	ध	-नि	सां	निरें	रें	सां	नि	निसां	धनि	प	}
	म	SS	ध्य	SS	अ	ना	S	विS	रS	व	
	प	प							प		
	ध	-	म	-ग	म	प	प	प	सां	नि	
	जा	S	गे	SS	अ	ग	णि	त	र	वि	
		प			ग	रे	रे				
	ध	ध	प	म	-	ग	-	सा	सानि़	सा	II
	चं	S	द्र	ता	S	रा	S	"ब	हेS	नि"	
--- II{	सां	-	नि	सां	सां	धनिसां	-नि	ध	प	-धप	
SSS	ए	S	क	ही	अ	खंडS	SS	इ	ब्र	SS	
	म	-नि	निध	प	धप	म	-गप	म	ग	गम	
	म्हां	Sन	Sइ	रा	SS	ज्य	SS	प	र	मS	
						प					
	रे	-गरे	ग	म	प	ध	-म	म	म	-ग	
	ए	SS	क	व	ही	रा	SS	ज	रा	SS	
					ध़						
	रे	गरे	सा	नि़	नि़	सा	-	-	-	-	}
	जे	SS	द्र	रा	S	जे	S	S	S	S	
{	प	-	प	निध	नि	सां	-	सां	सां	संनि	
	वि	S	स्मि	तS	नि	मे	S	ष	ह	तS	
	ध	निध	नि	सां	रें	सां	-नि	निसं	धनि	प	}
	वि	SS	श्व	च	र	र्णो	SS	पेS	नS	त	

	प	प							सं (प)		
	ध	-	म	ग	म	प	-	प	सं.	नि	
	ला	ऽ	ख	श	त	भ	ऽ	क्त	चि	त	
		प			ग	रे	रे				
II	ध	ध	प	म	-	ग	-	सा	सनि़	सा	II II
	वा	ऽ	क्य	हा	ऽ	रा	ऽ	"व	हेऽ	नि"	

***

बांग्ला

प्रथम आदि तव शक्ति
आदि परमोज्वल ज्योति तोमारि हे
गगने गगने ॥
तोमार आदि वाणी वहिछे तव आनंद,
जागिछे नव नव रसे हृदये मने ॥
तोमार चिदाकाशे भाते सूरज चन्द्र तारा,
प्राणतरंग उठे पवने।
तुमि आदिकवि, कविगुरु तुमि हे,
मंत्र तोमार मंद्रित सब भुवने ॥

हिन्दी

प्रथम आदि तव शक्ति आदि परमोज्वल
ज्योति तुम्हारी हे, नभ-गगन में ॥
तुम्हारी आदि वाणी धारे है तौ आनंद
जागे नित नव रस हृदि मन में ॥
तेरे ही चिदाकाश में शोभित
सूरज-चन्द्र-तारा,
प्राण तरंग उठे पवन में।
तुम हो आदि कवि कविगुरु तुम हो
मंत्र तेरो मंद्रित सब भुवन में ॥

स्वरलिपि

(दीपक राग/ सुलफाक ताल)*

	+				2		3			
								ध	म	ध
								'प्र	थ	म'
										॥
II	सां	-	-	नि	ध	ध	म	-ग	-म	म
	आ	ऽ	ऽ	दि	त	व	श	ऽऽ	ऽऽ	क्ति
	म	-	-	म	ग	ग	रे़	-	सा	सा
	आ	ऽ	ऽ	दि	प	र	मो	ऽ	ज्व	ल
	नि़									
	सा	-	ग	ग	म	-	ध	ध	म	ध
	ज्यो	ऽ	ति	तु	म्हा	ऽ	री	हे	न	भ

	नि सां सां सां	रे	नि	- ध म ध	II
	ग ऽ ग न	में	ऽ	ऽ 'प्र थ म'	
II{	म ध नि सां	रे -	सां	सांनि सां सां	
	तु म्हा ऽऽ री	आऽ	दि	वाऽ ऽणी	
	ऩि			नि	
	सां सां सां -	सां	सां	सां नि -ध नि	}II
	धा रे है ऽ	त	व	आ नं ऽऽ द	
	सां - गं गं	रें	रे	सां नि सां सां	
	जा ऽ गे ऽ	नि	त	न व र स	
	ध				
	नि नि सां सां	रें	-नि	- ध म ध	II
	ह दि म न	में	ऽऽ	ऽ 'प्र थ म'	
II{	सा - म -	म	म	म - ग -	
	ते ऽ रे ऽ	ही	चि	दा ऽ का श	
	म -ध ध -ग	म	म	ग - रे सा	
	में ऽऽ शो ऽऽ	भि	त	सू ऽ र ज	
	स ग ग म	ध	ध	म ध ध नि	
	चं ऽ द्र ता	ऽ	रा	प्रा ण त रं	
	ध (नि)				
	सां सां नि नि	सां	सं-	रें नि ध -	}II
	ऽ ग उ ठे	प	वन	में ऽ ऽ ऽ	
II{	म - ध -	नि	-	सां सां सां -	
	तुम ऽ हो ऽ	आ	ऽ	दि क वि ऽ	

ध नि	नि	सां	सां	सां	सां	रें	-नि	सां	सां	}II
क	वि	गु	रु	तु	म	हो	SS	S	S	
सां	-	गं	गं	रें	-	सां	नि	सां	सां	
मं	S	प्र	ते	रो	S	मं	SS	द्रि	त	
ध नि	नि	सां	सां-	रें	नि	-	ध	म	ध	II II
स	ब	भु	वन	में	S	S	'प्र	थ	म'	

***

** बांग्ला में प्रचलित सुलफाकताल में 4+2+4 मात्राओं की विष्णुपुर घराने में व्यवहृत ताल की मान्यता है।*

बाङ्ला

की गाब आमि, की शुनाब, आजि आनंदधामे।
पुरवासी जने एनेछि डेके तोमार अमृतनामे॥
केमने वर्णिब तोमार रचना, केमने रटिब तोमार करुणा,
केमने गलाब हृदय प्राण तोमार मधुर प्रेमे॥
तब नाम लये चन्द्र तारा असीम शून्ये धाइछे
रवि हते ग्रहे झरिछे प्रेम, ग्रह हते ग्रहे छाइछे।
असीम आकाश नीलशतदल तोमार किरणे सदा ढलढल,
तोमार अमृतसागर-माझारे भासिछे अविरामे॥

हिन्दी

क्या गाऊँ मैं क्या सुनाऊँ आज आनंद धाम ये
पुरवासी हैं आस लागए, तेरे अमृत नाम के॥
कैसे मैं वर्णू तेरी रचना, कैसे मैं रटाऊं तेरी करुणा,
विगलित हो कैसे प्राण, तेरे मधुर प्रेम में॥
तेरे नाम-बल चन्दा तारे, असीम नभ में धाएँ,
रविसे झरे ग्रह तक प्रेम, ग्रह-ग्रहांतर छाए।
असीम आकाश नील शतदल तेरी ही किरणों से सदा समुज्वल
तेरे ही अमृत सागर बीच हँसते खिलते हरदम रे॥

स्वरलिपि (मिश्र कानड़ा /एकताल)

	+			2			0			3			
II	सा	म	म	म	म	म	म	-	प	मप	मपध	प	
	क्या	ऽ	गा	ऊं	मैं	ऽ	क्या	ऽ	सु	नाऽ	ऽऽऽ	ऊं	
	मग	ग	ग	ग	-	गम	रे	-	-ग	सा	-	-	॥
	आऽ	ज	आ	ऽ	नं	दऽ	धा	ऽ	ऽम	में	ऽ	ऽ	
	सा	सम	म	म	म	म	म	पम	प	सां	सां	नि	
	पु	रऽ	वा	सी	हैं	ऽ	आ	ऽस	ल	गा	ये	ऽ	
	नि	ध	नि	प	म	मनि	प	-मरे	-म	रे	-	सा	II
	ते	रे	ऽ	अ	मृ	तऽ	ना	ऽऽ	म	के	ऽ	ऽ	

II {	नि	नि	नि	नि	नि	निसां	सां	निसरें	सां	सां	सां	सां	
	कै	से	मैं	व	र	णूऽ	ते	रीऽऽ	ऽ	र	च	ना	
	नि	सां	रें	रें	मं	मं	रे	रगं	सां	निध	निप	प	}
	कै	से	मैं	र	टा	ऊं	ते	रीऽ	ऽ	कऽ	रुऽ	णा	
	म	प	प	प	प	धप	म	पम	प	सां	-	सांनि	
	वि	ग	लि	त	हो	ऽऽ	कै	सेऽ	ऽ	प्रा	ऽ	ऽण	
						म							
	नि	ध	नि	प	म	नि	प	मरे	-म	रे	-	-स	II
	ते	रे	ऽ	म	धु	र	प्रे	ऽऽ	ऽम	में	ऽ	ऽऽ	
II {	ध	ध	निध	निप	प	म	प	-	प	पम	-पम	प	
	ते	रे	ना	ऽम	ब	ल	चं	दा	ऽ	ताऽ	ऽऽ	रे	
	ध	ध	ध	निध	-नि	प	मप	-मपध	प	म	-ग	-	
	अ	सी	म	नऽ	भऽ	में	धाऽ	ऽऽऽ	ऽ	यें	ऽ	ऽ	
	ग	ग	ग	ग	ग	रगम	रे	रे	रेग	सा	-	सा	
	र	वि	से	झ	रे	ऽऽऽ	ग्र	ह	तक	प्रे	ऽ	म	
	रें	म	म	म	म	प-	ध	-	म	प	-	-	}
	ग्र	ह	ग्र	हां	ऽ	तर	छा	ऽ	ऽ	ये	ऽ	ऽ	
{	नि	नि	नि	नि	नि	निसां	सां	-	सां	सां-	सां	सां	
	अ	सी	म	आ	का	ऽश	नी	ऽ	ल	शत	द	ल	
	नि	सां	रें	रें	मं-	मं	रें	रेंसां	सां	निध	निप	प	}
	ते	री	ही	कि	रणों	से	स	दाऽ	स	मुऽ	ज्वऽ	ल	

म	प	प	प	प	धप	म	पम	प	सां	सां	संनि		
ते	रे	ही	अ	मृ	तऽ	सा	गऽ	र	बी	ऽ	चऽ		
					म								
नि	ध-	नि	प	म	नि	प	मरे	म	रे	-	सा	II II
हं	सते	खि	लते	ह	र	ढ	मऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	

***

बांग्ला

हे सखा, मम हृदये रहो।
संसारे सब काजे ध्याने ज्ञाने हृदये रहो॥
नाथ, तुमि एसो धीरे सुख-दुख-हासी-नयननीरे,
लहो आमार जीवन घिरे
संसारे सब काजे ध्याने ज्ञाने हृदये रहो॥

हिन्दी

हे सखा मेरे हृदय में बसो
जगत के सभी कर्मों में ध्यान-ज्ञान-हृदय में बसो॥
नाथ तुम आओ धीरे, सुख-दुःख हँसी नयन-नीरे।
रहो मेरे जीवन घेरे,
जगत के सभी कर्मों में ध्यान-ज्ञान-हृदय में बसो॥

स्वरलिपि (छायानट/द्रुत एकताल)

						ध						॥	
II {	ग	रे	ग	-	म	प	म	ग-	रे	ऩि	रे-	सा	}
	हे	स	खा	ऽ	मे	रे	ह	दय	में	ब	सोऽ	ऽ	
				प									
	प	-	प	सां	-नि	-सां	ध	नि-	ध	प	ध	प	
	ज	ग	त	के	ऽऽ	ऽऽ	स	बऽ	हि	क	र्मों	में	
	रे-	गरे	ग	म-	ध	प	म	ग-	रे	ऩि	रे	सा	II
	ध्याऽ	ऽऽ	न	ज्ञाऽ	ऽ	न	ह	दय	में	ब	सो	ऽ	

II {	प	-	प	प-	सां-	ध	सां	सां	सां	सां	-	सां	
	ना	ऽ	थ	तुम	ऽऽ	ऽ	आ	ओ	ऽ	धी	ऽ	रे	
	सां	ध	सां	सां	सां	रें	सं	नि	ध	धनि	ध	प	}
	सु	ख	दु	ख	हं	सी	न	य	न	नीऽ	ऽ	रे	
	रे	रे	ग	म	-ध	प	म	ग-	रे	ऩि	-रे	सा	
	र	हो	ऽ	मे	ऽऽ	रे	ह	दऽ	य	घे	ऽऽ	रे	
	प	-	प	सां	-नि	-सां	ध	न-	ध	प	ध	प	
	ज	ग	त	के	ऽऽ	ऽऽ	स	बऽ	ही	क	र्मों	में	
	रे	गरे	ग	म-	ध	प	म	ग-	रे	ऩि	रे	सा	II II
	ध्या	ऽऽ	न	ज्ञाऽ	ऽ	न	ह	दय	में	बं	सो	ऽ	

***

बांग्ला

आछे दुःख, आछे मृत्यु, विरहदहन लागे,
तबुओ शांति तबु आनन्द, तबु अनन्त जागे ॥
तबु प्राण नित्यधारा, हासे सूर्य चन्द्र तारा,
बसंत निकुंजे आसे विचित्र रागे ॥
तरंग मिलाये जाय तरंग उठे
कुसुम झरिया पड़े कुसुम फूटे।
नाहि क्षय, नाहि शेष नाहि नाहि दैन्यलेश
सेइ पूर्णतार पाए मन स्थान मागे ॥

हिन्दी

असहन दुख या मरण, विरह दहन दहे
तो भी शांति तो भी आनन्द, तो भी अनन्त जागे
तो भी प्राण नित्य धारा, हँसे सूरज चन्द्र तारा
बसंत कुंज में आए अनोखे रंग लाये ॥
तरंगे सो जाएं तरंगे जागें
फूल झरे मुर्झाए नये फिर खिलें।
नहीं क्षय नहीं शेष, नहीं नहीं दैन्य-लेश,
उसी संपूरण के पगों पे मन स्थान मांगे ॥

स्वरलिपि(मिश्र जोगिया/एकताल)

										ग		
II	सारे	सरेग	ग	ग-	ग	रेसा	सरे	सरेग	ग-	रे	रे	सा
	अऽ	सऽऽ	ऽ	हन	दु	खऽ	याऽ	ऽऽऽ	ऽऽ	म	र	ण
										प		
	सा	रे	म	म	म	म	म	-	गप	म	-ग	-
	वि	र	ह	द	ह	न	द	ऽ	ऽऽ	हे	ऽऽ	ऽ
			ध				रे					
	प	ध	सां	सां	-	र	सां	सरेंग	र	सां	-निध	ध
	तो	ऽ	भी	शां	ऽ	ति	तो	भीऽऽ	आ	नं	ऽऽ	द

			नि							प			
	प	पधनि	ध	प	-	प	प	-	मप	ध	-	-	II
	तो	भीऽऽ	अ	नं	ऽ	त	जा	ऽ	ऽऽ	गे	ऽ	ऽ	
				म			सां						
II {	प	पध	म	पध	-सां	सां	रेसां	-	सां	सांनि	सां	सां	
	तो	भीऽ	ऽ	प्राऽ	ऽ	ण	निऽ	ऽ	त्य	धाऽ	ऽ	रा	
						ग				सां			
	सां	रे	-	रे	सरेग	-रे	रें	-सां	सां	नि	-ध	प	}
	हँ	से	ऽ	सू	ऽऽऽ	रज	चं	ऽऽ	द्र	ता	ऽऽ	रा	
						रे				नि			
	प	प	ध	ध	-रे	सां	सां	-नि	नि	ध	प-	प	
	व	सं	ऽ	त	ऽऽ	कुं	ऽ	ऽऽ	ज	में	आऽ	ये	
				नि									
	प	पध	नि	ध	-प	मपध	ध	-	-	-	-	-	I
	अ	नोऽ	ऽ	खे	रंग	लाऽऽ	ये	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
										प			
II {	सा	रे	म	म	-	म	म	-	म	म	ग	-	
	त	रं	ऽ	गें	ऽ	ऽ	सो	ऽ	ऽ	जा	ऽ	यें	
	ग						नि						
	म	म	ग	म	नि	नि	ध	-	-	प	-	धप	
	त	रं	ऽ	गें	ऽ	जा	गें	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	
	म	म	ग	सारे	गम	म	ग	रे	ग	रे	सा	नि	
	फू	ऽ	ल	झरें	ऽऽ	ऽ	मु	र	ऽ	झा	यें	ऽ	
							म						
	सा	सा	-र	ग	-म	मं	म	-	-	-	-	-	}
	न	ये	ऽ	फि	रऽ	खि	लें	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
			प				सां	रे					
	प	ध	म	पधा	-सां	सां	रे	सां	सां	सांनि	सां	सां	
	न	हीं	ऽ	क्षय	ऽऽ	ऽऽ	न	हींऽ	ऽ	शेऽ	ऽ	ष	

					गं			सां	नि		
सां	-रें	रें	सारें	-गं	रें	सां	निसां	नि	ध	-प	प
न	ऽहीं	ऽ	नऽ	ऽऽ	हिं	है	ऽऽ	न्य	ले	ऽऽ	श
					र				नि		
प	-ध	ध	ध	-र	सांसां	निसां	-नि	नि	ध-	प	प
उ	ऽसी	सं	पू	ऽऽ	रण	केऽ	ऽऽ	ऽ	प	गोंऽ	पे
			न			म			प		
प	पधनि	-	ध	-प	पम	प	प	प	ध	-	-
म	नऽऽ	ऽ	स्था	ऽ	ऽन	मां	ऽ	ऽ	गे	ऽ	ऽ ॥ ॥

***

बांग्ला (गौड़ : झपताल)

हे निखिलभारधारण विश्वविधाता,
हे बलदाता महाकालरथसारथि ॥
तब नामजपमाला गाँथे रवि शशि तारा।
अनंत देशकाल जपे दिवाराति ॥

हिन्दी

हे निखिल भारधारण विश्व विधाता
हे बलदाता महाकाल-रथ-सारथि ॥
तौ नाममाला गूँथ जपे रवि-शशि-तारा,
अनंत देश-कालहिं जपे दिवा-रात्रि ॥

बाग्ला

आजि यत तारा तब आकाशे
सबे मोर प्राण भरि प्रकाशे ॥
निखिल तोमार एसेछे छुटिया, मोर माझे आजि पड़ेछे टूटिया हे,
तव निकुंजेर मंजरी यत आमारि अंगे विकाशे ॥
दिके दिगंते यत आनंद लभियाछे एक गभीर गंध,
आमार चित्ते मिलि एकत्रे तोमार मंदिरे उछासे ॥
आजि कोनोखाने कारेओ ना जानि,
शुनिते ना पाइ आजि कारो वाणी हे,
निखिल निश्वास आजि ए वक्षे बाँशरिर सुरे विलासे ॥

हिन्दी

आज जितने तारे तेरे आकाश में सब मेरे प्राणभर-प्रकाश दें !!
निखिल ये तेरा, मुझ तक धाए मेरे बीच ये टूट पड़े रे, ओ-हो?
तेरे निकुंजन की मंजरियाँ मेरे अंग में- विकस उठें !!
दिग- दिगंत की सारी खुशियाँ भरी गहन सुरभी उनमें जा,
मेरे चित्त में मिलजुल कर वो तेरे ही मंदिर में शोभे ।
आज कहीं मैं किसी को न जानी सुन न पाऊं किसी की भी वाणी हो
निखिल स्पंदन आज मेरे मन में बांसुरी सी मधुर बजे !!

स्वरलिपि

	+	0	+	0	
				ग म	
	सां			आ ज	
				॥	
II	प सां- नि -ध	पध निध प म	ग -सा ग -	म - म म	
	जि तने ता ऽऽ	रेऽ ऽऽ ते रे	आ ऽऽ का श	मे ऽ स ब	
				प	
	म - गमप प	प प प प	प ध पध -नि	ध - ग म	II
	मे ऽ ऽऽऽ रे	प्रा ण भ र	प्र का ऽऽ शऽ	दें ऽ आ ज	
- - II{	म ध ध -	नि - सा -	सांनि रेसां रेसनि -	सां सांनि सां -	
ऽ ऽ	नि खि ल ये	ते ऽ रा ऽ	मुऽ झऽ तऽक ऽ	घा ऽऽ यें ऽ	

			सं		
	सां गं म ग	मं - गं ग	ऩि सां रें नि	नि - ध नि	
	मे ऽ रे ऽ	बीऽ ऽ च ये	टू ऽ टे प	ड़े ऽ रे ऽ	
	प - - ध	प - - नि	ध - - -	- - - -	}
	ओ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	हो ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	
				रें नि	
	ध सांनि सां -	नि - सां सां	निसां रेंगं -सांनि	सां - सां संध	
	ते रेऽ नि ऽ	कुं ऽ ज न	कीऽ ऽऽ मंऽ	ज रि यां ऽऽ	
		म			
	ध सां नि -	ध -पधप ग -	म - ध -	धनि -सां ग म	II
	मे ऽ रे ऽ	अं ऽऽऽऽ ग में	वि क स उ	ठे ऽ ऽऽ'आ ज'	
- -II{	म म - म	म - गम प	प प प -	प - - प	
ऽ ऽ	दि ग दि ऽ	गं त कीऽ ऽ	सा ऽ री ऽ	खु शि यां ऽ	
	म ध ध -	ध - ध -	ध -पध नि नि	नि - - नि	
	भ री ऽ ग	ह न सु र	भि ऽऽ उ न	में ऽ जा ऽ	
	नि नि - नि	निम - धनि -सां	सां सांनि नि ध	ध - ध नि	
	मे ऽ रे ऽ	चित्तऽ मेंऽ ऽऽ	मि लऽ जु ल	क र वो ऽ	
	ध प -ध प	म - ग स	ग - ग -	म - - -	}
	ते रे ऽ हि	म न दि र	में ऽ च म	कें ऽ ऽ ऽ	
				नि	
{	म ध ध -	नि - सां सां	सांनि सां रेंसांनि -	सां - सां सां	
	आ ऽ ज क	हीं ऽ मैं ऽ	किऽ सी कोऽऽ ऽ	न ऽ जा नी	
		रें			
	सां गं रें -	मं - गं -	सांनि सां सां नि	धसां नि ध नि	
	सु न ना ऽ	पा ऽ ऊं ऽ	किऽ सी ऽ की	भीऽ ऽ वा णी	

प	-	-	ध	प	-	-	नि	धा	-	-	-	-	-	-	-	}
हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
									रे							
ध	सांनि	सां	सां	नि	सां	सां	सां	ध	सा	नि	रेसा	नि	-	सा	ध	
नि	खिऽ	ल	स्प	न	ऽ	द	न	आ	ज	मे	रेऽ	म	न	में	ऽ	
ध	-	सां	नि	ध	धप	म	ग	म	-	ध	-	धनि	-सां	ग	म	II II
बां	ऽ	ऽ	सु	री	ऽऽ	सी	ऽ	म	धु	र	ब	जेऽ	ऽ	'आ	ज	

***

बांग्ला

ए मणिहार आमाय नाहि साजे
एरे परते गेले लागे, एरे छिंड़ते गेले बाजे ॥
कंठ ये रोध करे, सुर तो नाहि सरे
ओइ दिके ये मन पड़े रय मन लागे ना काजे ॥
ताइ तो बसे आछि
ए हार तोमाय पराइ यदि तबेइ आमि बाँचि ॥
फूलमालार डोरे वरिया लओ मोरे
तोमार काछे देखाइ ने मुख मणिमालार लाजे ॥

हिन्दी

ये मणिहार मुझे न सुहाये
इसे पहन लूं तो चुभे इसे तोडू तो मन दुखे ॥
कंठ यो रुध आए स्वर तो नहीं सरके ॥
उसी में ये मन भरमाये काम में लगन न लगे ॥
तभी तो बैठूं ऐसे ये हार तुम्हें पहना लूं जो तब ही धन्य मानू
फूलमाला की डोर से बस वरण मेरा कर ले
तेरे से मैं आंखे चुराऊं मणि-हार की लाज से ॥

स्वरलिपि (यमन /दादरा)

II	ग	-	ग	ग	गम	-रे	गध	प	-	-	म॑	प	
	ये	ऽ	म	णि	हाऽ	ऽर	मुऽ	झे	ऽ	ऽ	न	सु	
	सा									||			
	नि़	-	-	-सा	-रे	-ग	रेसानि़	-सा	-	-	सा	सा	
	हा	ऽ	ऽ	ऽऽ		ऽऽ	येऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	इ	से	
	नि़सारे	-	रे	रे	रे	रे	रे	रे	-	-	रे	रेग	
	पहऽ	ऽ	न	लूं	ऽ	तो	चुं	भे	ऽ	ऽ	इ	सेऽ	
	सारे-	सारेग	ग	ग	ग	ग	ग-	ग	-	-	-	-	II
	तोऽऽ	डूंऽऽ	ऽ	तो	म	न	दुऽ	खे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
- - II	{ प	-	प	म॑	प	-	प	म॑प	ध	-	-	-	
ऽ ऽ	कं	ऽ	ठ	यो	रू	ध	आ	येऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
	पध	नि-	नि	नि	निध	प	प	पध	निसां	-	-	-	}
	स्वऽ	रऽ	तो	न	हींऽ	ऽ	स	केंऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
	सां	-गं	गं	रें	सां	-	निसां	-रें	सां-	नि	ध	-	
	इ	ऽसी	ऽ	में	ये	ऽ	मन	ऽऽ	भर	मा	ये	ऽ	
	पध	नि	नि	ध	प-	-	म॑प	ग	-	-	-	-	II
	काऽ	म	में	ल	गन	न	लऽ	गे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
			नि										
- -II	सा	-नि़	ध़	-सा	सा	सा	सा	-नि़	-रे	सा	-	-	
ऽ ऽ	त	ऽभी	तो	ऽऽ	बै	ठूं	ऐ	ऽऽ	ऽऽ	से	ऽ	ऽ	
		सा			रे			ग					
	सा	नि़	-रे	रे	नि़	-रेग	ग़-	रे	-ग	रे	सा	-	
	ये	हा	ऽर	तु	म्हें	ऽऽ	पह	ना	ऽऽ	लूं	जो	ऽ	

	सा-	सा	सां	-	नि	ध	पध	निसांनि	-धनि	धप	-	म॑
	तब	ही	ऽ	ऽ	ध	न्य	माऽ	ऽऽऽ	ऽऽऽ	नूंऽ	ऽऽ	ऽ
	ग	-रे	सा	ध़सा	सा	सा	सा	ऩि	रे	सा	-	-
	त	ऽभी	तो	ऽऽ	बै	ठूं	ऐ	ऽ	ऽ	से	ऽ	ऽ
{	प	प	प	म॑	प	प	प	म॑प	ध	-	ध	ध
	फू	ऽ	ल	मा	ला	की	डो	रऽ	से	ऽ	ब	स
	प	पध	-नि	नि	नि	-धप	प-	पध	निसां	-	-	- }
	व	रण	ऽऽ	मे	रा	ऽऽऽ	कर	लेऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ
	सां	सां	-गं	रें	सां	-	(सां) रें	सां	-	नि	ध	-
	ते	रे	ऽऽ	से	मैं	ऽ	आँ	खे	चु	रा	ऊँ	ऽ
	प	पध	निसां	नि	ध	-प	(प) सा	-	-रे	ग	-	- II II
	म	णिऽ	ऽऽ	हा	र	की	ला	ऽ	ऽज	से	ऽ	ऽ

***

बाग्ला

दाँडिये आछ तुमि आमार गानेर ओ पारे
आमार, सुरगुलि पाय चरण, आमि पाइ ने तोमारे ॥
बातास बहे मरि मरि, आर बेंधे रेखो ना तरी
एसो एसो पार हये मोर हृदय-माझारे ॥
तोमार साथे गानेर खेला दूरेर खेला ये,
वेदनाते बाँशी बाजाय सकल बेला ये।
कबे निये आमार बाँशी बाजाबे गो आपनि आसि
आनंदमय नीरब रातेर निबिड़ आँधारे ॥

हिन्दी

हो- विराजे हो तुम मेरे, गीतों के उस पार।
मेरे स्वर-दल पाएँ चरण, मैं न पाऊं तुझको हेर !
बयार बहती ओहो ओरी; बाँध न रखो तरणी मेरी
आओ मेरे मन मझधार में, पार हो आओ, पार !!
हम तुम खेलें खेल ये गीतों के, सुदूर की लीला ये
वेदना में बजे बंसी, हर एक पल-पल में।
कब तुम कर-धरो मेरी बंसी, फूंक भर दो मगन मन में
आनंदमयी नीरव रात में गहन हो जब अंधियार ॥

स्वरलिपि (मिश्र विहाग /तीनताल)

II	प सां सां नि	धप म (ध)प -	म -प ग -	(ग)म - म -
	हो ऽ ऽ बि	रा ऽऽ जे हो	तुम ऽऽ ऽ ऽ	मे ऽ रे ऽ
	ग	म		॥
	रे - गम पध	ध -म पम गम	प - - -	- - प प
	गी ऽ तोंऽ ऽऽ	के ऽऽ उऽ सऽ	पा ऽ ऽ ऽ	ऽ र मे रे
		ध	प	प
	प नि - ध	धनि सं नि ध	म -प ध -	- - म प
	स्व र द ल	पाऽ ऽ एं ऽ	च ऽऽ र ण	ऽ ऽ मैं न

		स		ध प	
	धनि स्रें - रें	नि रे स नि	ध -नि ध -	सा - म -	II
	पाऽ ऽऽ ऽ ऊं	तु झ को ऽ	है ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ र ऽ	
				रे	
- - II	{ प - प सां	सां - सां -	सां - सां -नि	सां - सां -	
ऽ ऽ	ब ऽ या र	ब ह ती ऽ	ओ ऽ हो ऽऽ	ओ ऽ री ऽ	
		सं	सां	ध	
	सं नि -रें रे	रे - सां -	नि - धा -	नि धप प -	}
	बां ऽ ऽध न	र ऽ खो ऽ	त र णी ऽ	में ऽऽ री ऽ	
	प	ग			
	म - ग - म	रे- गप प -	प -गं - गं	रें -रे सां -	
	आऽ ऽ वो ऽ ऽ	मेऽ ऽऽ रे ऽ	म ऽन म झ	धा ऽर में ऽ	
	सां	नि	प	प प	
	नि रें सां नि	ध सां नि -	म -ध -प -	सा - म -	II
	पा ऽ र हो	आ ऽ ओ ऽ	पा ऽऽ ऽऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ र	
			ग	ध	
- - II	प -सां सां -	सा -नि नि -	रे - गम पध	ध पम प -	
ऽ ऽ	ह ऽम तु म	खे ऽऽ लें ऽ	खे ल येऽ ऽऽ	गी तोंऽ के सु	
		नि	ध		
	प - प -नि	नि - ध निसां	नि - - -	- - - -	
	दू ऽ र की	ली ऽ ला ऽ	ये ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	
		गं	रें	सां	
	नि -रें रें -रें	रें रें- रें -	सां - निसां -रे	नि - नि -	
	वे ऽऽ द ऽऽ	ना ऽऽ में ऽ	ब ऽ जेऽ ऽ	बं ऽ सी ऽ	
	ग	म	म		
	रे - गम पध	ध म पम गम	प - - -	- - - -	
	ह र एऽ ऽक	प ल पल ऽऽ	में ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	
				रे	
{	प - प सां	सा - सां -	सां - सां -नि	सां निसां सां -	
	क ब तु म	क र ध रो	मे ऽ री ऽऽ	बं ऽऽ सी ऽ	

								ध				ध				
सां	-	सांनि	रें	रें	सां	सां	-	नि	-	नि	ध	नि-	धप	प	-	}
फूं	ऽ	ऽऽ	क	भ	र	ढो	ऽ	म	ऽ	ग	न	मऽ	ऽन	से	ऽ	
प				ग				प								
म॑	-	ग	-म॑	रे	गप	प	-	गं	-	गं	-रे	रें	-सां	सां	सां	
आ	ऽ	नं	द	म	ऽऽ	यी	ऽ	नी	ऽ	र	व	रा	ऽऽ	त	में	
सा				नि								प		प		
नि	रें	सां	नि	ध	सां	नि	-म॑	म॑	-ध	प	-	सा	-	म॑	-	II II
ग	ह	न	हो	ज	ब	अं	धि	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ	

* * *

बांग्ला

तुमि केमन करे गान करो हे गुणी,
आमि अबाक् हये शुनि केवल शुनि।
सुरेर आलो भुवन फेले छेये,
सुरेर हावा चले गगन बेये,
पाषाण टूटे व्याकुल वेगे धेये
वहिया जाय सुररे सुरधुनि॥
मने करि अमनि सुरे गाइ
कंठे आमार सुर खुँजे ना पाइ।
कइते की चाइ, कइते कथा बाधे ,
हार मेने ये पराण आमार काँदे
आमाय तुमि फेलेछ कोन् फाँदें
चौदिके मोर सुरेर जाल बुनि॥

हिन्दी

(तुम) कैसे ऐसे गीत हो गाते चलते
गुणी कैसे ऐसा गीत गाते चलते।
अचरज में पड़े सुनते, हम सुनते गुणी॥
सुर-आलोक भुवन-भर छा जाए
सुर लहरी गगन-गगन मंडराए।
तोड़ पाषाण व्याकुल वेग से धाये

बहती जाये सुर ही, सुर की गंगा ये ॥
मन में आए तेरे जैसा गाउं
कंठ में अपने स्वर ढूंढ़ न पाऊं
कहना चाहें लब वो कह न पाए-
हार मान ले प्राण मेरा रोए।
कैसे धोखे में डाला है तूने-
चारों ओर मेरे सुर की चले जाल बिछाते ॥

स्वरलिपि

															ध	ध	
	+				0				+				0		तु	म	
	ध				रे											रे	
II	नि	-	नि	रें	सां	-	नि	-ध	प	-ध	-	प	म	-	ग	-ग	
	कै	ऽ	से	ऽ	ऐ	ऽ	सा	ऽऽ	गी	ऽऽ	त	हो	गा	ऽ	ते	ऽऽ	
	+				0 ॥				+				0				
	ग	-	म	-	-	-	म	ग	म	-	प	-	-	-	म	ग	
	च	ऽ	लते	ऽ	ऽ	ऽ	अ	च	र	ज	में	ऽ	ऽ	ऽ	प	ड़े	
											म						
	म	-	ध	-	-	-	म	ग	म	-	सां	-	-	-	नि	ध	II
	सु	न	ते	ऽ	ऽ	ऽ	ह	म	सु	न	ते	ऽ	ऽ	ऽ	"गु	णी"	
					नि						नि				रें		
- -II	म	-	म	-नि	ध	-	ध	-नि	नि	-	सां	-	सां	-रें	सां	-	
ऽ ऽ	सु	र	आ	ऽऽ	लो	ऽ	ऽ	ऽक	भु	ऽ	व	न	भ	ऽर	छा	ऽ	
	सां								सां								
	नि	-	सां	-	-	-	-	-	नि	-	नि	-	नि	-	सां	-	
	जा	ऽ	ये	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	सु	र	ल	ह	री	ऽ	ऽ	ऽ	
	सां				सां			सां	रें								
	नि	-	सां	-	नि	-सां	न	-रें	सां	-	नि	-	-ध	-	-	-	
	ग	ऽ	ग	न	ग	ऽऽ	ग	न	म	ड	रा	ऽ	ऽये	ऽ	ऽ	ऽ	

		ध		गं मं	
	ध - ध -	ध - नि -	सा - - -	म - रे -	
	तो ऽ ऽ ड़	पा षा ऽ ण	व्या ऽ कु ल	वे ऽ ग से	
	रें		सं		
	नि - सां -	- - - -	नि - नि -	नि - सां -	
	धा ऽ ये ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ब ह ती ऽ	जा ऽ ये ऽ	
	म - म -	- - ग म	प -ध प -ध	प -ध प -ध	II
	सु र ही ऽ	ऽ ऽ सु र	की ऽ गं ऽऽ	गा ऽऽ ये ऽऽ	
- -II	सा - सा -	रे - रे -	रेग - ग ग	ग म रेग म	
ऽ ऽ	म न में ऽ	आ ऽ ये ऽ	तेऽ ऽ रे ऽ	जै ऽ साऽ ऽ	
	म - - -	- - - -	म -प - प	प - प -	
	गा ऽ ऊं ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	कं ऽऽ ठ में	अ प ने ऽ	
		प	नि		
	प -ध - ध	ध - ध नि	ध - - -	ध - - -	
	स्व ऽर ऽ ऽ	दूं ऽ ढ़ न	पा ऽ ऽ ऽ	ऊँ ऽ ऽ ऽ	
				रें	
	म -ध ध ध	ध - ध नि	नि नि सां -	सां -रें सां -	
	क ऽह ना ऽ	चा ऽ हे ऽ	ल व वो ऽ	क ह ना ऽ	
	सां		सां		
	नि - सां -	- - - -	नि - - नि	नि - निसां -	
	पा ऽ ए ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	हा ऽ र मा	ऽ न लेऽ ऽ	
	सां	सां सां	रे		
	नि - सां -	नि -सां नि -रे	सां - नि -	ध - - -	
	प्रा ऽ ऽ ण	मे राऽ ऽ ऽ	रो ऽ ए ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	

						ध								मं		
ध	-	ध	-	ध	-	नि	-	सां	-	रंगं	-	मंगं	-	रे	-	
कै	ऽ	से	ऽ	धो	ऽ	खे	ऽ	मैं	ऽ	डाऽ	ऽ	लाऽ	ऽ	है	ऽ	
रे								सं								
नि	-	सां	-	-	-	-	-	नि	-	-	नि	नि	-	सां	-	
तू	ऽ	ने	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	चा	रों	ऽ	ओ	ऽ	र	मे	रे	
सां										ध		ध		ध		
म	-	म	-	-	-	ग	-म	प	-ध	प	-ध	प	ध	प	-ध	II II
सु	र	की	ऽ	ऽ	ऽ	च	ऽले	जा	ऽऽ	ल	बि	छा	ऽ	ते	ऽऽ	

***

बांग्ला

आमार बेला ये जाय साँझ बेलाते
तोमार सुरे सुरे सुर मेलाते ॥
एकताराटिर एकटि तारे गानेर वेदन बइते नारे,
तोमार साथे बारे बारे हार मेनेछि एइ खेलाते,
तोमार सुरे सुरे सुर मेलाते ॥
ए तार बाँधा काछेर सुरे,
ओइ बाँशि ये बाजे दूरे।
गानेर लीलार सेइ किनारे योग दिते कि सबाइ पारे।
विश्वहृदयपारावारे रागरागिणीर जाल फेलाते
तोमार सुरे सुरे सुर मेलाते ॥

हिन्दी

मेरा दिन ढल जाए साँझ हो आए
तेरे सुर ही सुर में सुर मिलायें ॥
'इकतारा' की एक तार में-
दर्द-भरी धुन, सध न पाए।
तेरे पास मैं, बार ही बार
हार मानी, इस खेल में,
तेरे सुर ही सुर में, सुर जो मिले ॥
पास है बंधा, इस सुर का तार,
वह बंशी जो दूर-बजे
गीतों का खेल हो जिस छोर पे
हमजोली क्या, वहां बन पायें
विश्व-हृदय-सागर में रागरागिनियाँ जाल फैलाएँ।
तेरे सुर-ही-सुर में, सुर जो मिले ॥

स्वरलिपि

			नि		सां		रें					
ध नि ।।	नि	-	सां	-	नि	-	सा	-	-	-	-	- ।।
"मे रा"	दि	न	ढ	ल	जा	ऽ	ए	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
	सां		रें		सं							
	नि	रें	सा	-	न	-	ध	-	-	ध	ध	-
	सा	ऽ	झ	हो	आ	ऽ	ए	ऽ	ऽ	ते	रे	ऽ
							म					
	ध	-	सानि	-ध	प	-म	ग	-	-	-	-	-
	सु	र	हीऽ	ऽऽ	सु	ऽर	में	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
	म	-	ध	धा	नि-	-	रेंसां	-	-	निध	पा	धा
	सु	र	ऽ	मि	लाऽ	ऽ	एँऽ	ऽ	ऽ	"मेऽ	रा	ऽऽ"
{	सा	-गं	गं	-	गं	-	गं	-	-	-	-	-
	इ	ऽक	ता	ऽ	रा	ऽ	की	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
	गं											
	मं	-	गंमंपं	-	मं	-गं	रेंसा	-नि	-	सां	-	-
	ए	क	ताऽऽ	ऽ	ऽ	रऽ	मेंऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
	सां											
	नि	-	सां	-	सां	नि	सां	गं	-	-	-	-
	ढ	र	दै	भ	री	ऽ	धु	न	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
			रें		सं							
	गंरें	-	सां	रेंसां	नि	-	सां	-	-	-	-	- }
	स	ध	न	ऽऽ	प	ऽ	ए	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
					सां							
	निरें	-	रेंसां	-	नि	नि	ध	-	-	-	-	-
	तेऽ	ऽ	रेऽ	ऽ	पा	स	मैं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

							म					
	ध	-	संनि	ध	पम	-	ग	-	ग	-	-	-
	बा	ऽ	ऽऽ	र	हीऽ	ऽ	बा	ऽ	र	ऽ	ऽ	ऽ
							ग					
	सा	-	ग	-	ग	-	म-	-	-	-	-	-
	हा	ऽ	ऽ	र	मा	ऽ	नीऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
							ग					
	मसा	-	ग	-	ग	-	म	-	-	म	म	-ग
	इस	खे	ऽ	ऽ	ल	ऽ	में	ऽ	ऽ	"मे	रे	ऽऽ"
							ध					
{	म	-	ध	-	ध	-	नि	-	-	-	-	-
	पा	स	है	ऽ	बं	ऽ	धा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
					म		नि					
	नि	-	धनि	-	सां	नि-	ध	-	-	नि	-	-
	इ	स	सुऽ	ऽ	र	काऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र
	नि		सा			रे						
	प	-	पसां	-	नि	-	सां	-	-	-	-	-
	वो	ऽ	बंऽ	ऽ	सी	ऽ	तो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
	सा			सां			रें			सं		
	प	-	धप	-	सा	नि-	सा	-	-	(नि	ध प	-मग)}
	दू	ऽ	ऽऽ	ऽ	र	व	जे	ऽ	ऽ	मे	ऽऽ	रेऽ
	सां						नि					
- - -	नि	-	नि	-	नि	-	सां	-	-	-	-	-
ऽ ऽ ऽ	गी	ऽ	तों	ऽ	का	ऽ	खे	ऽ	ऽ	ल	ऽ	हो
				मं								
	सां	मं	मं	गं	रें	-	रेंसां	नि	-	सां	-	-
	जि	स	छो	ऽ	म	ऽ	पेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
							सां					
	म	-	ध	-	ध	-	नि	-	-	धप	ध	-
	हम	जो	ऽ	ली	ऽ	क्या	ऽ	ऽ	क	हांऽ	ऽ	ऽ

		रें		सां		नि						
नि	-रे	सां	-	नि	-	ध	-	-	-	-	-	
ब	ऽ	न	ऽ	पा	ऽ	ये	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
सा	गं	गं	-	गं	-	गं	-	-	-	-	-	
वि	श्व	ऽ	ऽ	ह	ऽ	द	य	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
						गं						
गं	-	गं	रें	गं	-	मं	-	-	-गं	-	रें	
सा	ऽ	ऽ	ग	र	ऽ	में	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
						सां						
रे	-	रें	गं	रें	-	नि	-	-	सां	-	-	
रा	ग	रा	ऽ	गि	ऽ	नियां	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
सां		रें		सां								
नि	-रे	सां	-	नि	-	ध	-	-	ध	ध	-	
जा	ऽऽ	ल	फै	ला	ऽ	यें	ऽ	ऽ	ते	रे	ऽ	
		सां										
ध	-	नि	ध	प	म	ग	-	-	-	-	-	
सु	र	ही	ऽ	सुर	ऽ	में	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
						रें						
म	-	ध	ध	नि	-	सां	-	-	ध	नि		-II II
सु	र	ऽ	मि	ला	ऽ	एं	ऽ	ऽ	“मे	रा	ऽ	

* * *

बांग्ला

आरो आरो, प्रभु, आरो आरो
एमनि करे आमाय मारो ॥
लुकिये थाकि, आमि पालिये बेड़ाइ !
धरा पड़े गेछि, आर कि एड़ाइ।
या-किछु आछे सब काड़ो काड़ो ॥
एबार या करबार ता सारो सारो,
आमि हारि किंवा तुमि हारो।
हाटे घाटे बाटे करि मेला,
केवल हेंसे खेले गेछे वेला
देखि, केमने काँदाते पारो ॥

हिन्दी

अभी और प्रभु अभी और हो,
मारो मुझे ऐसे ही- और मुझे मारो ॥
छुपता रहूं कभी भागता फिरूं
पकड़ से तेरे अब कैसे टलूं
जो कुछ है मेरा सब छीन लो प्रभो ॥
अब जो करना है-सो तुरंत करो
हार मैं मानूं या तुम ही मानो
हाट-बाट-घाट लगी मेला
हँसी खेल में ही बीती बेला
बाजी रुलाने की तुम ही धरो ॥

स्वरलिपि

												म	म	ग
												अ	भी	ऽ
		II{	र	ग	ग	-	र	-	स	-	स	ऩ	स	-
			औ	ऽ	र	ऽ	प्र	ऽ	भु	ऽ	अ	ऽ	भी	ऽ
												म		॥
र	-	ग	म	-	-	-	-	-	(म	म	ग)}	ग	-	-
औ	ऽ	र	हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	"अ	भी	ऽ"	ऽ	ऽ	ऽ

	र	-	प	-	म	-	प	-	-	-	-	-	
	मा	ऽ	रो	ऽ	मु	ऽ	झे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
	ध	-	सं	-	न	सं	ध	न	ध	-	प	प	
	ऐ	ऽ	से	ऽ	ही	ऽ	औ	ऽ	र	ऽ	मु	झे	
	र	-	ग	म	-	-	-	-	-	म	म	ग	II
	मा	ऽ	ऽ	रो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	"अ	भी	ऽ"	
II	प	प	प	-	प	-	ध	-	ध	-	न	-	
	छु	प	ता	ऽ	र	ऽ	हूं	ऽ	ऽ	क	भी	ऽ	
	सं	सं	रं	-	न	-	सं	-	-	-	-	-	
	भा	ऽ	ऽ	गता	फि	ऽ	रूं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
	न	-	न	-	न	-	न	-	न	ध	न	न	
	प	ऽ	क	ड़	से	ऽ	ते	ऽ	रे	ऽ	अ	ब	
	न	-	नसं	रं	सं	न	ध प	-	-	-	-	-	
	कै	ऽ	सेऽ	ऽ	ट	ऽ	लूं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
	प सं	-	नसं	रं	सं	-	न	-	ध	-	प	प	
	जो	ऽ	कुऽ	छ	है	ऽ	मे	ऽ	रा	ऽ	स	ब	
	र	-	र-	ग	म	-	म	-	-	म	म	ग	II
	छी	ऽ	नले	ऽ	प्र	ऽ	भू	ऽ	ऽ	"अ	भी	ऽ"	
II{	स	-	र	र	र	र	र	र	र	र	र	र	
	अ	ब	जो	ऽ	क	र	ना	ऽ	है	ऽ	सो	ऽ	

र	म	म	म	म	ग	ग	-	-	र	सा	-	
तु	ऽ	र	त	क	ऽ	रो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
र	-	म	-	म	-	प	-	प	न	न	ध	
हा	र	मैं	ऽ	मा	ऽ	नू	ऽ	ऽ	या	ऽ	ऽ	
प	-	प	ध	म	-	प	-	-	-	-	-	}
तु	म	ही	ऽ	मा	ऽ	नो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
न	-	न	-	न	-	न	-	न	ध	न	त	
हा	ऽ	ट	ऽ	बा	ऽ	ट	ऽ	ऽ	ऽ	धा	ट	
सं	-	सं	रं	न	-	सं	-	-	-	-	-	
ल	ऽ	गी	ऽ	मे	ऽ	ला	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
						नि						
सं	-	नसं	रं	सं	-	स	न	ध	प	ध	-	
ह	ऽ	सीऽ	ऽ	खे	ऽ	ल	ऽ	ऽ	में	ही	ऽ	
धन	सं	न	-	ध	-	प	-	-	-	-	-	
बीऽ	ती	ऽ	ऽ	बे	ऽ	ला	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
ध						म						
प	ध	प	-	म	-	ग	-	र	ग	स	स	
बा	ऽ	जी	ऽ	रु	ऽ	ला	ऽ	ने	ऽ	की	ऽऽ	
र	-	-	ग	ग	ग	म	म	-	म	म	ग	II II
तु	म	ही	ऽ	ध	ऽ	रो	ऽ	ऽ	"अ	भी"	ऽ	

***

बांग्ला	हिन्दी
एकि लावण्ये पूर्ण प्राण, प्राणेश हे,	कैसे लावण्य भरे हो प्राण, प्राणेश हे?
आनन्दवसंतसमागमे ॥	आनंद बसंत समागम है ।
विकसित प्रीतिकुसुम हे।	विकसित है, प्रीत-कुसुम रे !
पुलकित चितकानने ॥	पुलकित चित्त कानन में ॥
जीवनलता अवनता तव चरणे।	जीवन लता, अवनत, तेरे चरणों पे
हरषगीत उच्छ्वसित हे	हर्ष-गीत उच्छ्वसित रे !
किरणमगन गगने ॥	किरण-मगन गगन में ॥

स्वरलिपि

(पूर्ण षड़ज रागिनी/महशूरी एकताल)

[निसं रेंसं नि]

						म						
II{ नि	-सां	-नि	प	-	म	ग	-	ग	रे	नि	स	
ला	ऽऽ	ऽ	व	ऽ	ण्य	भ	रे	हो	प्रा	ऽ	ण	
			प								॥	
I - रे ग म	ग	ग	म	-	-	(-	नि	नि)}	-	-	-	
ऽ प्रा ऽ णे	ऽ	श	हे	ऽ	ऽ	ऽ	कै	सा	ऽ	ऽ	ऽ	
						म						
म	-	-	म	-	रे	ग	-	-	ग	रे	सा	
आ	ऽ	ऽ	नं	ऽ	द	व	ऽ	ऽ	सं	ऽ	त	
रे	-	-	सरेस	नि	नि-	सा	-	-	-	नि	नि	I[ ]I
स	ऽ	ऽ	माऽऽ	ऽ	गम	है	ऽ	ऽ	ऽ	"कै	सा"	
स			मं									
II गं	ग	रे	गं	-	-	रें	-	रे	ऽ	सां	नि	
वि	क	सि	त	ऽ	है	प्री	ऽ	त	कु	सु	म	
सां	-	-	निसं	रेंगं	-मं	मं	-	-	मं	-	रें	
रे	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	आ	ऽ	ऽ	नं	ऽ	द	

|मगं - - | ग रें सं | रं - - | सरेंसं नि नि- | सं - - | - - - |
| व ऽ ऽ | सं ऽ त | त्प ऽ ऽ | ऽमा ऽऽ गम | है ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ |

मं मं
| ग गं रें | गं - - | रें - रे | रे सं नि | सं - - | - निसं रेंग | रेंरे ससं निनि |
| वि क सि | त ऽ ऽ | प्री ऽ त | कु सु म | है ऽ ऽ | ऽ ऽऽ ऽऽ | ऽऽ ऽऽ ऽऽ |

मं मं
| पप मम रेंरे | -स रेंमप निसरें | ग - - | गं ग रें | गं - - | रें - रें | रें सं नि |
| ऽऽ ऽऽ ऽऽ | ऽऽ ऽऽऽ ऽऽ | ऽ ऽ ऽ | वि क सि | त ऽ है | प्री ऽ त | कु सु म |

| सं नि प | म ग रे | ग ग म | -नि नि नि | ![ ]I
| पु ल कि | त चि त्त | का न न | ऽमें "कैसा" |

[नर धप] [मग रे ग]
II{| म प म | र - रे | ग - - | रे नि स |
| जी ऽ ऽ | व न ल | ता ऽ ऽ | अ व न |

स म
| निं -स नि | स ग रे- | ग रे ग | म - - |}
| ता ऽऽ ऽ | ते रे चर | णों ऽ ऽ | पे ऽ ऽ |

स स
| ग ग रें | गं - गं | रें - रें | सारेंसां नि नि |
| ह र ष | गी ऽ त | उ च्छव ऽ | सिऽऽ त ऽ |

मं
| सं सं सं | निस रेंगं मं | मं - - | मं - रे | गं - - | गं रें सं | रें - - | सरेंसं नी नी- |
| रे ऽ ऽ | ऽऽ ऽऽ ऽ | आ ऽ ऽ | नं ऽ द | व ऽ ऽ | सं ऽ त | स ऽ ऽ | माऽऽ ऽ गम |

| सं - - | - - - | गं गं रें | गं - ग | रें - रें | सरेंसं नि नि | सं - - | - निसं रेंग |
| है ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ | ह र ष | गी ऽ त | उ ऽ च्छव | सिऽऽ त ऽ | रे ऽ ऽ | ऽ ऽऽ ऽऽ |

म
| रेंरें संसं निनि | पप मम रेंरें | -स रेंमप निसरे | गं - - | गं ग रे | गं - गं | रें - रें |
| ऽऽ ऽऽ ऽऽ | ऽऽ ऽऽ ऽऽ | ऽऽ ऽऽऽ ऽऽऽ | ऽ ऽ ऽ | ह र ष | गी ऽ त | उ ऽच्छव |

सरेंसं नि नि	स नि प	म ग रे	ग ग म	-नि नि नि	II [ ] II
सिSS S त	कि र ण	म ग न	ग ग न	Sमे कै सा	

***

बांग्ला

बिपुल तरंग रे, बिपुल तरंग रे।
सब गगन उद्वेलिया मगन करि अतीत अनागत
आलोके उज्ज्वल जीवने चंचल एकि आनंद तरंग ॥
ताइ दुलिछे दिनकर चंद्र तारा,
चमकि कांपिछे चेतना धारा,
आकुल चंचल नाचे संसार, कुहरे हृदयबिहंग ॥

हिन्दी

विपुल तरंगे रे, विपुल तरंग रे।
सब गगन उद्वेलित-मगन कर अतीत अनागत
ज्योति उज्ज्वल जीवन चंचल कैसा आनंद तरंग ॥
तो ही झूमत दिनकर चंद्र तारा,
चौंकि कंपित चेतना धारा,
व्याकुल चंचल नाचे जग सारा
कुहके चित्त विहंग ॥

***

बांग्ला

ये राते मोर दुआरगुलि भांगल झड़े।
जानि नाइ तो तुमि एले आमार घरे ॥
सब ये हये गेलो कालो, निवे गेलो दीपेर आलो,
आकाश पाने हात बाड़ालेम काहार तरे ?
अंधकारे रइनु पड़े स्वपन मानि ।।
झड़ ये तोमार जयध्वजा ताइ कि जानि !
सकालबेला चेये देखि, दाँड़िये आछ तुमि ए कि
घरभरा मोर शून्यतारइ बुकेर परे ॥

हिन्दी

जिस रात मेरे द्वार सारे टूटे आंधी से।
जान न पाए, तुम आये थे, घर में मेरे ।
चारों ओर थी अंधियारी बुझ गई थी दीपशिखा भी,
आकाश की ओर हाथ पसारे कैसी आशा लिये।
जान न पाये तुम आये थे घर में मेरे।
अंधेरे में रहे पड़े माने वो सपना
आंधी है तेरी जयध्वजा मैंने न जाना।
उषा-बेला में खुली जो आंखे चकित हुए जो तुम
खड़े दिखे।
घर भरा मेरे सूनेपन के उर-आसन घेरे
जान न पाए तुम आए थे घर में मेरे ॥

***

स्वरलिपि

	सं					न				न	सं		
II	रं	सं	-	न	ध	ध	पध	पध	न	ध	न	न	
	जिस	रा	त	मे	रे	ऽ	ढ्वाऽ	ऽ	र	सा	रे	ऽ	
	न												
	ग	-	-	म	र	-	स	-	-	-	-	-	
	टू	टे	ऽ	आं	धी	ऽ	से	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
	स	स	म	म	-	म	म	गम	प	प	प	-	
	जा	न	न	पा	ये	ऽ	तु	मऽ	ऽआ	ये	थे	ऽ	
				ध			र						
	प	-	ध	न	-	नरं	सं	-	नध	पध	न	-	II
	ध	र	ऽ	मे	ऽ	मेंऽ	रे	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	
										स			
II{	म	-	न	ध	ध	न	न	सं	-	रं	रंसं	न	
	चा	रों	ऽ	ओ	र	थी	अं	धि	ऽ	या	ऽऽ	ऽ	
							स						
	सं	-	-	-	- स	-	न	सं	-	नरं	सं	न	
	री	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	बु	झ	ऽ	गऽ	यी	थी	
				स									
	न	सं	नरं	र	सं	नध	पध	न	-	-	-	-	}
	दी	ऽ	ऽप	शि	खा	ऽऽ	भीऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
	न			न			म						
	-रं	सं	-	ध	न	प	ग	-	म	र	स	-	
	आ	का	श	की	ओ	र	हा	थ	प	सा	रे	ऽ	
	स	स	म	म	गमप	म	प	-	-	-	-	-	
	कै	सी	ऽ	आ	शाऽऽ	ऽ	लि	ये	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	

	प	मप	ध	ध	-	ध	ध	पध	न	न	न	-	
	जा	नऽ	न	पा	ये	ऽ	तु	मऽ	आ	ये	थेऽ		
							रं			न	-	सं	
	न	-	सं	सं	-	नरे	सं	-	नध	पध	न	-	II
	घर	ऽ	ऽ	में	ऽ	मे	रे	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	
II{	स	-	स	स	स	र	नस	नर	र	र	र	-	
	अंऽ	धे	ऽ	रे	मे	ऽ	रऽ	हेऽ	ऽ	प	ड़े	ऽ	
	र						म						
	स	र	प	पध	मप	धप	ग	-	-	-	-	-	
	मा	ने	वो	रुऽ	पऽ	ऽऽ	ला	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
				सं			प			रं			
	न	-	सं	रं	सं	प	न	सं	नरं	न	सं	-	
	आं	धी	है	ते	री	ऽऽ	ज	य	ऽऽ	ध्व	जा	ऽ	
				र									
	नसं	नसं	रं	सं	न	ध	पध	न	-	-	-	-	}
	मैंऽ	नेऽ	ऽ	ने	जा	ऽ	नाऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
		म								स			
{	म	न	ध	ध	ध	न	न	सं	-	र	रसं	न	
	उ	पा	वे	ला	मे	ऽ	खु	ली	जो	आं	ऽऽ	ऽ	
							स						
	सं	-	-	-	-	-	न	सं	नरं	रं	सं	-	
	खे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	तुम	ही	ऽऽ	अ	हा	यों	
	स			सं									
	न	सं	नरं	रं	सं	नथ	पध	न	-	-	-	-	}
	जो	सु	मऽ	ख	डे	ऽदि	खऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
	न			न			म						
	रं	-	सं	-ध	न	प	ग	-	म	र	स	-	
	ध	र	म	रे	मे	रे	सु	ने	ऽ	पन	के	ऽ	

स	स	म	म	गमप	म	ᵐप	प	-	-	-	-	
उ	र	आ	स	नऽऽ	घे	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
प	मप	ध	ध	-	ध	ध	ᵖध	न	न	न	-	
जा	नऽ	न	प	ये	ऽ	तु	म	आ	ये	ये	ऽ	
					नि	रे						
न	-	सं	सं	न	रं	सं	-	नध	पध	न	-	II II
ध	र	ऽ	में	ऽ	मे	रे	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	

***

बांग्ला

एइ करेछ भालो निठुर हे, निठुरे हे एइ करेछ भालो।
एमनि करे हृदये मोर तीव्र दहन ज्वालो॥
आमार ए धूप ना पोड़ाले गंध किछुइ नाहि ढाले,
आमार ए दीप ना ज्वालाले देय ना किछुइ आलो॥
यखन थाके अचेतने ए चित्त आमार।
आघात से ये परश तव, सेइ तो पुरस्कार।
अंधकारे मोहे लाजे चोखे तोमाय देखि ना ये,
बज्रे तोलो आगुन क'रे आमार यत कालो॥

हिन्दी

यही किया तूने भला निठुर हे
यही किया तूने भला।
ऐसे ही हृदय में मेरे, दारूण-दहन-दहा॥
धूप मेरा जले बिना सौरभ-हीन रहे बना
दीप मेरा न जले तो फैले ना उजाला रे॥
खोए चेतन सोए रहे जब मेरा अंतर
दर्दीले वो स्पर्श तेरे है वो तो पुरस्कार॥
अंधेरे में मोह-लाज-भरे आंखें, तुझे देखें ना री
ब्रज-अनल से जला दो मैल ये काले मन का॥

स्वरलिपि

	+			2			0			3			
	[प सं]												
II(	सं	-	सं	न	ध	-	प	म	प	ग	स	र	
	य	ही	कि	या	तू	ने	भ	ला	ऽ	नि	ठु	र	
							रे						
	ग	-	-	र	स	र	प	-	-	-	-	म	
	हे	ऽ	ऽ	नि	ठु	र	हे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
										II			
	ग	म	म	ग	र	ग	र	स	-	-	-	-	}
	य	ही	कि	या	तू	ने	भ	ला	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	

	ग	मप	प	प	प	-	म	प	-	म	ग	-	
	ऐ	सेऽ	ऽ	ही	हि	र	दय	में	ऽ	मे	रे	ऽ	
	सं	-	गं	रं	सं	-	न	ध	-	प	स	र	
	दा	रु	ण	द	ह	न	द	हा	ऽ	नि	ठु	र	
	ग	-	-	र	स	र	(र)प	-	-	-	-	म	
	हे	ऽ	ऽ	नि	ठु	र	हे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
	ग	म	म	ग	र	ग	र	स	-	-	-	-	II
	य	ही	कि	या	तू	ने	भ	ला	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
II{	प	प	ग	प	प	ध	ध	सं	सं	सं	सं	-	
	धू	ऽ	प	मे	रा	ऽ	ज	ले	ऽ	बि	ना	ऽ	
	सं	-	न	ध	धन	सं	न	ध	न	ध	प	-	}
	सौ	र	भ	ही	ऽऽ	न	र	हे	ऽ	ब	ना	ऽ	
	गं	गं	गं	रं	सं	-	(सं)गं	-	गं	रं	सं	-	
	दी	ऽ	प	मे	रा	ऽ	न	ऽ	ज	ले	तो	ऽ	
	(न)र	-	सं	न	ध	सं	न	ध	-	-	-	नध	I[ ]I
	फै	ले	ऽ	ना	ऽ	उ	जा	ला	ऽ	ऽ	ऽ	रेऽ	
II{	स	(न)स	ध़	स	स	र	ग	ग	-	ग	ग	-	
	खो	ये	ऽ	चे	त	न	सो	ये	ऽ	र	हे	ऽ	
	र	स	-	स	रस	र	ग	-	-	-	-	-	
	जब	मे	रा	अं	ऽऽ	ऽ	तर	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	

	प	प	-	प	प	-	म	प	-	म	ग	-	
	दर	ढी	ऽ	ले	वो	ऽ	स्प	ऽ	र्श	ते	रे	ऽ	
	ग	-	म	प	म	-	ग	-	-	-	-	-	}
	वो	ही	तो	पु	र	स्	का	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	
{	प	-	ग	प	प	ध	धसं	सं	-	सं	सं	-	
	अन	धे	ऽ	रे	में	ऽ	मोऽ	ह	ला	ज	भ	री	
	सं	-	न	ध	धन	सं	न	ध	न	ध	प	-	}
	आं	खे	ऽ	तू	झे	ऽ	दे	खे	ऽ	ना	रे	ऽ	
	सं	-	गं	रं	सं	-	सं गं	गं	गं	रं	सं	-	
	ब	ऽ	ज्र	अ	न	ल	से	ऽ	ज	ला	दो	ऽ	
	न रं	सं	सं	न	ध	सं	न	ध	-	-	-	नध	II [ ] II
	मै	ल	ये	का	ले	ऽ	म	न	का	ऽ	ऽ	रेऽ	

***

बांग्ला

आगुनेर परशमणि छोंआओ प्राणे।
ए जीवन पुण्य करो दहन-दाने ॥
आमार एइ देहखानि तुले धरो,
तोमार ओइ देवालयेर प्रदीप करो
निशिदिन आलोक-शिखा ज्वलुक गाने॥
आँधारेर गाये गाये परश तव।
सारा रात फोटाक तारा नव नव।
नयनेर दृष्टि हते घुचवे कालो,
येखाने पड़बे सेथाय देखबे आलो
व्यथा मोर उठबे ज्वले उर्ध्व-पाने॥

हिन्दी

अग्निमयी- पारसमणि छुआ दे प्राण से -
ये जीवन पावन हो रे, दहन दहा दे॥
मेरा ये तन-बदन ऊपर उठालो
तूम अपने देवालय में दीप बना लो
निशिदिन ज्योति-शिखा जले, गीतों में॥
अंधेरी काया को यो, तेरा छूना-
सजाये नितनए तारे, सारी रैना।
नैनों की कालिमा यो धुल जाएगी
जहां भी झरो, वहां ज्योति जगेगी
व्यथा मेरे जलकर ऊपर उड़ेगी हवा में॥

स्वरलिपि

ग	ग ग - II	ग ग ग	ग ग -	ग ग -	ग रे म	
अग	नी म यी	पा र स	म णि ऽ	छु आ दे	प्रा ऽ ण	

II		म		
म - म	म म -	ग - प	म ग -	- - ग
से ऽ ये	जी व न	पा व न	हो रे ऽ	ऽ ऽ ये

	ग					
ग ग ग	रे - म	ग रे -	- रे रे	रे - ग	सा - ग	रे सा -
जी व न	पा व न	हो रे ऽ	ऽ ऽ ये	जी व न	पा व न	हो रे ऽ

						ध	
- - सा	सा सा -प	प - प	प प -	प प मं	प मं प	- - -	- - -
ऽ ऽ ये	जी व न	पा व न	हो रे ऽ	द ह न	द हा ऽ	दे ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ

स रे ग-	ग ग -	II
ऽ ऽ अग	नि म यी	

प	प प - II	प प -	प प -	प प म	प - मं
मे	रा ये ऽ	त न ऽ	ब द न	ऊ प र	उ ठा य

प   प   ग
प - नी | नी नी - | ध ध प | प प - | म म ग | रे - म | ग - { प | नी नी -
ले ऽ तू | अप ने ऽ | दे वा ऽ | लय में ऽ | दी ऽ प | ब ना ऽ | ले ऽ नि | श दि न

नि नि - | नी नीध नी | सां सांनि रें | सां - नीध | I
ज्यो ऽ ति | शि खाऽ ऽ | ज लेऽ ऽ | गी तों ऽऽ |

ध
नी -} - | - - - | सा रे ग- | ग ग - II
में ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ अग | नि म यी

स | सा सा - | I{सा सा - | सा सा - | सा सा सा | सा -नि़ सरे | रे - सा
अं | धे री ऽ | का या ऽ | को यों ऽ | ते रा ऽ | छू ऽऽ ऽऽ | ना ऽ स

प
ग - ग | ग ग - | म प मग | ग म ग | रे - गम
जा गा ये | ऽ नित न | ए ता रे | ऽऽ सा री | ऽ रै ऽऽ

ग - (सा | सा सा सा |) } I
ना ऽ ऽ | अं धे रो |

प | प प - | प - प | प प - | प - प | प - म
नै | नों की ऽ | का लि ऽ | मा यो ऽ | धु ल ऽ | जा ए ऽ

ध   प   ग
पम -प नी | नी नी - | ध - ध | प प - | म -मग | रे - गम | ग - { प नी नी - |
गीऽ ऽऽ ज | हां भी ऽ | झ रो ऽ | व हां ऽ | ज्यो तिऽ | जागे ऽऽ | गीऽ व्य था मे रे |

नी - नी | नी नीध नी | सां - रें | सां - नीध | I
जल क र | ऊ पऽ र | उ ड़ें गी | ह वा ऽऽ |

ध
नी -} - | - - - | स -रे ग- | ग ग - II II
में ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ अग | नी म यी

***

बांग्ला	हिन्दी
एकि ए सुन्दर शोभा ! की मुख हेरि ए !	कैसी है सुन्दर शोभा ! क्या मुखछवि निहारूं।
आजि मोर घरे आइल हृदयनाथ,	आज मेरे घर आए हों हृदय नाथ-
प्रेम-उत्स उथलिल आजि ॥	प्रेम उत्स उथले रे, आज ये ॥
बलो हे प्रेममय हृदयेर स्वामी,	बोलो हे प्रेमघन हृदय स्वामी।
की धन तोमारे दिब उपहार !	क्या धन तुझे मैं भेंट चढ़ाऊं-
हृदय प्राण लहो लहो तुमि, की बलिब	हृदय प्राण हरो हरो तुम
याहा-किछु आछे मम सकलइ लओ हे नाथ॥	क्या कहूं मैं, जो कुछ है मेरा-
	सकल ले-लो नाथ॥

स्वरलिपि

[ग - र] ॥

1	2	0	3
	॥{	ग म ग र	स ध़ स र
		कै ऽ सी है	सु न् द र
ग - - -	रग ध प प}	{प - ग ग	ग ग ग -
शो ऽ ऽ ऽ	ऽऽ ऽ भा ऽ	क्या ऽ मु ख	छ वि नि ऽ
प प(ग) प प	(गे रे स रे) }	ग रे सा -	स - ध स
हा ऽ ऽ ऽ	रूं ऽ ऽ ऽ	रूं ऽ ऽ ऽ	आ ऽ जं मे
			- र स र
			ऽ रे घ र
ग ग ग ग	ग ग ग ग	सं सं(न) ध एम	ध प प ग
आ ये हैं ह	द य ना थ	प्रे ऽ म उऽ	त स उ थ
प(ग) - ग ग(म)	ग रे म ग-	I [ ] I	
ले ऽ रे ऽ	आ ऽ जा ये		

II {	प	प	ग	प	-	ध	प	ध	सं	सं	सं	संन	[र]सं	-	सं	-	
	बो	लो	हे	प्रे	ऽ	म	घ	न	ह	द	य	ऽऽ	स्वा	ऽ	मी	ऽ	
		न													ध		
	सं	सं	ध	ध	सं	सं	सं	-	सं	रं	सं	न	ध	न	प	-	}
	क्या	ऽ	ध	न	तू	झे	मै	ऽ	भें	ऽ	ट	च	ड़ा	ऽ	उं	ऽ	
													प				
	ग	[ग]प	ग	ग	-	-	-	र	र	र	ग	प	ध	ध	सं	सं	
	ह	द	य	प्रा	ऽ	ऽ	ऽ	ण	ह	रा	ह	रा	तु	म	क्या	क	
	सं	सं	गं	गं	रं	रं	सं	सं	ध	ध	प	ध	प	ग	-	र	
	हूं	मैं	जो	ऽ	कु	छ	है	ऽ	मे	रा	स	क	ल	ले	ऽ	ऽ	
	स	र	स्र	गम	ग	-	-	म	II [ ] II								
	लो	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ना	ऽ	ऽ	थ									

***

बांग्ला

केन चोखेर जले भिजिये दिलेम ना शुकनो धुलो यत !
के जानित आसबे तुमि गो अनाहूतेर मतो ।।
पार हये एसेछ मरु नाइ ये सेथाय छायातरु
पथेर दुःख दिलेम तोमाय गो एमन भाग्यहत ।।
आलसेते बसे छिलेम आमि आपन घरेर छाये,
जानि नाइ ये तोमाय कत व्यथा बाजबे पाये पाये ।
ओइ वेदना आमार बुके बेजेछिल गोपन दुखे
दाग दियेछे मर्मे आमार गो गभीर हृदयक्षत ।।

हिन्दी

क्यों नयन-नीर से भिगोया नहीं, सूखे धूलिकण ।।
कैसे जानूं आओगे तुम बुलाए बिना, मेहमान ?
पार हो आए मरुस्थली छाया तरु, कही न मिली
पीर-पथ में पाए, मेरे कारण मैं यो भाग्य-हीन ।
अलसाई सी थी बैठी-हाय-रे ! अपने घर के छांहें
जाने बिना तेरे पग-पग में, छाले वो कितन दुखाएं ।
वही वेदना दिल में मेरे चुभते रहे गोपन दुख से,
निदारुण वो टीस दुखाये मन, घाव बना गहन ।।

स्वरलिपि

	प	सं									म	
म प II	सं	न	-	ध	-प	धप	म	प	म	र	ग-	र
क्यों ऽ	न	य	न	नी	ऽरे	ऽसे	भिं	गो	ऽ	यां	ऽऽ	न
	स											
	न	-	-	-	-	-	स	ग	ग	र	ग	-
	हीं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	सू	खे	ऽ	धू	ऽ	लि
		म			‖							
	र	ग	-	-	-	-	म	प	प	प	प	-
	क	ण	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	कै	से	0	जा	नू	ऽ

	प	-	प	प	प	म	पध	न	-	-	ध	प	
	आ	ऽ	ऽ	ओ	गे	ऽ	तुम	ऽ	ऽ	ऽ	बुऽ	ऽऽ	
	प-	प	ध	प	मग	ग	ग	म	-	-	प	ध	II
	लाऽ	ये	ऽ	बि	नाऽ	मेह	मा	ऽ	ऽ	न	" कि	ऊं"	
				म									
II	म	प	प	ग	-	म	प	न	-	न	संन	संरं	
	पा	र	हो	आ	ऽ	ये	म	रू	ऽ	स्थ	लीऽ	ऽऽ	
	संन	सं	-	-	-	-	संन	मं	गं	रं	सं	-	
	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	छा	या	ऽ	त	रु	ऽ	
					सं		नि						
	न	संन	सरें	सं	न	-	सं	न	ध	ध-	प	प	
	क	हींऽ	नऽ	मि	ली		ऽ पी		ऽ	र	पथ	मे	0
	प	प	-	पध	प	म	पध	न	न	-	ध	प	
	पा	ये	ऽ	मे	ऽ	रेऽ	काऽ	र	ण	ऽ	ऽ	ऽ	
	प	प	ध	पम	ग	ग	ग	म	-	-	प	ध	II
	मैं	यूं	ऽ	भाऽ	ऽ	ग्य	ही	ऽ	ऽ	न	"कि	ऊँ"	
										ग			
II{	स	स	ग	र	ग	-	र	ग	-	प	प	-	
	आ	ल	सा	इ	सी	ऽ	थी	ऽ	ऽ	बै	ठी	ऽ	
	मर	मग	र	सन	-	-	स	स	ग	र-	ग	-	
	हा	ऽऽ	य	रेऽ	ऽ	ऽ	अप	ने	ऽ	घर	के	ऽ	
	गर	मग	र	स	-	-	स	प	-	प	प	प	
	छाँऽ	ऽऽ	ऽ	हें	ऽ	ऽ	जाऽ	ने	ऽ	बि	ना	ऽ	

प				
सं सं न	ध नध संन	ध प -	- - -	
ते रे ऽ	प गऽ पग	में ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	
प सा नि	ध प धप	मग रेग -	म- - -	}
छा ले वो	कि त नेदु	खा ऽऽ ऽ	येऽ ऽ ऽ	
[धसं नध प]				
{ म प प	मग ग म	प- न -	न सं -	
व ही वे	दऽ ना ऽ	दिल में ऽ	मे रे ऽ	
	मं	सं		
संन सं ग	रं ग रंसं	न सं नरं	सं- न -	}
चुभ ते ऽ	र हे ऽऽ	गो प ऽन	दुख में ऽ	
नि		म		
-सं -न न	ध प प	प -प प-	पध प म	
निऽ ढा ऽ	रुण वा ऽ	टी ऽस दु	खाऽ ये ऽ	
पध न -	- ध प	प प ध	प मग रग	
मन ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	घा ऽ व	ब नाऽ ऽऽ	
ग म- -	- प ध	II II		
ग हन ऽ	ऽ "कि ऊं"			

***

बांग्ला	हिन्दी
आनंदधारा बहिछे भुवने,	आनंद धारा बहे रे जग में
दिनरजनी कत अमृतरस उथलि याय अनंत गगने ।।	दिवस-रजनी कैसो अमृत रस
पान करे रवि शशी अंजलि भरिया	उथलि जाए अनंत नभ में ।।
सदा दीप्त रहे अक्षय ज्योति।	पान करें रवि-शशी अंजली भर-भर
नित्य पूर्ण धरा जीवने किरणे ।।	सदा ज्योति जले, अक्षय ज्योति
बसिया आछ केन आपन-मने,	नित्य पूर्ण धरा जीवन प्रकाशे ।।
स्वार्थनिमगन की कारणे ?	बैठे अपने मन क्यों सुध बुध हारे
चारि दिके देखो चाहि हृदय प्रसारि,	स्वार्थनिमगन किस कारण रे?
क्षुद्र दुःख सब तुच्छ मानि	खोलो आंखे चहूं- दिशि हृदय विस्तारो
प्रेम भरिया लहो शून्य जीवने ।।	तनिक दुख सभी तुच्छ मानों
	प्रेमप्रीत भरो सूने जीवन में ।।

स्वरलिपि (दक्षिण भारतीय राग पर आधारित)

	+				2				0				3				
	[म]										स			॥			
II	स	स	ऩ	र	सन	रसऩ	ध़	ऩ	स	स	म	ग	म	म	म	ग	
	आ	नं	ऽ	द	धाऽ	ऽऽ	रा	ऽ	व	हे	रे	ज	ग	में	आ	ऽ	
											स						
	म	स	ऩ	र	स	ऩरसऩ	ध़	न	स	स	म	ग	म	म	म	ग	
	ऽ	नं	ऽ	द	ध	ऽऽऽ	रा	ऽ	व	हे	र	ज	ग	में	ऽ	ऽ	
															स		
	म	स	न	र	स	स	न	ध	न	ध	ध	न	स	स	म	म	
	ऽ	दि	व	स	र	ज	नी	ऽ	ऽ	कै	सो	अ	मृ	त	र	स	
							म										
	म	म	म	म	-	म	ग	-	मध	नसं	सन	नध	धम	मग	मग	मग	।[ ]।
	उ	थ	ली	जा	ऽ	ये	अ	ऽ	नऽ	ऽऽ	नंऽ	नऽ	भऽ	मेंऽ	आऽ	ऽऽ	
	[ध]																
म - II{	म	-	म	म	(म)म	म	ग	ग	म	ध	ध	ध	न	न	सं	सं	
ऽ ऽ	पा	न	क	रे	र	वि	श	शी	अं	ऽ	ज	ली	भ	र	भ	र	

	न न - सं	- सं सं सं	सर स न ध	धन धनसं न ध	}
	स दा ऽ ज्यो	ऽ ति ज ले	अऽ ऽ क्ष य	ज्यो ऽऽऽ त ऽ	
			म		
	ध म म म	- म म म	ग म म मम	मग मग मग मग	I [ ] I
	नि ऽ त्य पू	ऽ र्ण ध रा	जी व न प्रऽ	का शेऽ आऽ ऽऽ	
म -II{	स स स स	म म म म-	म - म म	म - मग -	
ऽऽ	बै ऽ ठे अ	प ने म क्यों	सु थ बु ध	हा ऽ रेऽ ऽ	
				ग	
	ग म म ध	ध मधन न नध	ध म म म	मग मग म स	}
	स्वा ऽ र्थ नि	म ऽऽऽ ग नऽ	कि स का ऽ	रऽ ऽण रे ऽ	
	[ध]	म			
{	म म म म म	म म ग ग	ध ध ध न	- सं -	
	खो लो आं खे च	हूं दि शि ह	द य वि स्ता	ऽ रो ऽ	
	न - न सं	- सं सं सं	सर सं न ध	धन धनसं न ध	
	त नि क दु	ऽ ख स ब	तुऽ ऽ ऽ छ	माऽ ऽऽऽ नो ऽ	
			म	म	
	ध म म म	म म म म	ग म म मम	ग मग मग मग	II[ ]II
	प्रे ऽ म प्री	ऽ ति भ रो	सू ऽ ने जीऽ	व नऽ मेऽ ऽऽ	

***

बांग्ला

आमार मुक्ति आलोय आलोय एइ आकाशे,
आमार मुक्ति धुलाय धुलाय घासे घासे ॥
देहमनेर सुदूर पारे हारिये फेलि आपनारे,
गानेर सुरे आमार मुक्ति ऊर्ध्वे भासे ॥
आमार मुक्ति सर्वजनेर मनेर माझे,
दुःख-विपद-तुच्छ-करा कठिन काजे।
विश्वघातार यज्ञशाला, आत्महोमेर वह्निज्वाला
जीवन येन दिइ आहुति मुक्ति-आशे ॥

हिन्दी

मेरी मुक्ति आलोक धारा में, इसी आकाशतले।
मेरी मुक्ति धूलिकणों में तृण-तृणों में इसी आकाश तले
देह-मन से कहीं दूर जा, अपनापन यों खो जाए
गीतों के सुरों में मेरी मुक्ति नभ में लहरे इसी आकाश तले ॥
मुक्त मैं हूं जग जनों के प्राण-मन में,
वेदना-विपद भुला दे यों कठिन कामों में।
विश्वंभर की यज्ञशाला-आत्माहुति की वह्निज्वाला
जीवन अपना होम दूं मैं, मुक्ति आस में इसी आकाश तले ॥

स्वरलिपि (मिश्र केदार/ तेवरा ताल)

	ध													॥
II{	पध	प	-	म	-	र	-	स	सम	-	मग	पम	प	-
	मेऽ	री	ऽ	मु	ऽ	क्ति	ऽ	आ	लोऽ	क	धाऽ	राऽ	में	ऽ
(	प	सं	सं	धन	-	धप	-)}	स	स	-	र	-	र	-
	इ	सी	आ	काऽ	श	तऽ	ले	मे	री	ऽ	मु	ऽ	क्ति	ऽ
	र	ग	र	ग	-	ग	म	म	प	ध	मप	-	मग	म
	धु	ली	ऽ	क	णों	मे	ऽ	तृ	ण	ऽ	तृऽ	णों	मेंऽ	ऽ

II	म	सं	सं	धन	-	धप	-	II										
	इ	सी	आ	काऽ	श	तऽ	ले											

II {	प	ध	प	पन	ध	न	-	सं	सं	-	सं	न	रंसं	-			
	ढे	ऽ	ह	मऽ	न	से	ऽ	क	ही	ऽ	दू	र	जाऽ	ऽ			
	सं	निसं	ध	सं	ध	नरं	-	सं	सं	न	नसं	ध	प	-	}		
	अ	पऽ	ना	प	न	योऽ	ऽ	खो	ऽ	ऽ	जाऽ		ये	ऽ			
	संगं	ग	-	रं	-	सं	न	नरं	सं	-	ध	-	प	-			
	गीऽ	तों	के	स	रों	में	ऽ	मेऽ	री	ऽ	मु	क्	ति	ऽ			
	स	म	म	मग	पम	प	-	प	सं	सं	धन	-	धप	-	II		
	न	भ	मे	लऽ	हऽ	रे	ऽ	इ	सी	आ	काऽ	श	तऽ	ले			

II {	स	स	-	र	-	र	-	र	गर	ग	म	-	प	-	
	मु	ऽ	क्त	मैं	ऽ	हूं	ऽ	ज	गऽ	ज	नों	ऽ	के	ऽ	
	मं	प	मंध	ध प	-	म	-	गं	-	गं	गं	-	गं	-	
	प्रा	ऽ	ऽण	म	न	में	ऽ	वे	द	ना	वि	ऽ	प	द	
	गंमं	-	मं	रं	-	सं	-	समं	म	-	म	ग	म	-	}
	भुऽ	ला	ऽ	दे	ऽ	यों	ऽ	कऽ	ठि	न	का	मों	में	ऽ	
{	प	ध	प	न	ध	न	-	सं	-	सं	सं	न	सं	-	
	वि	श्व	म्	भ	र	की	ऽ	य	ऽ	ज्ञ	शा	ऽ	ला	ऽ	
	सं	-	ध	सं	-	सं	रं	सं	-	न	नसं	-	ध	प	}
	आ	ऽ	त्मा	हु	ति	की	ऽ	व	ऽन्	हि	ज्वाऽ	ऽ	ला	ऽ	

संगं	गं	-	रं	-	सं	न	सं	गं	गं	रं	-	सं	-	
जीऽ	व	न	अ	प	ना	ऽ	हो	ऽ	म	दृं	ऽ	मैं	ऽ	
स	म	म	मग	पम	प	-	प	सं	सं	धन	-	धप	-	II II
मु	क्	ति	आऽ	सऽ	में	ऽ	इ	सी	आ	काऽ	श	तऽ	ले	

* * *

बांग्ला

पिनाकेते लागे टंकार
वसुंधरार पंजरतले कंपन जागे शंकार ॥
आकाशेते घोरे धुर्णि सृष्टिर बाँध चूर्णि,
बज्रभीषण गर्जनरव प्रलयेर जयडंकार ॥
स्वर्ग उठिछे क्रंदि, सुरपरिषद बंदी
तिमिरगहन दुःसह राते उठे श्रृंखलझंकार ।
दानवदंभ तर्जि रूद्र उठील गर्जि
लंडभंड लूटिल धुलाय अभ्रभेदी अहंकार ॥

हिन्दी

पिनाक निनादे-टंकारं, वसुंधरा की पंजरतल पे
सिहर जागे शंका... ओ... हो... ॥
नभ मे ये बवंडर, चोटी सृष्टि की धर
बज्रभीषण गरजन-रव, प्रलय की जयडंका ॥ अहा...
स्वर्ग रो पड़े सुरपरिषद- बन्दे
तिमिरगहन असहन राति, उठे जंजीर झंकार ।
दानबदर्प दहाड़े रुद्र- गहन-गरजे ॥
लोट-पोट धूलिधूसर अभ्रभेदी अहंकार ओहो ॥

स्वरलिपि

	ग	ग											॥
II	म	म	र	र	स	स	र	प	म	ग	-	-	
	पि	ना	क	नि	ना	दे	टं	ऽ	का	ऽ	ऽ	र	
	ग										स		
	म	म	-	र	स	-	र	-	ग	रे	ऩ	-	
	व	सुं	ऽ	ध	रा	की	पं	ऽ	ज	र	त	ल	
	स	-	-	-	-	-	संगं	-	गं	गं	गं	गं	
	पे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	शिऽ	ह	र	ऽ	जा	गे	
	गंमं	-	रं	सं	-	-	म	प	सं	न	सं	रं	
	शंऽ	ऽ	का	ऽ	ऽ	ऽ	ओ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
	ना	सं	-	म	ग	-	II						
	हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ							
II	म	प	नप	नप	न	न	न	-	सं	-	-	-	
	न	भ	मेंऽ	ऽऽ	ये	ब	वंऽ	ऽ	डर	ऽ	ऽ	ऽ	
	म	-	प	प	नप	न	न	-	सं-	-	-	-	
	चो	ऽ	टी	सृ	ऽऽ	ष्ट	की	ऽ	धर	ऽ	ऽ	ऽ	
	म	प	प	प	प	पम	प	न	नध	नध	धन	प	
	ब	ज्र	ऽ	भी	ष	णऽ	ग	र	जऽ	नऽ	रऽ	व	
	प												
	ग	ग	ग	ग	ग	ग	रग	मं	रं	-	स	-	
	प्र	ल	य	की	ज	य	डंऽ	ऽ	का	ऽ	ऽ	ऽ	
	म	प	सं	न	सं	रं	न	सं	-	म	ग	-	II
	अ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	हा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	

II	म	-	प	प	प	प	प	म	म	न	-	-
	स्व	ऽ	र्ग	रो	ऽ	प	ड़े	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
	ध	न	ध	न	ध	प	पध	म	प	-	-	-
	सु	र	प	रि	ष	द	वंऽ	ऽ	दे	ऽ	ऽ	ऽ
	म	प	पम	मन	न	न	ध	-	न	ध	प	म
	ति	मि	रऽ	गऽ	ह	न	अ	स	ह	न	रा	ऽ
	प	-	म	ग	-	-	ग	ग	गम	-	र	स
	ति	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	उ	ठे	जंऽ	ऽ	जी	र
	र	-	स	-	-	-	म	प	प	पन	प	न
	झं	ऽ	का	र	ऽ	ऽ	दा	न	व	दऽ	ऽ	र्प
	न	-	सं	-	-	-	म	-	प	प	नप	न
	द	हा	ड़े	ऽ	ऽ	ऽ	रू	ऽ	द्र	ग	हऽ	न
	न	-	सं	-	-	-	संन	-	न	न	-	न
	ग	र	जे	ऽ	ऽ	ऽ	लोऽ	ऽ	ट	पो	ऽ	ट
	ध	न	न	न	ध	प	पगं	-	गं	गं	गं	गं
	धू	ऽ	रि	धू	स	र	अऽ	ऽ	प्र	भे	दी	अ
	गं मं	-	रं	-	सं	-	म	प	सं	नि	सं	रं
	हं	ऽ	का	ऽ	र	ऽ	ओ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
	न	सं	-	म	ग	-	II II					
	हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ						

* * *

बांग्ला

तोमारि गेहे पालिछ स्नेहे, तुमि धन्य धन्य हे।
आमार प्राण तोमारि दान, तुमि धन्य धन्य हे।।
पितार बक्षे रेखेछ मोरे, जनम दियेछ जननी क्रोड़े,
बेंधेछ सखार प्रणयडोरे, तुमि धन्य धन्य हे।।
तोमार विशाल विपुल भुवन, करेछ आमार नयनलोभन
नदी गिरि वन सरससशोभन, तुमि धन्य धन्य हे।।
हृदये-बाहिरे स्वदेशे-विदेशे युगे-युगांते निमेषे-निमेषे
जनमे-मरणे शोके-आनंदे तुमि धन्य धन्य हे।।

हिन्दी

घर में तेरे पला हूं स्नेह से तू है प्रभु धन्य तू।।
मेरा ये प्राण तेरा ही दान तू है प्रभु धन्य तू।।
तात हिय में संजोया मुझे तू , गोदी में माँ की रहे जन्म से
जनम-मरण सुख-दुख में तू है प्रभु धन्य तू।।
बांध सखा-संग बंधन प्रेम के तू है प्रभु, धन्य तू।।
विपुल विशाल, तेरा ये भुवन लुभाए सदा ही मरे-दो नयन
नदी गिरि-वन, सरस शोभन तू है प्रभु धन्य तू ।।
अंदर-बाहर स्वदेश विदेश युग-युगांतर निमेष-निमेष
जनम-मरण सुख-दुख में तू है प्रभु-धन्य तू।।

स्वरलिपि

	+			2			0			3			
II{	स	स	स	ग	-	ग	म	म	म	प	-	ध	
	ध	र	मे	ते	ऽ	रे	प	ला	हूं	स्ने	ह	से	
												।।	
	सं	-	न	ध	-	म	प	ध	म	ग	-	-	}
	तू	ऽ	है	प्र	भु	ऽ	ध	ऽ	न्य	तू	ऽ	ऽ	
	न	न	न	न	-	न	सं	सं	सं	प	-	ध	
	मे	रा	ये	प्रा	ऽ	ण	ते	रा	ही	दा	ऽ	न	

	सं	-	न	ध	-	म	प	ध	म	ग	-	-रें	II
	तू	ऽ	है	प्र	भु	ऽ	ध	ऽ	न्य	तू	ऽ	ऽ	
										रें			
II{	म	प	प	न	-	न	न	सं	संन	सं	-	सं	
	ता	ऽ	त	हि	य	में	सं	जो	या	मु	झे	तू	
	न	न	न	सं	सं	सं	सं	संरं	न	ध-	-	प	}
	गो	दी	में	माँ	ऽ	की	र	है	ज	नम्	से	ऽ	
	ध	ध	धप	म	गर	ग	म	म	म	प	-	ध	
	बां	धे	सऽ	खा	सं	ग	बं	ध	न	प्रे	म	के	
												र	
	सं	-	न	ध	-	म	प	ध	म	ग	-	-	II
	तू	ऽ	ही	प्र	भु	ऽ	ध	ऽ	न्य	तू	ऽ	ऽ	
										र			
II{	म	प	प	न	न	न	न	सं	संन	सं	सं	सं	
	वि	पु	ल	वि	शा	ल	ते	रा	येऽ	भु	व	न	
	न	न	न	सं	सं	सं	सं	संरं	न	ध	ध	प	}
	लु	भा	ये	स	दा	ही	मे	रेऽ	दो	न	य	न	
	ध	ध	धप	म	गर	ग	म	म	म	प	प	ध	
	न	दी	गिऽ	रि	वऽ	न	स	र	स	शो	भ	न	
												र	
	सं	-	न	ध	-	म	प	ध	म	ग	-	-	II
	तू	ऽ	है	प्र	भु	ऽ	ध	ऽ	न्य	तू	ऽ	ऽ	
										रं			
II{	म	प	प	न	न	न	न	सं	संन	सं	सं	सं	
	अ	न्द	र	बा	ह	र	स्व	दे	शऽ	वि	दे	श	

न	न	न	ग	ऽ				नु	ध	ऽध	प	}
यु	ग	यु	गां	त	र	नि	मेऽ	ष	नि	मे	ष	
ध	ध	धप	म	गर	ग	म	म	म	प	-	ध	
ज	न	मऽ	म	रऽ	णं	सु	ख	दु	ख	में	ऽ रे	
सं	-	न	ध	-	म	प	ध	म	ग	-	-	II II
तू	ऽ	है	प्र	भु	ऽ	ध	ऽ	न्य	तू	ऽ	ऽ	

***

बांग्ला

सखी, आँधारे एकेला घरे मन माने ना।
किसेरइ पियासे कोथा ये याबे से पथ जाने ना॥
झरोझरो नीरे, निबिड़ तिमिरे, सजल समीरे गो
येन कार वाणी कभु काने आने कभु आने ना॥

हिन्दी

सखी अंधेर, अकेले घर में मन ये माने ना॥
कैसी है प्यास रे कहां जाए मन, राह जाने ना॥
झर-झर नीरे
सघन तमीरे, सजल समीरण हो!
जैसे कोई वाणी कभी सुने मन, कभी सुने ना॥

स्वरलिपि

II म - मगरेग - { ग | म नि - ध, धनिसां - निध|
|स ऽ खीऽऽ ऽ { अं | धे ऽ ऽ रा अऽऽ ऽ केऽ|

नि - धप पधनोध पम प मग- | गमपध सां(नि) निध पध गम नी - नोधपमप
ले ऽ घऽ रऽऽऽ ऽऽ में ऽऽऽ | मनऽऽ ऽ येऽ ऽमा नेना ऽऽ ऽऽऽऽऽ

प नी - नीसां - गरेगं - सांनि - | धनि सांनि धानि - ध प मग रेग ग ग म
म न ऽ माने ऽ ऽऽऽ ऽ नाऽ ऽ | ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽ स खी ऽऽ ऽऽ ऽ ऽ अं

| म नी - ध धनि सां - निध | नि - धप पधनोध पम प- मग |
धे ऽ ऽ रा अ ऽ ऽ ऽ के ऽ | ले ऽ ऽऽ घर ऽऽ ऽऽ मेंऽ ऽऽ |

नि
| गम पध सां - निध ध | गमनो नि - ध प म प |
| मन ऽऽ ऽ ऽ येऽ ऽ | मानेना जो ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ |

II | प प धनि सनि निनि नि धप मप | प नि सा - सां सां सां- नसारेंसांनिसां |
| कै सी हैऽ ऽऽ प्यास रे ऽऽ ऽऽ | क हां जा ऽ ये मन ऽऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ |

| प नी - नि सां गरेंगं - | सं नि धनि संनि धनि - ध प म ग रे ग |
| रा ऽ ह जा ने ऽऽऽ ऽ | ना ऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ स खी ऽ ऽ ऽ ऽ |

ग | म नो - ध धनिसां नि ध | नि - धप पध नो ध पम प - म ग - |
अं | धे ऽ ऽ रा अ ऽ ऽ के ऽ | ले ऽ ऽऽ घर ऽ ऽ ऽऽ में ऽ ऽ ऽ ऽ |

नि
| गमपध सां - निध पध गमनो नि नोध पमप | II
| म न ऽऽ ऽ ऽ येऽ ऽऽ माने ऽ ना ऽऽ ऽऽऽ |

| ग - रेसां स ग - ग - म - ग म प | ध प ध नो ध - नि नि नि नि नि सां - रें - |
| झ ऽ र ऽ झ र ऽ नी ऽ रे ऽ ग ह न | त मी ऽ ऽ रे ऽ स ज ल स मी र ण ऽ ऽ |

म
| ध सां - निध पध म ग | } प प | पध निसां नि - नि नि धप |
| हो ऽ ऽ ऽऽ ऽऽ झ र | जै से | कोऽ ऽ ऽ ई ऽ वा णी ऽऽ |

| प नी नि सां सां - निसारेंसां (नी धप) } | प नी - नि सा गरेंगं - |
| क भी सु ने म न ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽऽ | क भी ऽ सु ने ऽऽऽ ऽ |

| सां नि नि सां रें सां रें सा नि सां | ध प म ग रे ग ग |
| ना ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ | स खी ऽ ऽ ऽ ऽ अं |

| म नो - ध धनि सां निध | नि - धप पधनीध पम प- मग - |
| धे ऽ ऽ रा अऽऽ ऽ केऽ | ले ऽ ऽऽ घरऽऽ ऽऽ मेंऽ ऽऽ ऽ |

| गम पध सं - निध ध | ग मनी- नी ध प म | II II
| मन ऽऽ ऽ ऽ ऽये ऽ | मा लेनाऽ ऽ ऽ ऽ ऽ |

***

(स्व. कणिका बनर्जी की स्मृति में उनकी गायकी के अनुसार स्वरलिपि रचा गया है।)

बांग्ला

आज ज्योत्सनाराते सबाइ गेछे वने
बसंतेर एइ माताल समीरण ॥
याव ना गो, याव ना ये रहनु पड़े घरेर माझे
एइ निरालाय रब आपन कोणे।
याब ना एइ माताल समीरणे ॥
आमार ए घर बहु यतन करे
धुते हबे मुछते हबे मोरे ॥
आमारे ये जागते हबे की जानि से आसबे कबे,
यदि आमाय पड़े ताहार मने
बसंतेर एइ माताल समीरणे ॥

हिन्दी

चांदनी रात है, सभी चल दिये बन को, आज।
बसंती ये मत्त पवन संग, आज ॥
न जाऊंगी, घर में, ही, रहूं चुप मैं
निर्जन में, खोई अपने मन में,
न जाऊंगी मत्त पवन संग, आज ॥
मेरा ये घर बड़ी जतन धर
धोना होगा करना होगा साफ
मुझे ये रात जागना है
न जाने कब वो आ जाएं, यदि याद आ जाये
यदि मेरी याद उनको सताये
वसंती ये मत्त पवन संग, आज ॥

स्वरलिपि

गं (कण) ... प ध प (कण)
नि - II सं गं रें | सां - | नि - | म प - | म - | ग - |
आज ऽ चां द नी | रात ऽ | है ऽ | स भी ऽ | च ल | दि ए

II प
| म प - | नि - | - - | सां सां - | सां सां | सां रें |
| वन को ऽ | आ ऽ | ऽ ज | ब सं ऽ | ती ऽ | ये ऽ |

	सां			सां				रे							
	नि	रें	-	नि	-	रें	-	सा	नि	प	नि	-	-	-	II
	म	ऽ	स्त	प	ऽ	व	न	सं	ग	ऽ	आ	ऽ	ऽ	ज	
	ध										ध				
II	प	-	-	नि	-	-	-	निसां	रेसां	नि	प	-	-	-	
	न	ऽ	ऽ	जा	ऽ	ऽ	ऽ	ऊं	ऽऽ	ऽऽ	गी	ऽ	ऽ	ऽ	
													रे		
	प	प	-	नि	-	नि	सां	सां	सां	-	सां	नि	सां	-	
	न	जा	ऽ	ऊं	ऽ	गी	ऽ	न	जा	ऽ	ऊं	ऽ	गी	ऽ	
	प			सां		रे							ध		
	सां	-	सां	नि	-	सां	-	नि	नि	प	प	म॑	प	-	
	घ	र	ऽ	में	ऽ	ही	ऽ	र	हूं	ऽ	चु	प	मैं	ऽ	
	म	-	ग	रे	ग	-रे	-म	ग	-	-	-	-	-	-	
	नि	र	ऽ	ज	नऽ	में	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
	ग					ध		प	प						
	प	-	प	प	म॑	प	-	नि	म	-	प	-	नि	-	
	नि	र	ऽ	ज	न	में	ऽ	खा	इ	ऽ	अ	प	ने	ऽ	
													सां		
	प-	नि	-	-	-	-	-	सां	सां	-	सं	-	रें	-	
	मन	में	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न	जा	-	ऊं	ऽ	गी	ऽ	
	सां			सां				रें							
	नि	रें	-	नि	-	रे	-	सां	नि	प	नि	-	-	-	I
	म	स्त	ऽ	प	ऽ	व	न	सं	ग	ऽ	आ	ऽ	ऽ	ज	
				सा											
II	सा	सा	सा	ऩि	-	नि	-	सा	ग	-	ग	-म	रे	-म	
	मे	रा	ऽ	ये	ऽ	घ	र	ब	ड़ी	ऽ	ज	ऽ	त	न	
								ग	र						
	म	ग	-	-	-	-	-	रे	ग	-म	म	म	ग	-रेस	
	ध	रे		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	धो	ना	ऽ	हो	ऽ	गा	ऽऽ	

					म									
स	-	ग	ग	म	रे	म	म	ग	-	-	-	-	-	
क	र	ना	हो	ऽ	गा	ऽ	स	फा	ऽ	ई	ऽ	ऽ	ऽ	
			प									रें		
प	प	-	नि	-	नि	सा	सां	-	सां	सां	-नि	सां	-	
मु	झे	ऽ	ये	ऽ	रा	त	जा	ऽ	ग	ना	ऽऽ	है	ऽ	
प					रें							ध		
सां	सां	-	सां	नि	सां	नि	नि	-	प	प	म	प	-	
न	जा	ऽ	ने	ऽ	क	ब	वो	आ	ऽ	जा	ऽ	एं	ऽ	
							म							
म	ग	-	रे	ग	-रे	-म	ग	-	-	-	-	-	-	
य	दि	ऽ	या	ऽ	ऽ	द	आ	ए	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
ग					ध		प							
प	प	-	प	म॑	प	-	नि	म॑	म॑	-	-	नि	-	
य	दि	ऽ	मे	ऽ	री	ऽ	या	ऽ	द	उ	न	को	स	
नि							नि					सं		
प	नि	-	-	-	-	-	सां	सां	-	सां	-	रें	-	
ता	ए	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ब	सं	ऽ	ती	ऽ	ये	ऽ	
सां			सां											
नि	रें	-	नि	-	रें	-	सां	नि	प	नि	-	-	-	II II
म	स्त	ऽ	प	ऽ	व	न	सं	ग	ऽ	आ	ऽ	ऽ	ज	

* * *

बाग्ला

जागरणे जाय विभावरी
आँखि हते घुम निल हरि, मरि मरि ।।
यार लागि फिरि एका एका, आँखि पिपासित, नाहि देखा,
तारि बाँशि ओगो तारि बाँशि, तारि बाँशि बाजे हिया भरि, मरि मरि।
वाणी नाहि, तबु काने काने, की ये शुनि ताहा केबा जाने।
एइ हियाभरा वेदनाते, वारिछलोछलो आँखिपाते,
छाया ढोले तारि छाया ढोले छाया ढोले दिवानिशि धरि मरि मरि ।।

हिन्दी

जाग बिताई मैंने विभावरी
पलकों की नींद मेरी गई रे चोरी, नींद गई रे चोरी-
हाय मैं मरी ।।
जिनके लिए फिरूं एककी, नहीं दिखे हैं, आंखे प्यासी
बंसी उसकी हाय बंसी उसीकी, बंसी बजे मेरे मन में-री
हाय मैं मरी ।।
वाणी बिना ही इन कानों में, क्या मैं सुनूं
कोई क्या वो जाने ?
है मेरा मन भरे वेदन, छलक-छलक जाए सजल नयन,
छाया डोले अब, छाया डोले छाया डोले बस दिवस निशि
हाय मैं मरी ।।

स्वरलिपि

	रे								नि		रे		ध			॥	
II	सा	-	ग	म	प	-	नि	-धनि	सां	-निरें	सां	नि	प	-	-	-	
	जा	ऽ	ग	वि	ता	ई	मैं	ऽने	वि	भाऽ	ऽ	व	री	ऽ	ऽ	ऽ	
	प		सं		सं							नि					
	सां	-	नि	ध	नि	-ध	प	-	प	-ध	नि	ध	प	-	प	प	
	प	ल	कों	की	नी	ऽन्द	मे	री	ग	ऽई	रे	चो	री	ऽ	नीं	द	
			•	नि													
	प	ध	नि	ध	प	-	-	-	सा	सा	ग	ग	म	-	-	-	II
	ग	ई	रे	चो	री	ऽ	ऽ	ऽ	हा	य	मैं	म	री	ऽ	ऽ	ऽ	

	ध								ध				रें			
II	प	-	नि	नि	नि	-	नि	नि	नि	-	सां	रें	सां	-	-	-
	जि	न	के	लि	ये	ऽ	फि	रूं	ए	ऽ	का	ऽ	की	ऽ	ऽ	ऽ
							सं	रें	सां							
	प	-सां	सां	सां	सां	-	रें	सां	नि	ध	प	ध	नि	-	-	-
	न	हीं	ऽ	दि	खे	ऽ	हैं	ये	आ	खें	ऽ	प्या	सी	ऽ	ऽ	ऽ
	नि			नि	सा							नि				
	सां	-	नि	ध-	नि	-	ध	प	प	ध	नि	ध	प	प	-	-
	बं	ऽ	सी	उसी	की	ऽ	हा	य	बं	ऽ	सी	उ	सी	की	ऽ	ऽ
			सां		सा											
	प	-सां	नि	ध	नि	-	ध	प	सा	सा	ग	ग	म	-	-	-
	बं	ऽऽ	सी	ब	जे	ऽ	मे	रे	म	न	मे	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ
	म				प											
	ग	-म	प	प	सां	-	नि	-ध	II							
	हा	ऽय	मैं	म	री	ऽ	ऽ	ऽऽ								
									ग				म			
II	सा	-	नि़	नि़	सा	सा	ग	ग	रे	-	ग	म	ग	-	-	-
	वा	ऽ	णी	वि	ना	हो	इ	न	का	ऽ	नों	ऽ	में	ऽ	ऽ	ऽ
				प	म								ध			
	ग	प	प	म	प	-	-	-	प	नि	नि	ध	प	-	म	ग
	क्या	ऽ	मैं	सु	नूं	ऽ	ऽ	ऽ	क्या	ऽ	मैं	सु	नूं	ऽ	को	ई
	ग								ध							
	रे	-	ग	म	ग	-	-	-	प	-	नि	नि	नि	-	नि	निसां
	क्या	ऽ	वो	जा	नें	ऽ	ऽ	ऽ	है	ऽ	ऽ	मे	रा	ऽ	म	नऽ
	ध			सं											सं	
	नि	सां	रें	नि	सां-	-	-	-	प	सां	सां	सां	सां	-	रें	सां
	भ	रे	ऽ	वे	दन	ऽ	ऽ	ऽ	छ	ल	क	छ	ल	क	जा	ए
	सां			ध					न		सां					
	नि	ध	प	प	नि	नि	-	-	सां	-	नि	ध	नि	-	ध	प
	स	ज	ल	न	य	न	ऽ	ऽ	छा	ऽ	या	डो	ले	ऽ	हा	य

			नि							स		स				
प	ध	नि	ध	प	-	-	-	प	सां	नि	ध	नि	-	ध	प	
छ	ऽ	या	डो	ले	ऽ	ऽ	ऽ	छा	ऽ	या	डो	ले	ऽ	ब	स	
								म				प				
सा	सा	ग	ग	म	-	-	-	ग	म	प	प	सां	-	नि	ध	II II
दि	व	स	नि	शि	ऽ	ऽ	ऽ	हा	य	मैं	म	री	ऽ	ऽ	ऽ	

* * *

बांग्ला

तोमार गोपन कथाटि, सखी रेखो ना मने ॥
शुधु आमाय, बोलो आमाय गोपने ॥
ओगो धीर मधुर हासिनी, बोलो धीरमधुर भाषे-
आमि काने ना शुनिब गो, शुनिब प्राणेर श्रवणे ॥
यबे गभीर यामिनी यबे नीरव मेदिनी,
यबे सुप्तिमगन विहगनीड़ कुसुमकानने,
बोलो अश्रुजड़ित कंठे, बोलो कम्पितस्मित हासे
बोलो मधुरवेदनविधुर हृदये शरमनमित नयने ॥

हिन्दी

तेरे मन में छुपी बात, सखी , रखो न छुपाये।
सखी बोलो, मुझे बोलो, मुझे बोलो चुपके से ॥
ओहो धीर-मधुर-हासिनी, बोलो धीर-मधुर-भाष रे
सुनी मैं कानों ही कानों नहीं, सुनी प्राण प्राण में ॥
हो जब गहन-यामिनी, हो नीरव मेदिनी
जब नींद में हों विहंगनीड़, कुसुम कानन में।
बोलो आंसू रूंधे कंठ में,बोलो कंपित-स्मित-हास ले
बोलो, मधुर-वेदन व्याकुल-हिय के, शरम-नमित नयनों में ॥

स्वरलिपि

[धनि निध -प मप मध]

प पधप II	म प -	ग मध प	मपम ग -	‖ - ग गम	
ते रेऽऽ	म न में	छु पीऽ ऽ	बाऽऽ ऽ त	ऽ स खीऽ	
	म प -	मध नि प	मध नि -	सां सां नि	
	र खो ऽ	नऽ ऽ छु	पाऽ ये ऽ	ते रे ऽ	
	(ध) नि निध प	मप मध प	मपम ग -	- सा सा	
	म ऽन में	छुऽ पीऽ ऽ	बाऽऽ ऽ त	ऽ स खी	
	सा रे -	- रे ग	म प -	(म) ग नि नि	
	बो लो ऽ	ऽ मु झे	बो लो ऽ	ऽ बो लो	
	नि सं नि	धनसं नि प	प ध नि	प (प) ध पधप	II
	मु झे ऽ	चुपके ऽ ऽ	से ऽ ऽ	ऽ "ते रेऽऽ"	
	[मं मंगं	गं]			
नि नि II{	(नि)सं - गं	रें रें रगरे	सारें सारेंग रेंसां	सरेंसां नि नि	
ओ हो	धी ऽ र	म धु रऽऽ	हाऽ ऽऽऽ सिऽ	नीऽऽ बो लो	
	नि सां सां	सां सां सां	(नि)सां निसारें सेंरेंसा	(नि नि नि)	}
	धी ऽ र	म धु र	भा ऽऽऽ षऽऽ	रे ओ हो	
नि नि निध	प प नि	ध नि (नि) सां	(ध) नि - -	ध नि निध	
"सु नी मैंऽ"	का नो ही	का नों न	ही ऽ ऽ	सु नी ऽऽ	
	प प नि	ध नि ध	प - -	(प)ध पधप ध	II
	प्रा ऽ ण	प्रा ऽ ण	में ऽ ऽ	" ते रेऽऽ ऽ"	

नि
सा साII | {रे म म | पम पम प | ध - - | - ध धनिध |
हो जब | ग ह ग | याऽ ऽऽ मि | नी ऽ ऽ | ऽ हो ऽऽऽ |

नि म
| प प नि | ध पधनि ध | प - - | (- सा सा) | } - प धप I
| नी र व | मे ऽऽऽ दि | नी ऽ ऽ | ऽ ज ब | ऽ ज बऽ

प
{ | म - ध | प प धप | म प मधप | म पम मग |
| नीं ऽ द | में हो ऽऽ | विं ह गऽऽ | नी ऽऽ इऽ |

| मग ग म | म गमप म- | प - - | (- प धप)} | -{नि नि I
| कु सु म | ऽ ऽऽऽ नन | में ऽ ऽ | ऽ ज बऽ | ऽ बो लो

| नि - सां | सां सां सां | निस निसरें सरेंसा | नि नि नि |
| आँ ऽ सू | रु धेऽ क | ण् ऽऽऽ ऽऽठ | से बो लो |

| सां - गं | रें रें रेंगरें | सरें सरेंगरें सरेंसं | नि} नि निध |
| कं म् पि | त स्मि तऽऽ | हाऽ ऽऽऽस लेऽऽ | से बो लोऽ |

[नि सं सं | नि सं]
{ | प प नि | ध नि सांनि | ध नि ध | प ध प |
| म धु र | वे द नऽ | व्या कु ल | हि य के |

| म प ग | म प प | प प पध | (नि सां सां) | }
| श र म | न मि त | न य नोंऽ | में बो ले |

| नि सां सां | II II
| ते रे ऽ |

***

बांग्ला

तुइ फेले एसेछिस कारे, मन, मन रे आमार।
ताइ जनम गेल, शांति पेलि ना रे मन, मन रे आमार ।।
ये पथ दिये चले एलि से पथ एखन भूले गेलि
केमन करे फिरबि ताहार द्वारे मन, मन रे आमार ।।
नदीर जले थाकि रे कान पेते,
काँपे रे प्राण पातार मर्मरिते।
मने हय ये पाब खुँजि फूलेर भाषा यदि बुझि
ये पथ गेछे, संध्यातारार पारे मन, मन रे आमार ।।

हिन्दी

तू छोड़ आया है किसको , मन, मन रे मेरा।
ये, जन्म बीता, शांति तो भी न पाये, मन, मन रे मेरा ।।
जिस राह से चला था तू वो राह अब भूल चला रे
लौटेगा तू कैसे उनके द्वारे मन, मन रे मेरा ।।
नदिया नीरे ही रहे रे ध्यान धरे कांपे ये प्राण सिहरें जब पत्ते-सारे
ऐसा लगे मन ढूँढ़ लेगा फूलों की भाषा अगर समझे रे
जो राह जाए साँझ की तारों के पार मन, मन रे मेरा ।।

स्वरलिपि

2:					ध	प	म	प	म	पम	गर	ग
1: सा II	स	ध	ध	प	प	-	पध	नरसं	नसंन	धप	मपम	-
तू	छो	ड़	आ	या	है	ऽ	किस	ऽऽ	कोऽऽ	ऽऽ	मऽऽ	न
2:	स	र	मग			॥					स	
1:	ग	र	सरग	र	स	-	-	-	-	-	सं	-
	म	न	रेऽऽ	मे	रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ये	ऽ

2:					सं	न		सं		धप	नध	प
1:	सं	सं	-	(सं)रं	रं	सं	न	-	न	नसं	स	न
	ज	न	म	बी	ता	ऽ	शां	ऽ	ति	नऽ	ही	ऽ
2:	म	प	म	पम	गर	ग	स	र	मग			
1:	धनध	-	पधम	-	मपम	-	ग	र	सरग	र	स	-
	पाऽऽ	ये	ऽऽऽ	ऽऽ	मऽ	न	म	न	रेऽऽ	मे	रा	ऽ
	-	-	-	-	स	-	II					
	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	तू	ऽ						
2:				ध	ध	न	न	सं	-	सं		-
1: II{	ध	ध	-	न	-	र	(न)स	ध	-	न	सं	-(रं)
	जिस	रा	ऽ	ह	से	ऽ	च	ला	ऽ	था	तू	ऽ
2:	ध					रं			गं			
1:	(न)सं	ध	-	न	सं	-	(सं)न	सं	रग	गं	रं	गंरं
	वो	रा	ऽ	ह	अ	ब	भू	ऽ	लऽ	च	ला	ऽऽ
2:							ग					
1:	सं	-	-	-	-	-}	(सं)मं	ग	-	रं	सं	-
	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	लौ	टे	ऽ	गा	तू	ऽ
2:			सं			ध	ध	प	नध		गर	ग
1:	सं	रं	रसं	न	न	सन	(ध)न	-	ध	प	मपम	-
	कै	से	ऽऽ	उ	न	केऽ	ढा	ऽ	रे	ऽ	मऽन	ऽ
2:	स	र	ग									
1:	ग	र	सरग	र	स	-	-	-	-	-	स	- II
	म	न	रेऽऽ	मे	रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	तू	ऽ

2:			ग म		
1: II{	स स -	स स र	ग म -	म म -	
	नदि या ऽ	नी रे ऽ	र हे रे	ध्या ऽ न	
2:	म पध मप	- म	गर ग -	गर र	
1:	म गमप ध	- - प	मप मग -	र (म)ग रस	
	ध रेऽऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	काँऽ पेऽ ये	ये प्रा ऽण	
		मग रग र			
2:	स स र	रम गमग रग	र स -	- - -	}
1:	सि ह रें	जब पत्तेऽऽ	ऽऽ सा रे	ऽ ऽ ऽ	
2:		ध - न	न सं -	सं -	
			(न)		
1: {	ध ध -	न - संर	सं ध -	न सां -(रं)	
	ऐ सा ल	गे ऽ मन	ढूँ ऽ इ	ले गा ऽ	
2 :	ध	रं	गं		
1 :	(न)सं ध -	न सं -	(सं)न सं रग	ग र गंर	
	फू लो की	भा षा ऽ	अ ग र	स म झेऽ	
2 :			गं		
1:	सं - -	- - सं }	(सं)म गं -	रे सं -	
	रे ऽ ऽ	ऽ ऽ जो	रा ह ज	ये ऽ ऽ	
2:	सं	ध	ध प नध	गर ग	
1:	सं र रसं	न न संन	(ध)न - ध	प मपम -	
	सां झ कीऽ	ता रो केऽ	पा ऽ रऽ	म नऽऽ ऽ	
1:	स र ग				
2:	ग र सरग	र स -	- - -	- स -	II II
	म न- रेऽऽ	में रा ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ तू ऽ	

(सुरांतर कर के गाना हो तो ऊपर लिखे सुर का अनुसरण करना होगा)

***

बाग्ला

तोरा ये या बलिस भाइ, आमार सोनार हरिण चाइ
मनोहरण चपलचरण सोनार हरिण चाइ ।।
से-ये चमके बेड़ाय, दृष्टि एड़ाय, याय ना तारे बाँधा।
से-ये नागाल पेले पालाय ठेले, लागाय चोखे धाँदा
आमि छुटब पिछे मिछे मिछे पाइ बा नाहि पाइ
आमि आपन-मने माठे बने उधाओ हये धाइ ।।
तोरा पावार जिनिस हाटे किनिस, राखिस घरे भरे
यारे याय ना पाओआ तारि हाओआ लागल केन मोरे।
आमार या छिल ता गेल घुचे या नेइ तार झोंके
आमार फुरोय पुंजि, भाबिस बुझि मरि तारि शोके ?
आमि आछि सुखे हास्यमुखे, दुःख आमार नाइ।
आमि आपन मने माठे वने उधाओ हये धाइ ।।

हिन्दी

तुम जो भी कहो सुनो मैं तो स्वर्ण हिरण चाहूं
मनहरण, चपल-चरण, स्वर्ण-हिरण चाहूं ।।
वे-जो चौंक फिरे नयन-चुराए, बांध न उसे पाऊं
जो हाथ लगे तो फिसल भागे, आँखों को धोखे में डाले
मैं भागता फिरूं उसी के पीछे पाऊं उसे या न पाऊं
मैं तो अपने ही मन मैदान बन खोया-खोया सा धाऊं ।।
तुम चाहत की चीज़ें हाट से मोल, रख लेते घर में भर-भर
जो पाइ न जाये उसी की हवा लगी मुझे क्यों कर
मेरा जो कुछ था वो भी लुटा, जो न हो उसी फिक्र में।
मैंने खो दी पूंजी सोचते हो तुम, मर रहा उसी दुख से
मैं तो खुशदिल हूँ हँसता फिरूं, दुख भला क्यों पाऊं
मैं तो अपने ही मन मैदान-बन , खोया-खोया धाऊं ।।

स्वरलिपि
(राग-मिश्र खमाज, ताल -दादरा)

[निरें रेंसां]

नि नि -II	नि	-	सं	सां	नि	-	धप	धप	-	म	ग	-
तु म ऽ	जो	-	भी	क	हो	ऽ	सु	नो	ऽ	मैं	तो	ऽ
	म	ग	प	म	ग	-	रे सा	II	-	-	-	-
	स्वर	ऽण	हि	र	ण	चा	हूं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
	सां	सां	-	ग	ग	म	प	प	प	नि	नि	नि
	म	न	ऽ	ह	र	ण	च	प	ल	च	र	ण
	ग	ग	म	प	म	प	प	-	-	नि	नि	-
	स्व	र	ण	हि	र	ण	चा	हूं	ऽ	मैं	तो	ऽ
	नि	नि	नि	नि	नि	सां	सां	-	-	सां	सां	नि
	स्व	र	ण	हि	र	ण	चा	हूं	ऽ	ऽ	मैं	तो
	सा	सा	ग	र	सा	-नि	धप	-	-	नि	नि	- I[ ]I
	स्व	र	ण	हि	र	-ण	चाऽ	हूं	ऽ	"तु	म	ऽ"
-I- प पII	प	-	प	नि	नि	-	निसां	-	सां	नि	नि	प
ऽ ऽ वो जो	चौं	ऽ	क	फि	रे	ऽ	नै	न	च	रा	ए	ऽ
	प	प	प	प	नि	-	नि	-	सां	-	नि	सा
	बां	ध	न	उ	से	ऽ	पा	ऊं	ऽ	ऽ	जी	ऽ
	सां	सां	-	सां	सां	-	नि	नि	-	नि	नि	प
	हा	थ	ल	गे	तो	ऽ	फि	स	ल	भा	गे	ऽ

	प प -	प नि -	नि - सां	- सं नि	
	आं खों को	धो खा ऽ	डा ले ऽ	ऽ मैं ऽ	
	सा सं गं	रे रे -	सां नि -	प प -	
	भा ग ता	ऽ फि रूं	उसी के ऽ	पी छे ऽ	
	प सा नि̱	ध प -	म ग -	म ग -	
	पा ऊं उ	से या न	पा ऊं ऽ	ऽ मैं तो	
	ऩि ऩि सा	ग ग -	म प प-	नि नि नि	
	अ प ने	ही म ऽन	मैं दा ऽ	न व न	
	ग ग -म	म प म	प - -	नि नि -	
	खो या ऽऽ	खो या सा	धा ऊं ऽ	ऽ मैं तो	
	नि नि -	नि नि -सां	सा - -	सा सां -नि	
	स्व र ण	हि र ऽण	चा हूं ऽ	ऽ मैं ऽतो	
	सां सां गं	रें गा - नि	धप - -	नि नि -	I[]I
	स्व र ण	हि र ऽण	चाऽ हूं ऽ	तु म ऽ	
			प		
-। सा सा नि II	सा सा -प	प प धनि	प धप -मप	म ग -	
ऽ त म ऽ	चा ह तकी	ची जे ऽऽ	हा ऽऽ टसे	मो ऽ ल	
	सा- ग ग	म- प -धप	म -प ग-	- सां निं	
	रख ले ते	घर में ऽऽ	भ ऽर भर	ऽ जो ऽ	
	सां सां ग	रें - रें	सां नि -	प - प	
	पा यी न	जा ए ऽ	उ सी की	ह वा ऽ	

		ध									
प	सा	नि	ध	प	-	म	-	ग	-	प	प
ल	गी	ऽ	मु	झे	ऽ	क्यों	क	र	ऽ	मे	रा
प	-	प	नि	नि	-	नि	सा	-	नि	"नि	-
जो	ऽ	कु	छ	था	ऽ	वो	भी	ऽ	लु	टा	ऽ
प	-	प	नि	नि	-	नि	-	सा	-	सां	नि
जो	ऽ	न	हों	उ	सी	फिक्र	ऽ	में	ऽ	मैं	ने
										ध	
सां	सां	-	सां	सां	-	नि	नि	-	नि	नि	-
खो	ढी	ऽ	पूँ	जी	ऽ	सो	च	ते	हो	तुम	ऽ
प	प	-	प	नि	-	नि	नि	सा	-	सा	नि
मर	र	हा	उ	सी	ऽ	दु	ख	से	ऽ	मैं	तो
सां	सां	गं	रें	रें	रें	सां	सां	नि	प	प	-
खु	श	दि	ल	हूं	ख	हंस	ता	ऽ	फि	रूं	ऽ
प	सां	नि	ध	प	-	म	-ग	-	म	ग	-
दु	ख	भ	ला	क्यों	ऽ	पा	ऊं	ऽ	मैं	तो	ऽ
ऩि	ऩि	सा	ग	ग	म	प	प	-	नि	नि	-
अ	प	ने	ही	म	न	मैं	ढा	ऽ	न	बन	ऽ
ग	ग	-म	-	प	म	प	-	-	नि	-	
खो	या	ऽ	खो	या	सा	धा	ऊँ	ऽ	मैं	तो	ऽ
नि	नि	नि	नि	नि	सं	सं	-	-	सं	सं	नि
स्व	र	ण	हि	र	ण	म	मं	ऽ	मे	तो	ऽ
सं	सं	गं	रें	सं	नि	धप	प	-	नि	नि	-
स्व	र	ण	हि	र	ण	मांऽ	गू	ऽ	"तु	म	ऽ"

II [ ] II

***

बांग्ला

आमि चिनि गो चिनि तोमारे ओगो विदेशिनी।
तुमि थाक सिंधुपारे ओगो विदेशिनी॥
तोमाय देखेछि शारदप्राते, तोमाय देखेछि माधवी राते
तोमाय देखेछि हृदि-माझारे ओगो विदेशिनी।
आमि आकाशे पातिया कान शुनेछि शुनेछि तोमारि गान,
आमि तोमारे संपेछि प्राण ओगो विदेशिनी।
भुवन भ्रमिया शेषे आमि एसेछि नूतन देशे,
आमि अतिथि तोमारि द्वारे ओगो विदेशिनी॥

हिन्दी

हो तुम जानी पहचानी मेरी ओहो विदेशिनी।
तुम सागर पार रहती हो ओहो विदेशिनी॥
तुम्हें देखा है शरतप्रात में, तुम्हे देखा है माधवी रात में।
तुम दीखी मेरे मनमंदिर में ओहो विदेशिनी॥
मैंने गहन ध्यान से नभ में, सुनी है, सुनी है, गीत तेरे।
मैंने तुझे ही सौंपा प्राण- ओहो विदेशिनी।
ढूंढ़ फिरूं सारा जग मैं अब
आ गया नए देश में-
मैं पाहुन तेरे द्वारे ओहो विदेशिनी॥

स्वरलिपि

											ग		
स	रे II	ग	ग	ग-	ग	ग	ग	गम	गप	मग	रे	-	रे
हो	तुम	जा	नी	पह	चा	नी	ऽ	मेऽ	ऽऽ	ऽऽ	री	ऽ	ओ
											ll		
				ग	ˇ		।प	ध					
		रे	ग	रे	रे	प	म	प	-	-	-	ग	म
		हो	ऽ	वि	दे	ऽ	शि	नी	ऽ	ऽ	ऽ	तु	म
				प	सां		रें	सं	सं				
		प	-	सां	नि	रें	सं	ध-	नि	ध	प	-	स
		सा	ग	र	पा	ऽ	र	रह	ती	ऽ	हो	ऽ	ओ

			ग			प	म						
	रे	ग	रे	रे	प	म	ग	-	-	-	स	रे-	II
	हो	ऽ	वि	ढे	ऽ	शि	नों	ऽ	ऽ	ऽ	"हो	तुम"	
ग गII	ग	ग	ग	ग	ग	म	म	प	प	प	प	-	
तु म्हे	दे	खा	है	श	र	त	प्रा	ऽ	त	में	तु	म्हे	
				प		ध	प		प				
	म	म	प	म	ध	प	म	प	म	ग	ग	-म	
	दे	खा	है	मा	ध	वी	रा	ऽ	त	में	तु	ऽम	
	म												
	रे	ग	रेग	म	प	-	-	-	-	-	स	स	
	दि	खी	ऽऽ	मे	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म	न	
	स			ग			म						
	रे	-	ग	रे	ग	म	ग	-	-	-	-	स	
	मं	ऽ	ऽ	दि	ऽ	र	में	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ओ	
			म										
	रेग	-म	ग	रेसा	ऩिध़	ऩि	सा	-	-	-	स	स	
	होऽ	ऽ	वि	ढेऽ	ऽऽ	शि	नी	ऽ	ऽ	ऽ	मैं	ने	
	स		रे									नि	
	ऩि	रे	स	स	ऩि	ध़	प़	-	-	स	स	स	
	ग	ह	न	ध्या	ऽन	से	न	भ	में	सु	नी	है	
							रे						
	स	रे	रे	रे	ग	म	ग	-	-	ग	ग	ग	
	सु	ना	है	गी	त	ते	रे	ऽ	ऽ	मैं	ने	ऽ	
	ग									प		प	
	म	म	म	म	म	म	म	-प	धप	म	प	म	
	तु	झे	ही	सौं	पा	ऽ	प्रा	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ण	ओ	
	म			ग		प							
	ग	-	मग	रे	प	म	ग	-	-	-	-	-	
	हो	ऽ	विऽ	ढे	ऽ	शि	नी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	

स											
ग	ग	ग	ग	ग	म	म-	प	-	-	प	प
ढूँ	ड़	फि	रूँ	सा	रा	जग	मैं	ऽ	ऽ	अ	ब
			प		ध				म		
म	म	प	म	मध	प	म	-	पम	ग	ग	म
आ	ग	या	न	एऽ	ऽ	दे	ऽ	ऽश	में	ऽ	ऽ
			स		रें	स	स				
प	प	पसां	नि	निरे	स	ध	नि	ध	प	-	प
पा	हु	नऽ	ते	रेऽ	ऽ	ढा	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ओ
प					प						
म	नि	ध	पम	ग	म	ग	-	-	-	सा	रे ॥ ॥
हो	ऽ	वि	देऽ	ऽ	श	नी	ऽ	ऽ	ऽ	"हो	तुम"

***

बांग्ला

चाँदेर हाँसिर बांध भेंगेछे
उछले पडे आलो।
ओ रजनीगंधा, तोमार गंधशुधा ढालो॥
पागल हाओआ बुझते नारे
डाक पड़ेछे कोथाय तारे
फुलेर वने यार पाशे याय तारेइ लागे भालो॥
नील गगनेर ललाटखानि चंदने आज माखा,
वाणीवनेर हंसमिथुन मेलेछे आज पाखा।
पारिजातेर केशर निए धराय,
शशी, छड़ाओ की ए।
इन्द्रपुरीर कोन रमणी
वासरप्रदीप ज्वालो॥

हिन्दी

चांद की हँसी बांध टूटे रे छलक ढली चांदनी,
ओ रजनीगंधा हो तुम- सुरभि-सुधा छलकाओ॥
बावरी हवा समझे ना रे
कौन उसे कहां पुकारे,
फूलों के बन में जहां भी जाये
सभी का मन मोहे हो॥
नील गगन के भाल देखो
चर्चित चंदन से वाणीबन में हंस-मिथुन
पंख है फैलाए- पारीजात केसर अंजली भर
बिखेर रहा चंदा धरा पर
इन्द्रपुर की कौन नार तुम
वासरदीप जलाती हो॥

II	ध	-ध	-न	ध	प	-	प	-	प	पध	म	-	
	चां	ऽद्र	की	हं	सी	ऽ	बां	ऽ	ध	टूट	टे	ऽ	
	प	-	-	-	-	-	पम	न	न	ध	प	ध	
	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	छऽ	ल	क	ढ	ली	ऽ	
	म	पधप	मप	मग	-	-	रे	न	न	ध	प	-	
	चां	ऽऽऽ	ऽद	नीऽ	ऽ	ऽ	ओ	ऽ	र	ज	नी	ऽ	
	म	-	ग	र	सा	-	र	म	म	प	प	म	
	गं	ऽ	धा	हो	तु	म	सु	र	भि	सु	धा	ऽ	
	प-	सा	न	सा	-	न	II						
	छल	का	ऽ	ओ	ऽ	ऽ							
II{	म	प	-	न	न	-	न	-	सं	सरें	-	संन	
	बा	व	री	ह	वा	ऽ	स	म	झे	नाऽ	ऽ	ऽऽ	
	सं	-	-	-	-	-	न	-	सं	निरे	सा	-	
	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	कौ	ऽ	न	उऽ	से	ऽ	
	न	स	नर	स	-	नध	न	-	-	-	-	-	}
	क	हां	ऽऽ	पु	का	ऽऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
	ध	ध	न	ध	प	-	प	-	ध	म	प	-	
	फू	लों	के	व	न	में	ज	हां	भी	जा	ये	ऽ	
	म	म	न	ध	प	ध	म	पधप	मप	मग	-	-	
	स	भी	ऽ	का	म	न	मो	ऽऽऽ	ऽहे	होऽ	ऽ	ऽ	

	रे न न	ध प -	म - ग	रे सा -	
	ओ ऽ र	ज नी ऽ	गं ऽ धा	हो तु म	
	रे म म	प प म	प प सान	सा - न	II
	सु र भि	सु धा ऽ	छल का ऽऽ	ओ ऽ ऽ	
II{	रे म म	म म प	प प -	प प -	
	नी ल ग	ग न का	भा ऽ ल	दे खों ऽ	
	पम न न	ध प ध	मप मग -	- - -	
	चऽ ऽ चिं	त चं ऽ	दन सेऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	
	रे रे न	ध प -	म - ग	रे सा-	
	वा णी ऽ	व न में	हं - स	मि थु न	
	रे रे म	म प -	म प -	- - -	}
	पं ऽ ख	है फै ऽ	ला ये ऽ	ऽ ऽ ऽ	
{	म प -	न न -	न सा -	सरे - सनि	
	पा री ऽ	जा ऽ त	के स र	अंऽ ज लिऽ	
	सं- - -	- - -	न सां नि	सारें सां -	
	भर ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	बि खे र	रऽ हा ऽ	
	न सां नरें	सां सां नध	न - -	- - -	}
	चं द्रा ऽऽ	ध रा ऽऽ	पर ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	
	ध - न	ध प -	प - ध	-म प -	
	इं ऽ द्र	पु र की	कौ न ना	ऽर तु म	

म	म	न	ध	प	ध	म	पधप	मप	मग	-	-	
वा	स	र	दी	प	ज	ला	SSS	तीS	होS	S	S	
रे	न	न	ध	प	-	म	-	ग	रे	स	-	
ओ	S	र	ज	नी	S	गं	S	धा	होS	तु	म	
र	म	म	प	प	म	प	पा	संनि	सं	-	न	II II
सु	र	भि	सु	धा	S	छल	का	SS	ओ	S	S	

* * *

बाग्ला

बाजे करूण सुरे हाय दूरे
तब चरणतलचुंबित पंथवीणा।
ए मम पांथचित चंचल, जानि ना की उद्देशे ॥
यूथीगंध अशांत समीरे धाय उतला उच्छ्वासे,
तेमनि चित्त उदासी रे निदारूण बिच्छेदेर निशीथे ॥

हिन्दी

बजे करुण सुर में- हाय दूर रे-
तेरे चरणदलचुम्बित पथवीणा बजे दूर रे ॥
य मेरा पथिक- चित्त चंचल-रे
हाय! जानूं ना कारण, दूर रे ॥
जूही सुगंध अशांत-पवन में
धाये- उतावला - उच्छ्वल ऐसे ही चित्त है उदास-रे !
निदारुण-विरह की निशा में ॥

स्वरलिपि

II	-	न	ध	पम	प	ध	न	न-	सं	-	-	-	-	न	ध	पम
	S	ब	S	जेS	क	रु	ण	सुर	ये	S	S	S	S	ब	S	जेS
	प	ध	न	न	सं	-	-	-	मप	नसं	रंग	-	म	रं	रं	सं
	क	रु	ण	सुर	में	S	S	S	हाS	SS	SS	S	य	दू	Sर	रे

- न ध पमं	प ध न न	सं - - -	- रं रं गं
ऽ ब ऽ जेऽ	क रु ण सु	में ऽ ऽ ऽ	ऽ ते रे च
र रं सं सं	नसं प प प	मप ग ग र	स - - -
र ण त ल	चूऽ म बि त	पऽ थ ऽ वी	णा ऽ ऽ ऽ
	ध		
- - - -	नस पध नसं रंग	मं रं - सं	- न ध पम
ऽ ऽ ऽ ऽ	बऽ जेऽ ऽऽ ऽऽ	दू र ऽ ये	ऽ ब ऽ जेऽ
			[पं पं]
प ध न न	सं - - -	{- ग ग र	रं गं गं रं
क रु ण सु	र ऽ ऽ ऽ	ऽ ये में रा	प थि क चि
सं न प न	सं - - -}	- - - -	सं नसं रंग रं
त च न् च	ल ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	जा नूंऽ ऽऽ ना
सं - सं -	नसं रंगं गं -	मं रें - सं	- न ध पम
का ऽ र ण	येऽ ऽऽ ऽ ऽ	ऽ दू र रे	ऽ ब ऽ जेऽ
प ध न न-	सं - - -	- - प प	मप - प प
क रु ण सुर	ये ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ जूं हीसु	गऽ न् ध अ
मप - - ग	रग म गर स	र - ग र-	स म ग म
शाऽ ऽ न् त	पऽ ऽ वन में	धा ये उ ताव	ला ठ च्छू ऽ
प - - -	गं ग रं -	रं - - गं	रं सं न पन
ल ऽ ऽ ऽ	ऐ से ही ऽ	चि त ऽ हैं	उ दा स ऽऽ
सं - - -	गं ग रं -	रं - - पं	रं सं न पन
रे ऽ ऽ ऽ	ऐ से हि ऽ	चि त ऽ ऽ	उ दा स ऽऽ

सं - - सं	नसं रंगं - रं	सं - सं -	नसं रंगं - रं
रे ऽ ऽ नि	दाऽ ऽऽ ऽ रु	ण ऽ वि र	ऽ ऽऽ ह की
सं - - सं	नसं रंग ग मं	- रं - स-	- न ध पम
ऽ ऽ ऽ नि	शाऽ ऽऽ में ऽ ॥	ऽ दूर रे ऽऽ	ऽ बा ऽ जेऽ
प ध न न-	सं - - -	II II	
क रु ण सुर	मे ऽ ऽ ऽ		

***

बांग्ला

ना, येयो ना, येयो नाको

मिलनपियासी मोरा कथा राखो, कथा राखो ॥

आजो वकुल आपनहारा हाय रे, फूल-फुटानो हय नि सारा,

साजि भरे नि पथिक ओगो, थाको ॥

चाँदेर चोखे जागे नेशा, तारा आलो गाने गंधे मेशा

देखो चेये कोन वेदनाय हाय रे

मल्लिका ओइ याय चले याय अभिमानिनी

पथिक, तारे डाको डाको ॥

हिन्दी

न जाओना नहीं जाना प्यासे हम, मिलन के तेरे,

वादा रखो वादा रखो हाँ !

आज भी बकुल, अपने में, खोए, हाय रे।

अंत हुआ नहीं, फूलों को जगाना-डलिया भरी नहीं,

पथिक हो तुम रुको, रुक जाना ॥

चांद-की आँखें नशे में जागी छाई चांदनी , सुर-सुरभि में डूबी

देखो-देखो दर्द की मारी, हाय री मल्लिका भी-विदा हो चली

गुमान लिये पथिक उसको, चलो बुला लो हां ॥

('वसंत' रचना से)

स्वरलिपि

[रं सं]

II संरं - न -	- न - ध प	मग - - -	- - र स
नाऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ जा ओ	ना ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ न ही
ग ॥	ग	म	र र
नस रग र -	रप - -म -	ग - र गर	स - सर स
जाऽ ऽऽ ना ऽ	प्या ऽ से ऽ	हम् ऽ ऽऽ मि	लन् ऽ केऽ ऽ
स			
न - स -	- - ग ग	ग - गम -	- - म गप
ते ऽ रे ऽ	ऽ ऽ वा ढा	र खो ऽ ऽ	ऽ ऽ वा ढाऽ
प म	ग		
म पम ग -	र स र ग	I [ ] I	
र खेऽ ऽ ऽ	हाँ ऽ ऽ ऽ		
			- - - -
			ऽ ऽ ऽ ऽ
			सं
II प - पध म	प - प ध	न - सं रं	रं न सं न
आ ऽ ज भी	ब कु ल अ	प ने में ऽ	खो ऽ ये ऽ
		सं	स
न रं - न	नसं - - -	न - - सं	न सं न रं
हा ऽ ऽ य	रेऽ ऽ ऽ ऽ	अं ऽ त हु	आ ऽ ऽ न
	न		र सं
रंसंरं - न -	ध प ध -	न - - नरं	सं - न -
नऽ ऽ ऽ ऽ	हो ऽ ऽ ऽ	फू लों ऽ कोऽ	ज गा ना ऽ
न ध	ध		
ध नध प ध	म - पध मप	मग - - -	र स र -
ले लिऽ या ऽ	भ री ऽऽ नऽ	हींऽऽ ऽ ऽ	रै ऽ ऽ ऽ
	न		न ध
र - र न	-ध - संन -	- - - -	-ध नध प ध
प ऽ थि क	हो ऽ तुम ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	रु क ऽऽ जा

	ध				
	म - पधप मप	मग - रस र	I [ ] I		
	रु क जा ऽ	ऽना ऽ ऽ ऽ			
				- - - -	
	[र - स -]			ऽ ऽ ऽ ऽ	
		ग ग	प म	म	
II{	स - स ग	र ग र प	म - र म	ग र स -	
	चाँ ऽ द की	आं खों ऽ में	नऽ ऽ शा ऽ	जा ऽ गी ऽ	
	(- - - -	- - ग -	ग - गम -	- - म प	
	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ छा ई	चाँ द नीऽ ऽ	ऽ ऽ सु र	
	म प	म	ध		
	म प म -	ग र मग -)}	प - पध म	प - प ध	
	सु र भी में	डूऽ ऽ बीऽ ऽ	दे ऽ खोऽ ऽ	दे ऽ खा ऽ	
		रं			
	न - - सं	नरं न सं न	न र - न	नसं - - -	
	द र द की	माऽ ऽ ऽ री	हा ऽ य ऽ	रीऽ ऽ ऽ ऽ	
	सं	सं	र	न	
	न - - सं	न स न र	संर - न -	ध प ध -	
	म ऽ ऽ लि	काऽ ऽ ऽ	भी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	
		रं सं	न ध	प	
	न - रं रं	सं - न -	ध नध प धप	म म पधप मप	
	वि द्या ऽ ले	ऽ च ली ऽ	ऽ ऽऽ गु मा	ऽ न ऽऽऽ लिऽ	
				न	
	मग - - -	र स र -	र - न -	ध - संन -	
	ये ऽ ऽ ऽ	हो ऽ ऽ ऽ	प ऽ थि क	उ स कोऽ ऽ	
		न ध	ध प		
	- - - -	-ध नध प ध	म - पधप मप	मग - रस र	II [ ] II
	ऽ ऽ ऽ ऽ	च लोऽ ऽ ऽ	बु ऽ लाऽऽ	ऽऽ लोऽ हाँऽ ऽ	

***

बांग्ला

ना चाहिले यारे पाओआ याय, तेयागिले आसे हाते,
दिवसे से धन हारायेछि आमि पेयेछि आँधार राते।।
ना देखिबे तारे, परशिवे ना गो, तारि पाने प्राण मेले दिये जागो
ताराय ताराय रबे तारि वाणी, कुसुमे फुटिबे प्राते।।
तारि लागि यत फेलेछि अश्रुजल
वीणावादिनीर शतदलदले करिछे से टलोमल।
मोर गाने गाने पलके पलके झलसि उठिछे
झलके झलके,
शांत हाँसिर करुण आलोके भातिछे नयनपाते।।

हिन्दी

मांगे बिन जो पा जाये मांगे बिन जो पा जाये
तजूं तो जो हाथ लगे
दिन में वो धन खोया रे मैं पा गया अंधेरी रातों में
देखे न कभी जिन्हे छूये भी नहीं रे
उसके लिए मन के द्वार खोले जागे रहे जागे
तारों ही तारों में रमी उनकी वाणी
सुबह खिली फूलों में।।
उनके लिए जितनी बहे आंसू मेरे
वीणावादिनी के शतदलों पे बड़ी आंसू ढलकें
मेरे गीत सुरों में पल ही पल वे
झलकें हुलसि चमक झमक शांत हंसी की
करुण आभा से सुहाते चितवन में।।

स्वरलिपि

II	म	प	प	प	ध	नधप	प	-	-	धन	संन	धन
	मां	गे	बि	न	जो	SSS	पा	S	S	जाS	SS	SS
					II							
	धप	-	-	-	-	म	म	प	प	प	पध	प
	एS	S	S	S	S	S	मां	गे	वि	न	जोS	S
							म					
	म	-	-	पधप	मप	-	ग	-	-	-	-	म
	पा	S	S	जाSS	SS	S	ए	S	S	S	S	S
	म	प	प	प	(प)ध	पम	प	पध	न	-	-	धप
	त	जूं	तो	जो	हा	थ	ल	गेS	S	S	S	SS
					सं							
	प	ध	सं	सं	न	धप	प	प	ध	न	ध	न
	दि	न	मे	वो	धन	S	खो	S	S	या	S	S
	ध			प								
	प	-	-	ध	प	-	म	प	प	प	ध	प
	रे	S	S	मै	S	S	पा	ग	या	अं	धे	री
	मप	मग	-	-	-	म II						
	राS	तोS	में	S	S	S						
							रं					
- II{	प	ध	सं	सं	नसं	रंगं	सं	-	-	-	-	प
S	दे	खे	ना	क	भीS	SS	जि	न्हे	S	S	S	S
	नसं	सं	सं	न	पध	नसं	न	-	-	-	-	धप }
	छूS	ये	भी	न	हींS	SS	रे	S	S	S	S	SS
	प	न	न	(ध)न	प	ध	म	प	प	ध	प	ध
	उस	के	लि	ये	मन	के	द्वा	S	र	खो	ले	S

	मप	मग	–	म	पध	निसं	ध नि	ध प	–	–	–	–
	जाऽ	गेऽ	ऽ	र	हे	ऽऽ	जा	गे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
	नि	नि	सं	सं	सं	सं	निसं	सं	सं	सं	नसं	रें
	ता	रों	की	ता	रों	में	र	मीं	उन	की	वाऽ	ऽ
	सं	रें	संरेंसं	नि	–	–	नि –	सं	सं	सं	सं	नि
	णी	ऽ	ऽऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	सुब	ह	खुऽ	खि	ली	फू
	ध	ध										
	नि	प	–	प	ग	म	II					
	लों	में	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ						
												म
-II{	स-	स	स	र	र-	र	र	र	ग	र	प	प
ऽ	उन	के	लि	ये	जित	ने	व	हे	ऽ	आँ	सू	ऽ
	म											
	ग	म	–	–	–	–	ग	गम	म	म	म	–
	मे	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	वी	णाऽ	वा	दि	नी	के
				म	प							
	म	प	प	प	म	ग	ग	म	म	ग	र	गम
	श	त	द	लों	पे	ऽ	व	ही	आँ	सू	ढ	लऽ
	म											
	ग	–	–	–	–	–}	पध	सं	सं	सं	नसं	र
	के	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मेऽ	रे	गी	त	सु	रों
	सं	–	–	–	–	–	नि	सं	सं	नि	सं	नि
	में	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प	ल	ही	प	ल	वो
										म		
	ध	नि	ध	प	ध	प	म	प	पध	प	ग	म
	छ	ल	कें	हु	न	सि	च	म	कऽ	झ	म	क

मप	-	प	प	प	-	स	स	स	रे	रे	ग	
शां	ऽ	त	हँ	सी	की	क	रू	ण	आ	भा	में	
रे	रे	ग	रे-	रेप	^मप	प	ग	-	-	-	म	II II
सु	हा	ते	चित्	वऽ	न	में	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	

***

बांग्ला

हे नवीना,
प्रतिदिनेर पथेर धुलाय जाय ना चेना ।।
शुनि वाणी भासे वसंतवातासे,
प्रथम जागरणे देखि सोनार मेघे लीना ।।
स्वपने दाओ धरा की कौतुके भरा ।
कोन् अलकार फूले माला साजाओ चुले,
कोन् अजाना सूरे विजने बाजाओ वीणा ।।

हिन्दी

हे नवीन, हर एक दिन की पथ धूलि में हो
न जाओ, पहचानी तुम हे नवीना ।।
वाणी की इक लहर चली, बासंती हवाओं में
पलकें खुलते ही तुम दिखी, स्वर्ण मेघलीना हो नवीना ।।
सपने में, आयी कौतुहल बनी आई तुम, आई तुम।।
कौन अलकापुर की फूलों से गूंथ केश सजाई
कैसी अंजानीसी सुर में, विजन वीणा बजाई हे नवीना।।

स्वरलिपि

II	स	-	ध॒	ध॒	-	ध॒	^धप	-	-	ध॒	म	-
	हे	ऽ	ऽ	न	ऽ	वी	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
	प	-	नि॒	ध॒	-	^धप	म ग	-	-	-	-	-
	हे	ऽ	ऽ	न	ऽ	वी	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

नि			स			ध			नि		
सां-	सां	सां	रें	सं	नि	नि	निध	नि	ध	प	ध
हर	इ	क	दिन	की	ऽ	पथ	धूऽ	ऽ	लि	में	ऽ
मप	ग	ऽ	ध	-	-	मप	ग	-	ध	-	-
होऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न	जाऽ	ऽ	ऽ	ओ	ऽ	वह
गरे	ग	र	सा	-	रे	ग	म	मम	गरे	ग	रे
चाऽ	ऽ	नी	तुम	ऽ	ऽ	ओ	ऽ	ऽऽ	नऽ	ऽ	वी
					II						
सा	-	-	-	-	-	II					
ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ						
II पध	ध	-	नि	सां	-	सां	रें	-	-	-	संनि
वा	णी	ऽ	की	इ	क	ल	ह	ऽ	र	ऽ	चाऽ
									ध		
सां	-	-	-	-	रें	स	ध	-	ग	-	गं
ली	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	वा	सं	ऽ	ऽ	ती	ऽ	ह
ध	नि	सां	रें	गं	रें	सं	-	-	-	-	-
वा	ऽ	ऽ	ऽ	ओं	ऽ	मे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
						सं					
संगं	गं	रें	रें	सं	-	रें	सं	-	नि	धप	-
पल	के	ऽ	खु	ल्ते	ऽ	ही	तु	म	दि	खीऽ	ऽ
स	स	ग	र	ग	-	रे	ग	-	-	र	स
स्व	ऽ	र्ण	में	ऽ	घ	ली	ना	ऽ	ऽ	हो	ऽ
					म	म					
स	-	-	-	ध	प	ग	-	-	-	र	स II
न	ऽ	ऽ	वीं	ऽ	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

II

ध़	नि़	स	स	स	नि़	स	स	ऱ	-	-	-
स	प	ऽ	ने	मैं	ऽ	आ	इ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
						म	म				
स	-	स	ध	ध	प	प	ग	-	-	-	-
कौ	ऽ	तु	ऽ	ह	ल	ब	नी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
स	ग	-	-	-	स	स	र	-	-	-	नि़
आ	ई	ऽ	ऽ	तु	म	आ	ई	ऽ	ऽ	तु	म
						प					
स	-	-	-	-	-	ध	-	ध	नि	स	र
आ	ई	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	कौ	ऽ	न	अब	का	ऽ
नि	सं	-	-	-	-	नि	सं	गं	रं	सं	रं
पुर	की	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	फू	लों	से	गूं	ऽ	थ
नि	स	-	सं	-	सं	म	ध	नि	सं	गं	रें
के	ऽ	ऽ	श	ऽ	स	जा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
सं	-	-	-	-	-	सं	गं	गं	रं	सं	-
ई	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	कै	सी	अं	जा	नि	सी
सं रं	सं	-	न	-	न	पन	न	-	ध	प	ध
सुर	में	ऽ	ऽ	ऽ	वि	जऽ	न	में	वी	णा	ब
	म										
मप	ग	-	-	-	-	स	र	ग	म	ग	र
जाऽ	ई	ऽ	ऽ	ऽ	हे	न	ऽ	ऽ	ऽ	वी	ऽ
स	-	-	-	-	-	**II II**					
ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ						

***

बांग्ला

सेदिन दुजने दुलेछिनू बने, फूल डोरे बाँधा झुलना।
सेइ स्मृतिटुकू कभू क्षणे क्षणे येन जागे मने भूलो ना।।
सेदिन बातासे छिल तुमि जानो आमारि मनेर प्रलाप जड़ानो,
आकाशे आकाशे आछिल छड़ानो तोमार हासिर तुलना।।
येते येते पथे पूर्णिमाराते चाँद उठेछिल गगने।
देखा हयेछिल तोमाते आमाते की जानि की महा लगने।
एखन आमार बेला नाहि आर, बहिब एकाकी बिरहेर भार
बाँधिनु ये राखी पराणे तोमार से राखी खुलो ना, खुलो ना।।

हिन्दी

वो दिन सुहाना-फूलडोर-बंधे
झूले थे हम वन में झुलना ।।
छोटी-मीठी वो यादें मन में जो जागे
पल वो हम कभी भूले-ना, भूलें-ना।।
उस दिन हवा में, तुमने भी माना पागल-बन मेरे, मन का सामाना।
नीले-नीले नभ पे, हरष छा जाना, तेरी ही हँसी की तुलना।
भूलो ना, भूलो ना, भूलो ना।।
राह पे हमराही रात पूनम थी चांद चमका, नभ में
न जाने वो कौ न सी महालगन में
हम और तुम थे मिले (जब) चांद चमकता नभ में
अब वो बेला बीत चली भार विरह के सहू अकेले।
जो राखी बांधे मैंने प्राण संग तेरे
वह राखी खुले ना खुले ना, भूलो ना।।

स्वरलिपि

II{	ऩ स ग र	ग र ग -	प प पध ध्प	मप मग - -	
	वो दि न सु	हा ऽ ना ऽ	फू ल डोऽ र	बंऽ थेऽ ऽ ऽ	
				।।	
	प प पध प-	म ग र सऩि	स ग - -	- - - (रं)}	I - I
	झू ले थेऽ हम	वन में झू लऽ	ना ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ

	म प - प	प - प पम	पऩ न न ध	न ध संन धप
	छो टी मी ठी	वो या दें ऽऽ	मन में जो ऽ	जा ऽ गेऽ ऽऽ
	प ध प प	म ग ग गम	म - म प	मप ग गर सऩ
	प ल वो हम	क भी भू ले	ना ऽ भू ले	नाऽ ऽ भूऽ लेऽ
	स ग - -	- - - र	II	
	ना ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ		
- II{	पसं सं - सं	सं ऩ सं -	सं रें सं न	न ध न -
ऽ	उ स दि न	ह वा ऽ में	तु म ने भी	मा ऽ ना ऽ
	र ग म म-	प - प -	प ध न प	नध पम प -}
	पा ग ल वन	मे ऽ रे ऽ	म न का स	मा ऽऽ ना ऽ
	प न न ध	न ध न -	ध सं न न	ध - प -
	नी ले नी ले	न भ पे ऽ	ह र ष छा	जा ऽ ना ऽ
	प ध प म	ग ग ग गम	म - म प	मप म ग र
	ते री ही हूँ	सी की तु लऽ	ना ऽ भू लो	नाऽ ऽ भू लो
	मग - रे सन	स ग - रे	II	
	नाऽ ऽ भू लोऽ	ना ऽ ऽ ऽ		
- II{	ऩ ऩ ऩ पऩ	ऩ स स -	स ग ग र	मग र स ऩ
ऽ	रा ह पे हम	रा ऽ ही ऽ	रा ऽत पू ऽ	नम् ऽ थी ऽ
	स प म ग	र स सर ऩ	स - - -	- - - -
	चाँ द च म	का ऽ नऽ भ	में ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

म प प प	प - प म	पन न न ध	न ध न ध
न जा ने वो	कौन ऽ सी ऽ	मऽ हा ऽ ल	ग न में ऽ
सं न ध प	पध प म ग	म - - -	- - - -
ह म औ र	तुम थे ऽ मि	ले ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ज ब
गम पध प म	ग रस सर न	सं - - -	- - - - }
चाँऽ दऽ च म	का ऽऽ नभ ऽ	में ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
{ सं सं - सन	सं - - -	रं सं सं नध	न - - -
अ ब वो वेऽ	ला ऽ ऽ ऽ	बी ऽ त चऽ	लो ऽ ऽ ऽ
ध सं न न	न ध न -	ध धसं न ध	प - - - }
भा ऽ र वि	र ह के ऽ	स हूं अ के	ले ऽ ऽ ऽ
प पन न ध	न ध न न	ध सं न ध	प - - -
जो राऽ खी बां	धां ऽ मैं ने	प्रा ण संग ते	रे ऽ ऽ ऽ
प ध प म	ग ग ग ग	म - म प	मप म ग र
वो रा खी खु	ले ना खु ले	ना ऽ भू लो	नाऽ ऽ भू लो
म ग - र सन	स ग - र	II II	
ना ऽ भू लोऽ	ना ऽ ऽ ऽ		

***

बांग्ला	हिन्दी
चक्षे आमार तृष्णा ओगो,	नयनों में छाए तृष्णा
तृष्णा आमार वक्ष जुड़े।	ओहो, तृष्णा मेरा हृदय घेरे
आमि दृष्टिविहीन वैशाखी दिन,	मैं हूं वर्षा विहीन, वैशाखी-दिन, संतप्त-प्राण
संतापे प्राण जाय ये पुड़े ॥	जायें रे जले।
झड़ उठेछे तप्त हाओयाय,	आंधी बहे तपती हवाएं, मन को सुदूर सुनेमें ले जाएं।
मनके सुदूर शून्ये धाओआय	अब घूंघट जाए रे, उड़े रे॥
अवगुंठण जाय ये उड़े॥	जो फूल कानन मे थे आलोकमय
ये फुल कानन करत आलो	काले बने वो मुर्झाये, काले बने वो मुर्झाये रे हाय!
कालो हये से शुकालो।	झरने को किसने यों रोका, निष्ठुर पत्थर से बांधे-
झरनारे के दिलो बाधा निष्ठुर पाषाणे बांधा	दुखद शिखर चढ़े॥
दुःखेर शिखरचूड़े॥	

स्वरलिपि

I	स	-	सा	-	सा	सा	-	-रे	-	-नि़	सा	-रे	रेपा	-	-
	न	य	नों	ऽ	में	छा	ऽ	ये	ऽ	ऽऽ	तृ	ष	णाऽ	ऽ	ऽ
		॥													
	-	-	प	-	ध	म	-	प	-	प	प	-	-	-	-
	ऽ	ऽ	ओ	ऽ	हो	तृ	ष	णा	ऽ	में	रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
	प					ग									
	म	-	प	-ध	मप	रे	-	पा	-	-	म	-	रे	-	सा
	हि	र	द	यऽ	घेऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न	य	नों	ऽ	में
								रे							
	सा	-	-रे	-	नि़	सा	-रे	प	-	-	-	-	ध	-	नि़
	छा	ऽ	ऽये	ऽ	ऽ	तृ	ष	णा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मैं	ऽ	हूं
													सं		
{	ध	-	नि	-	ध	नि	-	-	-	नि	ध	-सां	नि	-	ध
	व	ऽ	र्षा	ऽ	वि	ही	ऽ	ऽ	ऽ	न	वै	ऽऽ	शा	ऽ	खी

प प	(ध - नि)}	- - -	सां -	नि - ध	धनि -	प - प
दि न	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	स न्	त प् त	प्राऽ ऽ	ऽ ऽ ण

पनि -	म - -	प - नि	नि म प	रे -	प - -	II
जा ये	रे ऽ ऽ	जा ऽ ये	रे ऽ ज	ले ऽ	ऽ ऽ ऽ	

- - - II	म - -	रें - रें	रें सां -	सां - प	नि -	सां प नि
ऽ ऽ ऽ	आँ ऽ	धी ऽ ब	हे ऽ	त प ती	ह ऽ	वा एं ह

सां सां	- - -	नि -रें	सां - नि	नि -ध	नि - प
वा ये	ऽ ऽ ऽ	म ऽन	को ऽ सु	दू ऽर	सू ऽ ने

प -	- - -	ग -म	-प -ध -नि	सां सां	सां - प
में ऽ	ऽ ऽ ऽ	ले ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ	जा ऽ	यें ऽ रे

नि -	नि - सें	नि -रें	रें सां - सां	नि -ध	नि - प
ऽ ऽ	अ ऽ ब	धूं ऽऽ	घ ऽ ट	जा ऽये	रे ऽ उ

पनि -	-म - -	-ग -म	प -ध -नि	II - - -
ड़े ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ	ऽ ऽ ऽ

II म -	रे - रे	रे रे	सा - सा	रे प	प रे - रे
जो ऽ	फू ल का	न न	में ऽ थे	आ ऽ	लो ऽ क

प प	- - -	म -	प - प	प -	प - प
म य	ऽ ऽ ऽ	का ऽ	ले ऽ ब	ने ऽ	वो ऽ मुर

प -सां	सां - ध	नि ध	नि -प -	नि ध	नि - ध
झा ऽऽ	ये ऽ ऽ	का ऽ	ले ऽऽ ऽ	का ऽ	ले ऽ ब

| नि -ध | नि - प- | म प | रे - - | प - | - - - |
| ने ऽऽ | बो ऽ मुर | झा ऽ | ये ऽ रे | हा ऽ | ऽ ऽ य |

| मं - | ग - गं | म - | रे - - | नि -सां | प - - |
| झ र | ने ऽ को | कि स | ने ऽ है | रो ऽऽ | का ऽ ऽ |

| सां - | - - - | सांरे सां | सां - नि | नि -ध | धनि - ध
| ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ | निऽ ष | ठु ऽ र | प ऽऽ | त्थऽ र से

| धनि - | प - - | -मं - | -ग - - | म - | रे - सं |
| बाँऽ ऽ | धे ऽ ऽ | ऽ ऽ | ऽऽ ऽ | दु ऽ | ख ऽ द |

| सां - | नि - ध- | धनि - | प - - | -ग -म | -प -ध नि | II II
| शि ऽ | ख ऽ रऽ | चऽ ऽ | दे ऽ ऽ | ऽऽ ऽऽ | ऽऽ ऽऽ ऽ |

* * *

बांग्ला

एइ श्रावण- बेला बादल-झरा यूथीवनेर गंधे भरा ॥
कोन् भोला दिनेर विरहिणी, येनो तारे चिनि चिनि
घन बनेर कोणे कोणे फेरे छायार घोमटा परा ॥
केन विजन बाटेर पाने ताकिये आछि के ता जाने।
हठात कखन अजाना से आसवे आमार द्वारेर पाशे,
बादल साँझेर आँधार-माझे
गान गाबे प्राण पागल करा ॥

हिन्दी

ऐसी सावन की बेला में बादल झरे,
जूही वन में सौरभ भरे ॥
किसी विसरे दिन की विरहन सी, मुझे लगे वो जानी-चिह्नी
घने वन के कोने-कोने फिरे छाया सी घूंघट ओढ़े।
क्यों विजनबाट छैयाँ निहारूं मैं, कौन वो जाने,
अचानक ही अंजानी कोई आये, मेरे द्वार पर ठहरे,
बदली वो सांझ रे, अंधियारी घिरी-वो गीत गाए, प्राण पागल बने ॥

स्वरलिपि

										स	स		
										ऐ	सी		
II	रे	म-	म	प	सां	निर्रे	सांर्रे	नि	-	-	ध	प	
	सा	वन	की	व	ऽ	ऽऽ	लाऽ	ऽ	ऽ	ऽ	में	ऽ	
						‖	रे		न	ध	प		
	प	ध	प	मग	रे	-	नि	नि	ध	प	म	ग	
	बा	द	ल	झऽ	रे	ऽ	जू	ही	ऽ	वन	में	ऽ	
							ग		म				
	रे	-	प	ग	म	ग	रे	म	ग	रे	सा	-	II
	सौ	ऽ	ऽ	र	भ	भ	रेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऐ	सी	
II	-	-	-	-	प	प	म-	प	नि	सं-	र्रे	गं	
	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	कि	सी	बिस	रे	ऽ	दिन	की	ऽ	
	गं			गं									
	र्रे	र्रेमं	मगं	र्रे-	सां	-	-	-	-	-	नि	सां	
	वि	रऽ	ऽ	हिन	सी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मु	झे	

								सां				सा
	सारे	-	नि॒	नि॒	-	-	नि॒सा	नि॒	-	निसां	-	नि॒
	लगे	ऽ	ऽ	वो	ऽ	ऽ	जा	नी	ऽ	चीन्ही	ऽ	ऽऽ
	(नि)सा	नि॒	-	ध	नि॒	-	धसा	(सं)नि॒	-	ध	प	-
	ध	ने	ऽ	वन	के	ऽ	कोऽ	ने	ऽ	को	ने	ऽ
										म		
	पध	प	-	म	म	-ग	रे-	प	म	ग	रेसा	-
	फिऽर	ऽ	ऽ	छा	या	सीऽ	घूंऽ	घट	ओ	ढ़े	आ	ई
								र		प		
II	-	-	-	-	सा	सा	{रे	प	प	म	म	ग
	ऽ	ऽ	ऽ	क्यों	ऽ	वि	ज	न	ऽ	बा	ट	ऽ
	रेग	(ग)रे	-	-	-	-	(रे	-	ग	म	-	पध
	छैऽ	याँ	ऽ	ऽ	ऽ	नि	हा	ऽ	ऽ	रूँ	ऽ	ऽऽ
	ध।											
	प	-	-	-	-	रे	रे	प	म	म	-	ग
	मै	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	कौ	न	वो	जा	ऽ	ऽ
	ग		म									
	रे	म	ग	रे	सा	सा)}	म	म	नि	सां-	रें	गं
	नेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	क्यों	ऽ	अ	चा	ऽ	नक	ही	ऽ
				गं								
	रें	गंरें	(म)ग	रें	सां	-	सां	रें	नि॒	नि॒ध	प	-
	अन	जाऽ	ऽ	ना	को	ई	आ	ऽ	ये	मेऽ	रे	ऽ
	पध	प	प	मग	रे	-	रे	म	म	प	-	ध
	द्धाऽ	र	पे	ठह	रे	ऽ	बद	ली	ये	साँ	ऽ	झ
	सानि॒	-	-	-	ध	प	पध	प	प	मग	रे	-
	रेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	अँधि	या	री	घिरी	ऽ	वो

रे	प	प	म	म	ग	रे	रेग	म	ग (म)	रेसा	-	II II
गी	त	गा	ये	प्रा	ण	पा	गल	ब	ने	ऐ	सी	

***

बांग्ला

आजि झरो झरो मुखर बादरदिने।
जानि ने, जानि ने किछुते केन ये मन लागे ना॥
एइ चंचल सजल पवन वेगे उद्भ्रांत मेघे मन चाय
मन चाय ओइ बलाकार पथखानि निते चिने॥
मेघमल्लारे सारा दिनमान बाजे झरनार गान।
मन हारावार आजि बेला, पथ भूलिवार खेला-
मन चाय, हृदय जड़ाते कार चिर ऋणे॥

हिन्दी

आज रिमझिम मुखरित बदरी दिन जानूं ना।
न जाँनू, कुछ भी क्यों मन को न भाए रे॥
ये चंचल-सजल-सतेज पवन, उन्मन ये मेघ
मन चाहे, उस वक्त पांति संग उड़ जाए॥
मेघमल्हार में सारा दिनमान लगे निर्झर गान, बजे निर्झर गान,
मन खोए, ऐसी बेला, राह भूलूं ऐसी लीला
मन चाहे, हृदय बांध कहीं चिरऋणी जाऊं बन॥

स्वरलिपि

सा	सा
आ	ज

II{ सा सा	रे रे	रे रे	रे ग	म म	प -म	प -	(सा सा) }
रि म	झि म	मु ख	रि त	ब द	री SS	दि न	आ ज

- -	प सां	सा -नि	सां -	सं रें
S S	जा S	नूं SS	ना S	S S

(सं) धं -सां	नि -ध	प -	ग म
ना SS	जा SS	नूं S	S S

				ध			म	
	प पसां	स नि	ध प	पध प	म ग	म -प	प म	ग रे
	कु छऽ	भी क्यों	म न	कोऽ न	भा ये	रे ऽऽ	रि म	झि म
	सा सा	रे ग	म म	प म	प -	सा सा II		
	मु ख	रि त	ब द	री ऽ	दि न	आ ज		
प - II	प -	प प	प प	प ध	नि नि	सं नि	रेंसं नि	नि -
ये ऽ	चं ऽ	च ल	स ज	ल स	ते ऽ	ज प	व न	ऽ उन्
						नि		
	निध सां	नि ध	प -	- ध	-प ध	नि ध	प -	- ध
	मऽ न	ये ऽ	मे ऽ	ऽ ऽ	ऽऽ घ	म न	चा ऽ	ऽ ऽ
	प ध	नि ध	प -	प -	प -	प प	प प	प ध
	हे ऽ	म न	चा हे	ये ऽ	चं ऽ	च ल	स ज	ल स
	नि नि	सां नि	सां सां	सं नि	सां रे	रे रे	रे ग	- रे
	ते ऽ	ज प	वन ऽ	उ न	म न	ये ऽ	मे ऽ	ऽ ऽ
		रें				रें		
	सां रें	गे र	सां नि	सां -	- -	सरें सां	नि ध	नि -
	ऽ घ	म न	चा ऽ	हे ऽ	ऽ ऽ	म न	चा ऽ	हे ऽ
						ध		
	- -	प प	प पसां	सां नि	ध प	पध प	म ग	म -ग
	ऽ ऽ	उ स	ब कऽ	पां ऽ	ति ऽ	संऽ ग	उ ड़	जा ऽऽ
			म					
	म ग	म प	प म	ग रे	सा सा	रे ग	म म	प म
	ए ऽ	आ ज	रि म	झि म	मु ख	रि त	ब द	री ऽ
	सा सा	सा सा	II					
	दिन न	'आ ज'						

		[नी]							
- - II{	प नी	नि नि	नि ध	नि - I	निध धसा	सा निध	नि -	नि ध	
ऽऽ	मे ऽ	घ म	ल्हा र	में ऽ	साऽ राऽ	दि नऽ	मा न	ब जे	
				ध					
	प ध	नि ध	प प	पध प	ग ग	ग ग	म -	(- न)	}
	नि र	झ र	गी त	ब जे	नि र	झ र	मा ऽ	ऽ न	
म - -	प प	प ध	प प	प ध	नि -	निसं -	- -	- नि	
गा ऽ ऽन	म न	खो ऽ	ए ऽ	सी ऽ	वे ऽ	लाऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ	
								नि	
	नि नि	नि ध	सा नि	-ध पध	नि ध	प -	- ध	नि ध	
	रा ह	भू ऽ	लेंऽ ऽऽ	ऐ सी	लीऽ ला	ऽ	ऽ ऽ	म न	
	प -	- ध	प ध	नि ध	प -	- -	- -	- -	
	चा ऽ	ऽ ऽ	हे ऽ	म न	चा ऽ	ऽ ऽ	हे ऽ	ऽ ऽ	
	प			ध					
	प सा	सा नि	ध प	पध प	म ग	म -ग	म ग	म प	
	ह द	य बाँ	ऽ ध	क हीं	चि र	ऋ ऽणी	जा ऊं	ब न	
	ध								
	प म	ग रे	सा सा	रे ग	म म	प -म	प प	सा सा	II II
	रि म	झि म	मु ख	रि त	ब द	री ऽऽ	दि न	आ ज	

***

बाग्ला

पागला हाओआर बादल-दिले
पागल आमार मन जेगे ओठे ॥
चेनाशोनार कोन् बाइरे येखाने पथ नाइ नाइ रे।
सेखाने अकारणे याय छूटे॥
घरेर मुखे आर कि रे कोनो दिन से यावे फिरे।
यावे ना, यावे ना देयाल यत सब गेल टूटे॥
वृष्टि-नेशा-भरा संध्याबेला कोन् बलरामेर आमि चेला,
आमार स्वप्न घिरे नाचे माताल जूटे यत माताल जूटे
या ना चाइवार ताइ आजि चाइ गो या ना पाइबार ताइ कोथा पाइ गो।
पाब ना, पाब ना, मरि असंभवेर पाये माथा कूटे॥

हिन्दी

पगली हवा बदराया दिन पागल मेरा मन जागे रे।
जहाँ सभी अंजाने राहों के हैं ना ठिकाने वहीं मन अकारण धाए रे॥
पीछे मुड़ कर अब क्यों रे जाएँ कभी वो अपने द्वारे
जाए ना जाए ना दिवारें जितनी हो गिरें-टूटें॥
बारिश नशा लाई सांझ की बेला किस बलराम का मैं हूं चेला ?
मेरे सपने घिर-नाचें मतवाले, सभी मतवाले॥
जिसकी चाह नहीं वही चाहूं मैं जो पायें नहीं कहां पाऊं मैं?
पाऊं न, पाऊं न, चाहे अनहोनी के द्वारे माथा पीटें॥

स्वरलिपि

II{	ध	-	न	-	ध	-	प	-	-	ध	-	पम
	प	ग	ली	ऽ	ह	ऽ	वा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ
	म	-	प	ध	पधप	-	मग	-	-	-	-	म
	ब	द	रा	ऽ	ऽयाऽ	ऽ	दिन	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
	म	-	प	-	प	-	प	-	ध	न	-	धप
	पा	ऽ	ग	ल	मे	ऽ	रा	ऽ	ऽ	म	ऽ	ऽन

	प	ध	न	-	न	-	धप	-	-	(ध	न	-)}	- - -
	जा	ऽ	गे	ऽ	ऽ	ऽ	रेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ ऽ ऽ
	[ध	रे	रें	-	रें	सं]							
{	ध	सं	सं	-	सं	-	सं	-	-	सं	-	-	
	ज	हाँ	ऽ	ऽ	स	ऽ	भी	ऽ	ऽ	अं	ऽ	ऽ	
	सं	न	रें	सं	-	-	-	-	-	रें	-	संन	
	जा	ऽ	ऽ	ने	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	
	न	-	न	सं	सं	-	स	सं	-	सं	-	न	
	रा	ऽ	हों	ऽ	के	ऽ	हैं	ऽ	ऽ	न	ऽ	ठि	
	ध	-	संनि	धप	-	-	-	-	-	-	(ध	-)}	- -
	का	ऽ	ऽऽ	नेऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ ऽ
	Y	-	Z	-	Y	-	[	-	Y	-	Y Z	-	
	d	@	h	@	_	@	A	@	H	@	a	@	
	[	-	[	Y	-	[	_	-	Y	_	-	-	II
	ण	ऽ	ऽ	धा	ऽ	ऽए	जा	ऽ	ऽए	ऽरे	-	ऽ	
II{	सं	न	सं	मं	गं	-	रं	र	-	गं	-	रंस	
	पी	ऽ	छे	ऽ	मु	ड़	क	र	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	
	सं	-	रं	र	गं	रं	संन	-	-	-	-	-	
	अ	ब	ऽ	क्यों	ऽ	ऽ	रेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
	न	-	-	नी	-	सं	सं	-	-	-	रंसं	न	
	जा	ऽ	ए	ऽ	ऽ	क	भी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	

	न	-	सं	न	$^{\text{ध}}$न	-	धप	-	-(- -	-)}I ध	न	-I	
	अ	प	ने	ऽ	द्धा	ऽ	रेऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ	ऽ ऽ	ऽ	
	न	-	सं	-	सं	रें	न	सं	ध	न	प	-	
	जा	ऽ	ये	ऽ	ना	ऽ	जा	ऽ	ये	ऽ	ना	ऽ	
	म	-	म	प	प	-	प	-	ध	न	-	धप	
	दि	ऽ	वा	ऽ	रें	ऽ	जि	त	नी	हो	ऽ	ऽऽ	
	प	ध	न	-	न	-	धप	-	-	ध	न	-	
	गि	ऽ	रे	ऽ	ऽ	टू	टेंऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ		
	न	-	सं	-	सं	रे	न	सं	ध	न	प	ध	II
	जा	ऽ	ये	ऽ	ना	ऽ	जा	ऽ	ये	ऽ	रे	ऽ	
II {	ध	-	ध	सं	सं	-	सं	-	-	सं	सं	-	
	बा	ऽ	रि	श	न	ऽ	शा	ऽ	ऽ	ला	ए	ऽ	
	पसं	-	सं	-	सं	-	सं	-	-	सरे	-	संनि	
	सांऽ	ऽ	झ	की	बे	ऽ	ला	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽऽ	
	न	रें	रें	-	रें	सं	सं	-	-	रेसं	न	-	
	कि	स	ब	ऽ	ल	ऽ	रा	ऽ	म	काऽ	ऽ	ऽ	
	न	-	सं	न	धन	-	धप	- -	(-	- -)}I	प प	-I	
	मैं	ऽ	हूँ	ऽ	चे	ऽ	लाऽ	ऽ ऽ	ऽ	ऽ ऽ	मे रे	ऽ	
	प	-	न	-	ध	-	न	-	-	ध	प	ध	
	स	प	ने	ऽ	धे	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ना	चें	ऽ	

9

	म	-	प	-	पधप	-	मग	-	-	ग	ग	म
	म	ऽ	त	वा	ऽऽऽ	ऽ	लेऽ	ऽ	ऽ	स	भी	ऽ
	म	-	प	-	प	-	प	- -	(पप	-)}I	पसं	नI
	म	ऽ	त	ऽ	वा	ऽ	ले	ऽ ऽ	मेरे	ऽ	जि.स	की
{	सं	न	सां	मं	ग	ग	ॅग	-	-	रे	रें	गं
	चा	ऽ	ह	ऽ	न	ऽ	हों	ऽ	ऽ	व	ही	ऽ
{	सा	-	ग	रे	-	-	-	-	-	-	रें	-
	चा	ऽ	हूँ	मैं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	जो	ऽ
	सं	-	रें	-	रें	-	रें	-	-	ग	रें	-
	पा	ऽ	ये	ऽ	ऽ	न	ही	ऽ	ऽ	क	हां	ऽ
	सं	-	गरें	संनी	-	-	(-	-	-	-	सं	न)}
	पा	ऽ	ऊऽ	मैंऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	जो
	न	-	न	सं	सं	-	सं	-	सं	-	सं	रें
	पा	ऽ	ऊं	ऽ	न	ऽ	पा	ऽ	ऊं	ऽ	ना	ऽ
	निसं	सं	-	न	न	-	न	-	न	सं	सं	-
	ऽऽ	चा	ऽ	है	ऽ	ऽ	अ	न	हो	ऽ	नी	ऽ
											ध	
	सं	-	सं	-	सं	नी	ध	सं	सं	न	न	-
	के	ऽ	ऽ	द्धा	रे	ऽ	मा	ऽ	था	ऽ	पी	ऽ
	धप	-	-	ध	न	-	न	-	सं	-	सं	रें
	टें	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	पा	ऽ	ऊँ	ऽ	ना	ऽ
	न	सं	धा	न	प	ध	II II					
	पा	ऽ	ऊँ	ऽ	रे	ऽ						

***

बांग्ला	हिन्दी
तिमिर अवगुंठने वदन तव ढाकि,	घूंघट ओढ़े रैन की मुखड़ा यों छिपाए
के तुमि मम अंगने दाँड़ाले एकाकी ॥	कौन हो कौन तुम-मेरे-अंगना, खड़ी हो अकेली ॥
आजि सघन शर्वरी, मेघमगन तारा,	आज सघन रात रे, मेघमगन तारे-
नदीर जले झर्झरि झरिछे जलधारा,	नदिया नीर झर-झर -झरे झरे झरे जलधारा।
तमालवन मर्मरि पवन चले हाँकि ॥	तमाल वन मर्मरित आहो-ओरे ! पवन चले सनसन ॥
ये कथा मम अंतरे आनिछ तुमि टानि,	जो बातें मन में मरे, तुम हो बुला लाती-
जानि ना कोन् मन्तरे ताहारे दिब वाणी।	न जानूँ किस मंत्र से उन्हें मैं दूं वाणी।
रयेछि बाँधा बंधने, छिँड़िब, याब वाटे	हूं मैं बंधा बंधन-बंधन में तोड़ू उसे राह चलते मैं-
येन ए वृथा क्रन्दने ए निशि नाहि काटे।	क्यों आँसू बहे- बहे ये निशा भी न बीते।
कठिन बाधा-लंघने दिब ना आमि फाँकि॥	लांघू कठिन बाधा मैं- अपने को न ठगूं रे ॥

स्वरलिपि

[गं रं सं न ध पम ग]

II	सं	(सं)न	ध	प	म	ग	मग	म	नध	-	-	ध	-	-	-	-	
	घूं	घ	ट	ओ	ढ़	रै	ऽन	ऽ	की	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
									न				न				
	ध	न	सं	-	सं	सं	सं	न	सं	-	ध	न	प	-	-	-	
	मु	ख	ड़ा	ऽ	यों	ऽ	छु	पा	ये	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
		सं								सं							
	पस	ध	प	-	-	-	-	-	पसं	ध	प	म	-	-	-	-	
	कौ	न	हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	कौऽ	न	तु	म	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
		स						म	ग								
	मसं	न	ध	प	म	म	-	ग	प	-	-	-	-	-	-	-	
	कौऽ	न	तु	म	मे	रे	अं	ग	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
									ग								
	सं	सं	म	-	-	-	म	ग	प	-	-	-	-	-	-	गं	I [ ] I
	ख	ड़ी	हो	ऽ	ऽ	ऽ	अ	के	ली	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
								सं	ध			सं	ध				
II	प	ध	प	सं	सं	सं	नसं	ध	सं	-	-	ध	सं	-	-	-	
	आ	ज	स	घ	न	रा	ऽऽ	त	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	

		सं					रं		न				सं			
	सं	नसं	ध	न	सं	रं	सं	न	सं	-	-	नसं	ध	-	-	न
	में	ऽऽ	ध	म	ग	न	ता	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
				गं	रें				ध							
	सं	गं	गं	रं	सं	सं	नसं	ध	सं	-	-	ध	न	-	मं	पमं
	न	दि	या	नी	ऽ	र	झ	र	झर	ऽ	ऽ	झ	रे	ऽ	ऽ	झऽ
	ध															
	प	-	-	म	म	म	म	-	म	म	म	ग	गप	-	-	-
	रे	ऽ	ऽ	ऽ	झ	ऽ	रे	ऽ	ज	ल	धा	ऽ	राऽ	ऽ	ऽ	ऽ
	स	सम	म	म	म	म	-	म	म	-	-	म	म	-	-	मग
	त	माऽ	ल	व	न	म	ऽ	र्म	रित्	ऽ	ऽ	ओ	हो	ऽ	ऽ	ओऽ
	गप	-	-	-	-	-	-	-	ध	न	सं	रं	गं	-	गं	रं
	रीऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प	व	न	च	ले	ऽ	सन	ऽ
					रं				सं							
	'गं	-	-	रं	सं	-	-	-	पसं	ध	प	-	-	-	-	-
	सन्	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	कौन	ऽ	हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
		सं								सं						म
	पसं	ध	प	म	-	-	-	-	मसं	न	ध	प	म	म	-	ग
	कौन	ऽ	तु	म्	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	कौऽ	न	तु	म्	मे	रे	अं	ग
	ग															
	प	-	-	-	-	-	-	-	सं	सं	म	-	-	-	म	ग
	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ख	ड़ी	हो	ऽ	ऽ	ऽ	अ	के
		ग														
	प	-	-	-	-	-	-	ग	I [ ] I							
	ली	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ									
	ध		न		प											
II{	न	न	ध	प	मं	ग	मंग	मं	नध	-	-	-	-	-	-	-
	जो	बा	तें	म	न	में	मेंऽ	ऽ	रेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

							स	न		सं		ध				
ध	न	सं	-	सं	सं	सं	न	सं	नसं	ध	न	प	-	-	-	
तु	म	हो	ऽ	बु	ला	ला	ऽ	ती	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
		सं					ध	प							प	
पसं	सं	न	ध	प	प	मध	प	म	-	-	-	-	-	म	ग	
नऽ	जा	नूं	कि	स	मं	न	ऽ	से	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	उ	न्हें	
ग						प					स					
प	-	-	-	-	-	म	प	ध	न	सं	न	धप	-	-	-	}
मैं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ढूं	ऽ	वा	ऽ	ऽ	ऽ	णी	ऽ	ऽ	ऽ	
		ध					सं	ध			स					
प	ध	प	पसं	सं	सं	नसं	ध	सं	सं	नसं	ध	सं	-	-	-	
हूं	ऽ	मैं	बऽ	धा	बं	ऽध	न	ऽ	ऽ	बं	धन	में	ऽ	ऽ	ऽ	
				ग				न								
संगं	गं	गं	-	रं	सं	सं	न	सं	नसं	-	न	ध	-	-	न	
तो	ढूँ	उ	से	रा	ह	च	ल	ते	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मैं	ऽ	
			ग				म	ध			सं					
सं	गं	गं	रं	सं	सं	नसं	ध	सं	सं	नसं	ध	धसं	-	-	-	
क्यों	ऽ	ऽ	आं	सू	ऽ	ऽऽ	ब	हे	ऽ	ऽऽ	ब	हेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
	ध	न														
ध	न	ध	-	प	प	म	ग	गप	-	-	-	-	-	-	-	
यह	नि	शा	ऽ	मी	न	बी	ऽ	तेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
गं	गं	गं	गं	गं	गं	-	गं	गंमं	-	रं	-	सं	-	नध	न	
ला	ऽ	घूं	क	ठि	न	बा	ऽ	धा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मैंऽ	ऽ	
				गं								ध				
सं	संगं	गं	-	रं	सं	सं	न	नसं	-	-	ध	प	-	-	-	
अ	पऽ	ने	ऽ	को	न	ठं	गूं	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
	सं								सं							
पसं	ध	प	-	-	-	-	-	पसं	ध	प	म	-	-	-	-	
कौऽ	न	हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	कौऽ	न	तु	म	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	

		सं						गं								
मसं	न	ध	प	म	म	-	ग	प	-	-	-	-	-	-	-	
कौ	न	तु	म	मे	रे	अं	ग	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
स	स	म	-	-	-	म	गं	गप	-	-	-	-	-	-	गं	II [ ] II
ख	ड़ी	हो	ऽ	ऽ	ऽ	अ	के	ऽली	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	

* * *

बांग्ला

धरणीर गगनेर मिलनेर छंदे,
बादलवातास माते मालतीर गंधे ॥
उत्सव-सभा माझे श्रावणेर वीणा बाजे,
शिहरे श्यामल माटि प्राणेर आनंदे ॥
दुइ कूल आकुलिया अधीर विभंगे,
नाचन उठिल जेगे नदीर तरंगे।
काँपिछे बनेर हिया वरषणे मुखरिया,
बिजलि झलिया ओठे नवघनमंद्रे ॥

हिन्दी

धरणी और गगन के मिलन के तालों ताल, तालों ताल
बदली हवा मती, मालती लता जो महकी।
उत्सव-सभा में सावन की वीणा झनकारे,
सिहरे हरित भू प्राण-उमंग में।
बदली हवा माती, मालती लता जो महकी!
दोनों कूल अकुलाए, अधीर हो बल खाए,
नर्तन जागे-जागे, नदिया तरंग में, तरंग में।
कंपित वनहिय वरषन में मुखरित हो,
बिजली-झलके देखो नवघन-ध्वनि में, ध्वनि में।
बदरी हवा माती, मालती लता जो महकी ॥

(कहरवा ताल)

स्वरलिपि

		सां						रे						प	
II सां	सां	नि	ध	प	म	ग	रे	नि़	सा	रे	ग	म	-प	म	-
ध	र	णी	और	ग	ग	न	के	मि	ल	न	के	ता	ऽलो	ता	ल
							प					नि			
ग	-प	मं	मग	रे	प	म	प	प	-सा	नि	सानि	ध	-निध	प	-रे
ता	ऽलों	ता	ऽल	ब	द	री	ह	वा	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	मा	ऽऽऽ	ती	ऽऽ
रें	ग	म	प	पध	-प	म	-ग	रेग	-रे	रेप	- ॥	II			
मा	ल	ती	ल	ताऽ	ऽऽ	जो	ऽऽ	मऽ	हऽ	कीऽ	ऽ				
								नि							
II प	-	निध	नि	निसां	सां	सां	सां	सां	-ध	-	-ध	नि	-	-	सां
उ	त्	सऽ	व	सऽ	भा	में	ऽऽ	सा	ऽऽ	ऽ	वन	की	ऽ	ऽ	ऽ
								ध							
ध	नि	सां	निध	ध	-नि	-सां	निध	प	-	-	-	सा	नि	ध	प
वी	ऽऽ	णा	ऽऽ	झ	ऽन्	ऽका	ऽऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	सि	ह	रे	ह
म	म	म	म	साम	म	म	म	म	-म	म	म	म	म	म	गं
रि	त	भू	ऽ	प्राऽ	ण	के	उ	मं	गमें	उ	मं	ग	में	ऽ	ऽ
गं	गं	रें	सां	नि	ध	प	म	म	म	म	म	म	-	म	म
सि	ह	रे	ह	रि	त	भू	ऽ	प्रा	ण	के	उ	मं	ग	में	उ
मग	-प	प	मं	प	मं	प	-मं	पसां	-	-नि	सांनि	धसां	निध	प	-
मऽ	ऽग	में	ब	द	ली	ह	ऽऽ	वाऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	माऽ	ऽऽ	ती	ऽ
रे	ग	म	प	प	-प	म	-ग	रेग	-रे	रेप	-	II			
मा	ल	ती	ल	ता	ऽऽ	जो	ऽऽ	मऽ	ऽह	की	ऽ				

II	प	-	प	-	प	प	मं	प	ध	नि	सां	रे	सां	नि	ध-	न्-	
	दो	नों	क्	ल	अ	कु	ला	ए	अ	धी	र	हो	ब	ल	खाऽ	एऽ	
	सां	गं	रें	सां	नि	ध	प	प	म	म	म	म	ग	-प	म	म	
	न	र्त	न	जा	ऽ	गे	जा	गे	न	दि	या	त	रं	ऽग	में	त	
	ग	-प	म	-	-	-	-	-	{प	प	निध	नि	सां	सां	सां	सां	
	रं	ऽग	में	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	कं	ऽ	पिऽ	त	व	न	हि	य	
	(सां)नि	ध	नि	-	सां	-	-	नि	ध	नि	सां	-नि	धनि	-	प	-	
	व	र	ष	ण	में	ऽ	ऽ	ऽ	मु	ख	रि	ऽत	होऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
	सां	नि	ध	प	म	म	म	ग	म	म	म	म	म	-	म	-	
	बि	ज	ली	झ	ल	के	दे	खो	न	व	घ	न	ध्व	नि	में	ऽ	
	म	-	प	-गं	गं	गं	रें	सां	नि	ध	प	प	म	म	म	म	
	ध्व	नि	में	ऽऽ	बि	ज	ली	झ	ल	क	दे	खा	न	व	घ	न	
	म	-	म	-	ग	-प	प	(मं)प	प	मं	प	मं	पसा	-	नि	सानि	
	ध्व	नि	में	ऽ	ध्वनि	नि	में	ब	द	ली	ह	ऽऽ	वा	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	
	ध	निध	प	-	रे	ग	म	प	ध	प	म	-ग	रेग	-रे	रेप	-	II II
	मा	ऽऽ	ती	ऽ	मा	ल	ती	ल	ता	ऽ	जो	ऽऽ	मऽ	ऽह	कीऽ	ऽ	

***

बांग्ला	हिन्दी
आजि झड़ेर राते तोमार अभिसार	आज आंधी की रात, तोर ये अभिसार।
पराणसखा बंधु हे आमार ॥	हे प्राण सखा, मेरे बंधुवर !!
आकाश कांदे हताश सम, नाइ ये घुम नयने मम	आकाश का ये हताश रूदन,
दुआर खुलि हे प्रियतम, चाइ ये बारे बार ॥	नींद हारे, मेरे ये दो-नयन, खोल द्वार खोल प्रियतम
बाहिरे किछु देखिते नाहि पाइ	तुझे ढूंडे नैन बार-बार
तोमार पथ कोथाय भावि ताइ।	बाहर कुछ दिखे नहीं , तेरा-पथ कहां सोच- कें डरूं
सुदूर कोन् नदीर पारे गहन कोन् बनेर धारे	सुदूर किस नदी के-पार, गहन किसी बन के किनारे
गभीर कोन् अंधकारे हतेछ तुमि पार ॥	सघन-घन-अंधेरे में, होते होंगे साथी पार ॥

स्वरलिपि

(झंपक ताल)

स सII	र म	a	न	धप मप	म ग -	- -	
आ ज	आं धी की	रा त	ते राऽ ऽ	अऽ भिऽ	सा ऽ ऽ	ऽ र ॥	
	र रा म ग	र स	र ग र	स न	स स स	- -	II
	प्रा ऽ ण	स खा	हे मे रे	बं ऽ	धू व र	ऽ ऽ	
II{	प प न म	प ध	न सं -	रंरं संन	सं सं -	- -	
	आ क श	कां य	ह ता ऽ	ऽऽ ऽश	रो द न	ऽ ऽ	
	प ग गं	रं संन	न सं न	नंसं रंसं सं	न - धप	- -	}
	नी ऽ द	हा रेऽ	मे रे ऽ	दो ऽऽ न	य ऽ नऽ	ऽ ऽ	
	प धन रं	सं सं	धसं सं न	न ध	प म -	- -	
	खो ऽऽ ल	द्वा र	हेऽ प्रिय त	म में	रे ऽ ऽ	ऽ ऽ	
	म न न	ध प	मग - -	- -	र म ग	र स	
	दू डें ऽ	नै न	बाऽ ऽ र	बा र	प्रा ऽ ण	स खा	

	र ग र	स़ ऩ	स स स	- -	II	
	हे मे रे	बं ऽ	धु व र	ऽ ऽ		
II {	स स स	स स	स स स	ऩ स	रे रे -	- -
	बा हि र	कु छ	दे ऽ ख	नं ही	पा ऊं ऽ	ऽ ऽ
			प प			
	र र ग	म प	ध धप -	मग रग	म - -	- - }
	ते रा ऽ	प थ	क हाँऽ ऽ	सो च	के ऽ ड	रूं ऽ
	प					
{	प न म	प ध	न सं -	रं संन	सं - -	- -
	दू ऽ र	कि से	न दी ऽ	या ऽऽ	पा ऽ ऽ	र ऽ
	प					
	गं ग ग	रं सं	न सं न	नसं रंसं	न ध प	- - }
	ग ह न	कि सी	व न के	किऽ ना	रे ऽ ऽ	ऽ ऽ
	प धन रं	सं -=	संन सं न	न ध	प म -	- -
	स घ न	घ न	अं धे रे	में ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ
		ध				
	प पन न	ध प	मग - म	- -	र ग -	र स
	हो ते ऽ	हो ऽ	सा थी -	पा रहे	प्रा ऽ ण	स खा
	र ग र	स ऩ	स स स	- -	II II	
	हे में रे	बं ऽ	धु व र	ऽ ऽ		

***

बांग्ला

मोर भावनारे की हाओआय मातालो,
दोले मन दोले अकारण हरषे।
हृदयगगने सजल घन नवीन मेघे।
रसेर धारा वरषे॥
ताहारे देखि ना ये देखि ना,
शुधु मने मने क्षणे क्षणे ओइ शोना जाय
बाजे अलखित तारि चरणे
रूनूरूनू रूनूरूनू नूपुरध्वनि॥
गोपन स्वपने छाइल, अपरश आँचलेर नव नीलिमा।
उड़े जाय बादलेर एइ वातासे तार छायामय एलो केश आकाशे।
से ये मन मोर दिल आकुलि जल-भेजा केतकीर दूर सुवासे॥

हिन्दी

मेरी भावना को, क्यों छेड़े हवाओं
झूमे जिया झूमे बिन कारण खुशी से॥
हिय गगन में सजल-सघन मेघ नवीन
रस की धारा बरसांये
हो जाते वे ओझल नयनों से
बस हर पल मन मेरा आहट सुने
बजे उन्ही अलख पगों के पायल-
रुन-झुन-घुंघरुन, ध्वनि बरसे
चुपके सपने में छा जाये
अनुछुई-अंचला की नव नीलिमा
उड़ चले बदराई -हवा-में
उनके छाया-घने खुले-केश आकाश में
उन्होंने मेरा मन, अकुलायां
भीगी-भीगी केतकी भी दूर महके॥

स्वरलिपि

स र II	म रे म म	- प म प	- ध म प
मे री	भा व ना को	क्यो ह वा ऽ	छे ड़े ऽ ऽ
सं			
ध सं - न	ध नि प ध	म ग रे ग	स स र ग
ऽ ऽ ऽ ऽ	झू मे जी या	झू में विन् का	र ण खु शी
॥	म		
म-(स र)}- -II	र म म ग	रे रेप प -	म प ध नध
सेऽ"मे री" ऽ ऽ	हि य ग ऽ	ग नऽ में ऽ	स ज ल सऽ
प - म प	ध नध प -	म ग र -	म ग र ग
धन्ऽ मे ऽ	ध नऽ वी न	र स की ऽ	ध रा बर सा
स - स र II			
ये ऽ "मे री"			
			सं
II{	सं न ध -	म प ध सं	सं न ध रं
	हो जा ते वे	ओ ऽ झ ल	न य नों ऽ
सं - रं गं	रं गं मं गं	रं गं सं रं	न सं ध न
से ऽ ब स	ह र प ल	म न मे री	आ ह ट सु
			न म
प - - -}	{र - प -	म प ध न	-ध प म ग
नी ऽ ऽ ऽ	ब जे उ न्ही	अ ल ख प	गों के पा ऽ
र - - -}	स र म प	ध सं ध प	म ग र ग
य ल ऽ ऽ	रु न झु न	धुं ध रू न	ध्न नि ब र
स - स र	II		
के ऽ "में री"			

II{	म ग र -	- - म ग	र - ग म
	चु प के ऽ	ऽ ऽ स पनें	मे ऽ छा जा
प - - -	प ध र ग	म ध प ध	म ग र ग
ये ऽ ऽ ऽ	अन छु ई आं	च ल की ऽ	न व नि ली
स - - -}	{सं न ध -	म प ध सं	सं न ध रं
मा ऽ ऽ ऽ	ब द री ऽ	ब द री ऽ	सी ऽ ह वा
सं-- रं गं	रं गं मं गं	रे गं मं -रं	न सं ध न
में ऽ उन् के	छा या घ ने	खु ले के श	आ ऽ का श
प - - -}	{र - प -	म प ध न	ध प म ग
मे ऽ ऽ ऽ	उन हों नें ही	मे रा म न	अ कु ला या
र - - -}	रं - रं सं	न ध प ध	म ग र ग
ऽ ऽ ऽ ऽ	भी गी भी गी	के त की भी	दू र म ह
स - स र	II II		
के ऽ "मे री"			

***

बाग्ला

झरे झरो झरो भादरबादर विरहकातर शर्वरी।
फिरिछे ए कोन् असीम रोदन, कानन कानन मर्मरि ।।
आमार प्राणेर रागीनी आजि ए गगने गगने उठिछे बाजिये।
मोर हृदय एकि रे व्यापिल तिमिरे समीरे समीरे संचरि ।।

हिन्दी

झरे-झर-झर भादों- के बादल, विरह व्याकुल शबरी
झरे-झरे, झर-झर-झर-
छाए कैसा असीम रोदन हो, कानन- कानन गूंजे रे।
विरह व्याकुल शबरी झरे-झरे झर-झर-झर ।।
मेरे प्राण की रागिनी आज ये, घन गगन में उठती बज रे,
मेरे हृदय में क्यों ऐसे घेरे तमी-रे।
समीर से जो संचरे विरह व्याकुल शबरी
झरे झरे, झर-झर-झर ।।

स्वरलिपि

II स - सन र	र र र र	र स र रप	मप म ग गम (म)
झ ऽ रेऽ ऽ	झ र झ र	भा ऽ द ऽऽ	बाऽ ऽ दऽ रऽ
म प प म	पम न -ध पम (नि)	प - - पसं	न धन पध मप (सं)
वि र ह ऽ	व्या ऽ कु लऽ	श ऽ ऽ व	री झऽ रेऽ झऽ
म ग र स	सर न स स	{मप पन प	न सं सं -
रे ऽ झ र	झऽ रं झ र	छ ऽ येऽ ऽ	कै ऽ सा ऽ
सं सं - सं	सं न सं ध	न ध न ध	धन धन प - }
अ सी ऽ म	रू ऽ द न	हो ऽ ऽ ऽ	ऽऽ ऽऽ ऽ -

म न॒ न ^म ध	धन॒ धन॒ ^पप पम	प - - पसं	ग - - म
का ऽ न न	काऽ ऽऽ न नऽ	गूं ऽ ऽ जेऽ	री ऽ ऽ ऽ
म प प म	पम न॒ ^न-ध पम	^मप - - पसं	^सन॒ धन॒ पध मप
वि र ह ऽ	व्या ऽ कु ल	श ऽ ऽ वऽ	री झऽ रेऽ झऽ
म ग॒ र स	सर न॒ स स	[ध] {स न॒ ध न॒	ध संन॒ ध प
रे ऽ झ र	झऽ र झ र	मे ऽ रे ऽ	प्रा ऽऽ ण की
पध ^पम प ध	^धम प म ग॒	ग॒ ग ग॒ म	र ^मरस र ग॒
राऽ गि नी ऽ	आ ज ये ऽ	घ न ग ऽ	ग नऽ में ऽ
^गर सन स -	स संन॒ नध न॒)}	I- - - -	- - प -
उ ठऽ ती ऽ	ब जऽ रं ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ मे रे
म -प प न	न - न सं	सं - - -	- - - -
हिर द य मे	किउंऽ यै ऽ	से ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
पसं - सं सं	सं सन॒ सं ध	न॒ ध न॒ ध	न॒ धन॒ ^नप॒ -
घेऽ ऽ रे ऽ	त मिऽ रे ऽ	हो ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽऽ ऽ ऽ
म नध न॒ ध	धन॒ ^नध प ध	म प - पसं	^मग॒ - - म
स मीऽ र न	मेऽ ऽ जो ऽऽ	सं ऽ ऽ चऽ	रेऽ ऽ ऽ ऽ
म प प म	पम न॒ ^न-ध पम	प - - पसं	न॒ ध पध मप
वि र ह ऽ	व्या ऽ कु लऽ	श ऽ ऽ वऽ	री झ रेऽ झऽ
म ग॒ र स	सर न॒ स स	II II	
रे ऽ झ र	झऽ र झ र		

***

बांग्ला

शाङ्नगगने घोर घनघटा, निशीथयामिनी रे।
कुंजपथे, सखी, कैसे जाओव, अबला कामिनी रे।
उन्मद पवने यमुना तर्जित, घन घन गर्जित मेह।
दमकत विद्युत पथ तरु लुंठित, थरहर कंपित देह
घनघन रिम्झिम् रिम्झिम् रिम्झिम् बरखत नीरदपुंज।
शाल-पियाले ताल-तमाले निविड़तिमिरमय कुंज।
कह रे सजनी, ए दुरुयोगे कुंजे निरदय कान।
दारूण बाँशी काह बजायत सकरूण राधा नाम।
मोतिम हारे वेश बना दे, सींथि लगा दे भाले।
उरहि विलुंठित लोल चिकुर मम बांधह चंपकमाले।
गहन रयनमें न जाओ, बाला, नओलकिशोरक पाश।
गरजे घन घन, बहु डर पाओब कहे भानु तव दास॥

हिन्दी

सावन नभ में घोर घन-घटा निशीथ यामिनीरे।
कुंज पथे, सखी कैसे जावे अबला कामिनी रे
उन्माद पवने यमुना तर्जित, घन-घन गर्जित मेहा
दमकत विद्युत पथतरु लुंठित थरथरकंपितदेहा
घन-घन रिमझिम,रिमझिम,रिमझिम बरसत नीरद पुंज
शाल-पियाल,ताल तमाल निविड़ तिमिर-मय कुंज
कहरे सजनी ये दुर्योगे कुंज में निर्दय कान्हा
दारुण बंसी काहे बजावत सकरुण राधा-नामा
मोतिन हारे बेस बना दे, टिकुली लगा दे भाले
उरहिं विलुंठित लोल-चिकुर मोरे बांध रे चंपक-माल
गहन रैन में न जाओ बाला-नवलकिशोर के पास।
गरजे घन-घन बहु डर पावत कहे भानु तव दासा॥

(भानुसिंह की पदावली/स्वरवितान)

स्वरलिपि

	प प	प	र ग	॥
II{	र प म प	ग र मग र	स रग -र स	र ऩ स -
	सा ऽ व न	न भ मेंऽ ऽ	धो ऽऽ रऽ घ	न घ टा ऽ
			न	
	(म म प प	प म मन न	ग - - -	र स र -)}
	नि शी ऽ थ	या ऽ मिऽ नी	रे ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
			प न	न
	म प प प	प - प प	न - ध न	ध न ध प
	कुं ऽ ज प	थे ऽ स खी	के ऽ से ऽ	जाऽ वे ऽ
	म म प म	प - प पसं	नसं नसं न ध	प म गर स II
	अ व ला ऽ	का ऽ मि नीऽ	रेऽ ऽऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽऽ ऽ
				र
II	म प प प	प प प न	न न न सं	सं - सं स
	उ न् मा द	प व ने ऽ	य मु ना ऽ	त ऽ र्जि त
			ध	ध
	म म प प	प - प ध	न - धप ध	प - - -
	घ न घ न	ग ऽ र्जि त	में ऽ ऽऽ ऽ	हा ऽ ऽ ऽ
	म प प प	प - प प	म प प पन	न सं सं सं
	द म क त	बि जु री ऽ	प थ त रूऽ	लूं ऽ ठि त
	रं		ध	प
	न नरं सं न	घ - प पध	म - पधप मप	ग - - -
	थ रऽ थ र	कं ऽ पि तऽ	दे ऽ ऽऽऽ ऽऽ	हा ऽ ऽ ऽ
	ग ग ग ग	ग - ग -	म - म -	पम ग म -
	घ न घ न	रि म् झि म्	रि म् झि म्	रिम ऽ झि म्

			ध
ग म प प	प - प पध	"म - पधप मप	ग - रोस र
ब र स त	नी ऽ र ढऽ	पुं ऽ ऽऽऽ ऽऽ	ज ऽ ऽऽ ऽ
	ग	प	
ग - ग ग	म ग म -	गम प म गर	मग र स -
शा ऽ ल पि	या ऽ ल ऽ	ताऽ ऽ ल तऽ	माऽ ले ऽ ऽ
प	प ग		
र प म प	म मग -र स	रस नि़ स -	स - - -
नि वि इ ति	मि रऽ म य	कुंऽ ऽ ज ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
			रं
म प प न	न न न -	पन - सं रं	न - सं -
क ह रे ऽ	स ज नी ऽ	येऽ दु र	यो ऽ गे ऽ
	सं		
सं रं संरं सं	न न धप ध	संन - धप ध	प - - -
कुं ऽ जऽ में	नि र ढऽ य	काऽ ऽ ऽऽ न्हा	ऽ ऽ ऽ ऽ
		न	न स
मप - प प	प - प म	प न ध न	न - ध प
ढाऽ ऽ रू ण	बं ऽ सी ऽ	का ऽ हे ब	जा ऽ व त
म	ध	प	
म म प पध	म - पध मप	ग - - -	र - स -
स क रू णऽ	रा ऽ थाऽ ऽऽ	ना ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ म् ऽ
सऩ - प़ नि़	ऩ स स -	सऩ - प़ ऩ	ऩ स स -
मोऽ ऽ ति न	हा ऽ रे ऽ	वेऽ ऽ श ब	नाऽ दे ऽ
		म	
सऩ - स रे	रे - र स	रस र ग -	- - - -
टिऽ कु ली ल	गा ऽ दे ऽ	भाऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ले ऽ
म म प प	प - प प	म प प पन	पन न प प
उ र हि वि	लूं ऽ ठि त	लो ऽ ल ऽनि	कुऽ र मो रि

प	- - म -	म		
म - प प	पसं - ग गम	ग - - म	र ग स -	
बाँ ऽ ध रे	चंऽ ऽ प कऽ	मा ऽ ऽ ऽ	ला ऽ ऽ ऽ	
		म	र	
म प पन न	न न न -	प न - सरं	न - सं -	
ग ह नऽ रे	ऽ न में ऽ	नऽ ज्ञा ऽ वोऽ	बा ऽ ला ऽ	
		सं		
सं नरं सं नध	न - धप ध	न - - ध	प - - -	
न वऽ ल किऽ	शो ऽ रऽ के	पा ऽ ऽ ऽ	सा ऽ ऽ ऽ	
	न - न -	- - र -	र	
पन न न -	ध न धप ध	ध रं सं रं	नं - ध प	
गऽ र जे ऽ	ध न धऽ न	ब हु त ड	रा ऽ व त	
प		म		
प म - प	- प पध धप	ग - - -	र - स -	II II
क हे ऽ भा	ऽ नु तो ऽ	दा ऽ ऽ ऽ	स ऽ ऽ ऽ	

***

बांग्ला (स्व.पु. 5)

नमो, नमो, नमो करूणाघन, नमो हे।
नयन स्निग्ध अमृतांजनपरशे,
जीवन पूर्ण सुधारसवरषे,
तव दर्शनधनसार्थक मन हे, अकृपणवर्षण करुणाघन हे।।

हिन्दी

नमो नमो नमो, करूणाघन नमो हे !
नयन स्निग्ध झरे अमृत अंजन, जीवन भर दे सुधा रस वरसन।
तव दरशन धन्य सार्थक मन रे, अकृपण बरसे करुणाघन हे।।
नमो, नमो हे, नमो हे!

स्वरलिपि

				प	
II	म प म म	प प म प	पसां निसां ध प	म प म -	
	न मो न मो	न मो क रु	णाऽ ऽऽ ध न	न मो हे ऽ	
	- - - ग	रे ग रे -	रे प प म	गरे ग रेसा -	
	ऽ ऽ ऽ ऽ	न मो हे ऽ	न मो हे ऽ	नऽ मो हेऽ ऽ	
	म प प नी	- नि नि रां	स - सं सं	संनि सं सं	
	न य न स्नि	ऽ ध झ रे	अ ऽ मृ त	अ ऽ ज न	
	सां ध ध ध	धसां - सां सां	सां -निंरें सां सां	निसां ध प -	
	जी ऽ व न	भऽ र दे सु	धा ऽऽऽ र स	वर ष न ऽ	
	पम ध प -	म म म ग	रे -प प प	प म प -	
	तौऽ द र श	न ध न्य सा	ऽऽ र्थ क म	न रे ऽ	
	ध नि सा नि	ध -नि ध प	रे ग म धप	म ग रेसा -	
	अ कृ प ण	ब ऽर से ऽ	क रु णा ऽऽ	ध न हेऽ ऽ	
		प		॥	
	सा रे रे -	रे प म -	गरे ग रेसा -	- - - -	II II
	न मो हे ऽ	न मो हे ऽ	नऽ मो हेऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	

***

बांग्ला

एसो शरतेर अमल महिमा, एसो हे धींरे।
चित्त विकाशिवे चरण घिरे ॥
विरहतरंगे अकूले से दोले
दिवायामिनी आकुल समींरे ॥

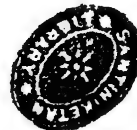
हिन्दी

सुस्वागत निर्मल शरत्-महिमा आओ हे ! धींरे ।
चित्त ये विकसे रे, चरण घेरे ॥
विरह तरंग में अकुलाए लहरे।
दिवस यामिनी व्याकुल समींरे ॥

	+	२	0	३
ठेका :	धाऽ धिऽ ।	धा-धध तिऽ ।	नाऽ ति ।	धा-धध धिऽ ॥

स्वरलिपि (राग गंधारी/जत ताल)

II	सा- रेम	गम पम	प -	प -सां	(सां)नि ध	- निध	(ध)प -	- ऽ	
	सुऽ स्व	ऽऽ ऽग	त ऽ	नि ऽऽ	मं ऽ	ऽ ऽऽ	ल ऽ	ऽ ऽ	
	म म	प म	मप धप	मप मग	- रेसा	रे ग	सा -	- -	
	श र	त् म	हिऽ ऽऽ	ऽऽ माऽ	ऽ ऽऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ	॥
	सा -	रे म	गम पम	प -	रे -	- ग	सा -	- -	
	आ ऽ	ओ ऽ	ऽऽ ऽऽ	हे ऽ	धी ऽ	ऽ ऽ	रे ऽ	ऽ ऽ	
	सा -	रे -म	गम प	- म	प -	पनि -प	-नि -सां	सां -	
	चि त्त	ये ऽऽ	ऽऽ ऽ	ऽ वि	क ऽ	सेऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ	रे ऽ	
	निसां रेगं	- -	रें -	गं सां	निसां रेंसां	निसां निध	(न)ध प	- -	II
	चऽ ऽऽ	ऽ र	ऽ ऽ	ऽ ण	घेऽ ऽऽ	ऽऽ रेऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ	



म प	निध -	- -	- नि	नि सां	नि सां	सां -	नि सां
वि र	हऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ त	र ऽ	ऽ ग	में ऽ	अ कु
निसां रेंगं	- -	रें गं	सां -	- निसां	रेंसां निसां	ध निध	प -
लाऽ ऽऽ	ऽ ऽ	ये ऽ	ऽ ऽ	ऽ लऽ	ऽऽ हऽ	रे ऽऽ	ऽ ऽ
प प	- मगरे	रे -	म -	रेमप -	- प म	प -	प -
दि वा	ऽ सऽऽ	या ऽ	ऽ ऽ	ऽऽऽ ऽ	मि ऽ	नी ऽ	व्या ऽ
पनि प	नि सां	सां (नि)सां	सां -	निसां रेंसां	निसां निध	(न)ध प	- - ॥ ॥
कुऽ ऽ	ऽ ऽ	ल ऽ	स ऽ	मीऽ ऽऽ	ऽऽ रेऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ

***

बांग्ला

देखो, देखो देखो शुकतारा आँखि मेलि चाय प्रभातेर किनाराय।
डाक दिएछेरे शिउलि फूलेरे आ य आ य आय॥
ओ जे कार लागि जाले दीप, कार ललाटे पराय टीप,
ओ जे कार आगमणि गाय आ य आ य आय॥
जागो जागो सखी,
काहार आशाय आकाश उठिल पुलकि।
मालतीर बने बने ओइ शोनो क्षणे क्षणे
कहिछे शिशिरबाय आ य आ य आय॥

हिन्दी

देखो, देखो, देखो शुकतारा नयन खोले, उषा के आंगन में।
शुकतारा नयन खोले हो!
बुलाए रे वो शेफालिका को, आ... आ... आ...!
वो क्योंकर दीप जलाए, किस भाल पे बिंदिया सजाए!
वो स्वागत ये किसका गाए, आ... आ... आ...!
जागो-जागो सखी री, कैसी आश में पुलक जागे आकाश में॥
मालती-लता वन-वन में, सुनो हो छन पल-पल में।
कहे जो ओस हवा से आ... आ... आ...॥

बांग्ला

आज धानेर खेते रौद्रछायाय लुकोचुरि खेला रे भाई, लुकोचुरि खेला
नील आकाशे के भासाले सादा मेघेर भेला रे भाई लुकोचुरि खेला ॥
आज भ्रमर भोले मधु खेते उड़े बेड़ाय आलोय मेते,
आज किसेर तरे नदीर चरे चखा-चखीर मेला ॥
ओरे, याब ना आज घरे रे भाई, याब ना आज घरे ।
ओरे, आकाश भेंगे बाहिरके आज नेब रे लुट करे ॥
येन जोवार-जले फेनार राशि बातासे आज छुटछे हासि,
आज बिना काजे बाजिये बांशि काटबे सकल बेला ॥

हिन्दी

आज धान खेत के धूप छांह में, लुकाछुपी का खेल रे भाई
नीले नभ में किसने डाला श्वेत मेघरी नैया,
रे भाई लुकाछुपी का खेल
आज,   मधुप भूले मधुपान मस्त ज्योति में भरे उड़ान, देखो,
आज,   क्यों कर नदी किनारे ये चकवा-चकई के मेले रे भाई
ओजी, आज न जाना घर लौट हो, जाना नहीं निज द्वारे
ओजी, नभ भेद कर लूट लेंगे हम, लूट लेंगे सब कुछ रे ॥
ज्यों,   ज्वार जल की फेनिल फुहारें छिटका दें हंसी हवा में
त्यों,   बिन कारण बजाते फिरें हम, बंशी सुबह और शाम
रे भाई लुखाछुपी का खेल ॥

बाग्ला

मोर वीणा ओठे कोन् सुरे बाजि कोन् नव चंचल छंदे
मम अंतर कंपित आजि निखिलेर हृदयस्पंदे ।।
आसे कोन तरूण अशांत, उड़े बस नांचल प्रांत।
आलोकेर नृत्ये बनांत, मुखरित अधीर आनंदे ।।
अबंर प्रांगण माझे निःस्वर मंजीरा गुंजे
अश्रुत सेइ ताले बाजे करतालि पल्लव पुंजे।
कार पदपरशन-आशा तृणे तृणे अर्पिल भाषा
समीरण बंधनहारा उन्मन् कोन वनगंधे ।।

हिन्दी

मेरी वीणा में ये कौन सी बजी धुन, चंचल छन्द है नूतन
मेरा अंतर कंपित आज है निखिल हृदय का स्पंदन ।।
आया चंचल तरूण ये कौन उड़े वसनांचल का वो छोर
किरणों के संग नाचें वन-कानन, मुखरित मुदित अधीर बन ।।
अम्बर-आंगन माझ निस्वर मंजीरा गूंजे।
आश्रुत तालों को सुन करताली पल्लव पुंज दें।
किस पग-परस की आशा, तृण-तृण को देवे भाषा
समीरण बंधन हारे, सुरभित वन में उन्मन ।।

***

बाग्ला

ग्राम छाड़ा ओइ रांगा माटिर पथ
आमार मन भुलाय रे।
ओरे कार पाने मन हाथ बाड़िये
लुटिये याय धुलाय रे॥
ओ ये आमाय घरेर बाहिर करे,
पाये, पाये, पाये धरे
ओ ये केड़े आमाय नियें याय रे
याय रे कोन चुलाय रे।
ओ ये कोन बाँके की धन देखाबे,
कोनखाने की दाय ठेकाबे
कोथाय गिये शेष मेले ये
भेबेइ ना कूलाय रे॥

हिन्दी

गाँव पार ये गेरू माटि बाट, ओहो हो, मेरा मन भरमाये।
ओजी किस ओरी जिया हाथ पसारे रे भुँई पे लोटे धूरी पे
मेरा मन भरमाये॥
वही तो मुझको घर से बाहर लाये रे, पाँव पाँव पाँव छूकर हो
अहा लाज से मरे
वो जो बरजोरी मुझे लेता जाये रे झोंक दे कैसी भाड़ में
मेरा मन भरमाये
वो जो, कहीं बाँक पे क्या धन दरसाये
कहाँ ले जाकर मुझे फंसा दे-रे
जा कर कहाँ अंत होये डगर जियरा सोच न पाये रे
मेरा मन भरमाये।

***

बांग्ला

नवकुंदधवलदल सुशीतला,
अति सुनिर्मला, सुख समुज्ज्वला,
शुभ सुवर्ण आसने अचंचला ॥
स्मित-उदयारूण-किरण-बिलासिनी,
पूर्ण सितांशुविभास बिकाशिनी,
नन्दनलक्ष्मीसुमंगला ॥

हिन्दी

नवकुंदधवलदल सुशीतला,
अति सुनिर्मला, सुख-समुज्ज्वला,
शुभ सुवर्ण-आसने अचंचला ॥
स्मित उदायरूण-किरण-विलासिनी,
पूर्ण सितांशुविभास विकासिनी
नंदनलक्ष्मीसुमंगला ॥

***

बांग्ला

आमार रात पोहालो शारद प्राते ।
बाँशि, तोमाय दिये याबो काहार हाते ॥
तोमार बुके बाजलो ध्वनि,
विदायगाथा आगमनी कतो ये-
फाल्गुने श्रावणे कत प्रभाते राते ॥
ये कथा रय प्राणेर भितर अगोचरे
गाने गाने नियेछिले चूरि करे ।
समय ये तार हल गत,
निशिशेषेर तारार मतो-
शेष करे दाओ शिउलि फुलेर मरण-साथे ॥

हिन्दी

मेरी, रात ढली रे, शरत् सवेरे ।
रात ढली रे , मेरी बंसी,
दे जाऊं मैं तुझे किन हाथों में
मेरी रात ढली रे ।।
तेरे हिय में गूंज-उठी जो ध्वनि
विदाई-स्वागत की कहानी बनी कितनी-
फागुन सावन में, कितने वो रैन-सबेरे
मेरी रात ढली रे ।।
जो बाते इस प्राण में थीं गोपन बनी
गीत-गा-गा, चुराया था चोरी-चोरी।
पल-पल वो अब बीत-चला
निशा ढलती, तारो जैसे, बीत चला
मिट जाने दो शेफाली सुमन मरण संग-
मेरी रात ढली रे ।।

स्वरलिपि

	[स		र]									॥
ध़ प़ ध़ ।।	ऩ	स	ग	ग	र	-	स	-	-	-	-	-
मे री ऽ	रा	ऽ	त	ढ	ली	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
(	सं	रं	रस	ऩ	-	सऩ	प़	-	ध़	ऩ	स	र) }
	श	र	ऽत	स	वे	ऽऽ	रे	ऽ	ऽ	मे	री	ऽ
	र	ग	-	-	-	स	स	र	-	-	-	-
	बं	सी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	बं	सी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
								म				
	म	म	-	गर	ग	-	र	ग	र	स-	र	रस
	दे	जा	ऽ	ऊँ ऽ	मैं	ऽ	तु	झे	ऽ	किन	हा	ऽऽ

	-	स	ऩ	ध़	प़	ध़	II						
	थों	में	ऽ	"मे	री	ऽ"							
II	स	स	-	स	स	रे	ग	-	ग	म	म	प	
	ते	रे	ऽ	हि	य	में	गृं	ऽ	ज	उ	ठी	ऽ	
	प												
	ग	मप	ध	मप	म	-	-	-	-	-	-	-	
	जो	ऽऽ	ऽ	ध्वऽ	नी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
		प									म		
	मप	म	पम	गर	ग	-	र	ग	-	गर	ग	र	
	विऽ	दा	ऽई	स्वाऽ	ग	त	की	क	ऽ	हाऽ	नी	ऽ	
	स	-	र	मग	रग	र	स	-	-	-	-	-	
	ब	नी	ऽ	कित	नीऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
	स	ग	ग	र	ग	-	र	ग	-	र	मग	-	
	फा	गु	न	सा	व	न	में	ऽ	वो	कि	तऽ	ने	
											म		
	ध़	ध़	-	ऩ	ऩ	स	स	-	र	गर	ग	र	I [ ] I
	रै	ऽ	न	स	बे	ऽ	रे	ऽ	ऽ	"मेऽ	री	ऽ"	
II{	ध	-	म	ध	ध	न	न	स	-	स	स	-	
	जो	ऽ	बा	तें	इ	स	प्रा	ऽ	ण	में	थीं	ऽ	
	स	-	र	र-	सग	-र	स	सा	-	-	-	-	
	गो	ऽ	ऽ	पन	ऽऽ	ऽ	ब	नी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
	र	र	र	र	र	-	र	स	ग	र	र	-	
	गी	ऽ	त	गा	गा	ऽ	चु	रा	ऽ	या	था	ऽ	

											ग
स-	न	-	स	ध़	ऩ	ऩ	-	स	सर	ग	-र
चु	रा	ऽ	या	था	ऽ	या	ऽ	री	ऽ	ऽ	चो
स	-	-	-	-	-}I	{स-	स	स	स	स	र
री	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	पल	प	ल	वो	अ	ब
ग	म	प	ग	-	ध	प	म	-	-	-	-
त	च	ला	च	ला	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
मप	म	पम	गर	ग	-	र	ग	-	र	ग	र
निऽ	शा	ऽऽ	ढल	ती	ऽ	ता	रों	ऽ	जै	से	ऽ
									ग		
स	र	स	न	स	-}	स	ग	ग	र	ग	-
बी	ऽ	त	च	ला	ऽ	मि	ट	जा	ने	दो	ऽ
				म							
र	-	ग	र	ग	-	ध	ध	-	न	-	स
शे	फा	ऽ	ली	सु	ऽ	म	न	ऽ	म	र	ण
				म							
स	-	र	गर	ग	र	II [ ] II					
सं	ऽ	ग	"मेऽ	री	ऽ"						

* * *

बाग्ला

हिमेर राते ओइ गगनेर दीपगुलिरे
हेमंतिका करल गोपन आँचल घि रे ।।
घरे घरे डाक पाठालो दीपालिकाय ज्वालाओ आलो-
ज्वालाओ आलो, आपन आलो,
साजाओ आलोय धरित्रीरे।
शून्य एखण फूलेर बागान, दोयेल कोकिल गाहे ना गान,
काश झरे याय नदीर तीरे।
याक अवसाद विषाद कालो, द्वीपालिकाय ज्वालाओ आलो
ज्वालाओ आलो आपन आलो, शुनाओ आलोर जयवाणी रे ।।
देवतारा आज आछे चेये जागो धरार छेले मेये,
आलोय जागाओ यामिनी रे।
एल आंधार दिन फुरालो, दीपालिकाय ज्वालाओ आलो,
ज्वालाओ आलो, आपन आलो जय करो एइ तामसीरे ॥

हिन्दी

हिम-निशा की दूर गगन के दीपक दल।
हेमंतिका लुकाई तूने आँचल घेरी, धीरि-धीरि,
घरों-घर में आए संदेशा, दीपमाला ये सजा डालो
जलाओ दीप अपने दीप, सजाओ दीपों से ये धरातल ।।
सूने पड़े अब फलों के बाग दोयल कोयल न गाएं- राग
काश झरे रे, नदी किंनारे
जाये थकन, वेदना-मलिन, दीप माला ये सजा डालो,
जलाओ दीप, अपने दीप, सुनाओ दीपों की-
-जयवाणी चल ।।
देवता-सकल नयन खोलें-जागों धरा के लाली-लाल,
आलोक-जगाओ, यामिनी में, आलोक -जगाओ-
घिरे निशा, दिवस ढले, दीप-माला ये सजा डालो,
जलाओ दीप, अपने दीप, जय तेरा हो तम-हो विफल

II	सा	रे	ग	ग	ग	-	ग	-	ग	ग-	ग	-म	
	हि	म	नि	शा	की	ऽ	दू	र	ग	गन	के	ऽऽ	
						॥							
	रेग	-रे	ग	ग	ग	-प	पग	पम	-	ग	रेसा	-नि़	
	ढीऽ	ऽ	प	क	द	ल	हे	मऽ	ऽ	ति	काऽ	ऽऽ	
	सा	-	ग	म	प	-	सा	सग	-	म	प	-	
	लु	का	ई	तू	ने	ऽ	आँ	चऽ	ल	घे	ऽ	री	
	प												
	ग	पम	-	ग	रेसा	नि़	II						
	धी	ऽऽ	रे	धी	रेऽ	ऽ							
				ग									
II	सां	सां	गं	रें	रें	-	सां	-	सां	सां	सां	-	
	घ	रों	ऽ	घर	ये	ऽ	आ	ये	सं	दे	शा	ऽ	
	सा												
	नि	नि	रें	सां	सां	-	संनि	ध	सां	नि	धप	-	
	ढी	प	मा	ला	ये	ऽ	स	जा	ऽ	डा	लोऽ	ऽ	
				सां						सां			
	पसा	सा	-	नि	धप	-	पसा	सां	-	नि	धप	-	
	जऽ	ला	ओ	ढी	ऽऽ	प	आऽ	प	ने	ढी	ऽऽ	प	
							प			म			
	पसा	सांनि	-	ध	प	धप	ग	पम	-	ग	रेसा	नि़	II
	सऽ	ज़ाऽ	ओ	ढी	पों	सेऽ	ये	ऽऽ	ध	रा	तल	ऽ	
II	सा	-प	प	प	प	-	प	प	-म	प	-म	-ध	
	सू	नेऽ	प	ड़े	अ	ब	फू	लों	ऽऽ	के	ऽऽ	ऽऽ	
	ध												
	प	-	-	-	-	म-	म	म	-	म	म	-	
	बा	ऽ	ऽ	ऽ	ग	ऽ	दो	य	ल	को	य	ल	

		ग				म					
म	म	ग	(ग)रे	-	गम	ग	-	-	-	-	ग
न	गा	ऽ	यें	ऽ	ऽऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ग
सा	-	सा	साग	ग	-	-	-	ग	रेम	म	-
का	श	झ	रेंऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	झ	रेऽ	रे	ऽ
						प				म	
-	-	म	मप	प	-	म	ग	-रे	-	ग	-
ऽ	ऽ	झ	रेऽ	रे	ऽ	न	दी	कि	ना	रे	ऽ
सां	-गं	रें	रें	रें	-	सां	सां	-	सां	सां	-
जा	-ए	ऽ	थ	क	न	वे	द	ना	म	लि	न
रें			रें			सां			सां		
नि	नि	-रें	सां	सा	-	नि	ध	सा	नि	धप	-
दी	प	ऽमा	ला	यें	ऽ	स	जा	ऽ	डा	लो	ऽ
			सां						सां		
परसां	सां	-	नि	धप	-	परसां	सां	-	नि	धप	-
जऽ	ला	ओ	दी	ऽऽ	प	अऽ	प	ने	दी	ऽऽ	प
	सां					प		प			
परसां	नि	-	ध	प	-	ग	-प	म	ग	रेसा	ऩि II
सुऽ	ना	ओ	दी	पों	की	ज	ऽय	वा	णी	चल	ऽ
II सा	-प	प	प	प	-	प	प	-	प	प	-मं
दे	ऽव	ता	स	क	ल	न	य	न	खो	लें	ऽऽ
प	-मं	-नि	धप	-	-	-	-	-	म	म	ग
जा	ऽऽ	ऽऽ	गोऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ध	रा	के
ग				म		म			म		
रे	रे	-म	म	ग	म	रे	-	गम	ग	-	-
ला	ली	ऽ	ला	ऽ	ल	जा	ऽ	ऽऽ	गो	ऽ	ऽ

				ग		म						
ग	म	ग	रे	-	-गम	ग	-	-	-	-	-	
आ	लो	क	ज	गा	ऽऽ	ओ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
ग	ग	-रे	सानि	-	-	सा	-	-	ग	-	मप	
या	ऽ	मि	नीऽ	ऽ	ऽ	में	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	
	प		ग			म						
गप	म	-ग	रे	-	गम	ग	-	-	-	-	-	
आ	लो	क	ज	गा	ऽऽ	ओ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
			गं									
सां	सां	गं	रें	रें	-	सां	-	सां	गं	सां	-	
घि	रे	ऽ	नि	शा	ऽ	दि	व	स	ढ	ले	ऽ	
सां			रें			सां						
नि	नि	-रें	सां	सां	-	नि	ध	-सां	नि	धप	-	
दी	प	ऽमा	ला	अऽ	व	स	जा	ऽऽ	डा	लोऽ	ऽ	
			सां									
पसां	सां	-	नि	धप	-	पसां	सा	-	नि	धप	-	
जऽ	ला	ओ	दी	ऽऽ	प	अऽ	प	ने	दी	ऽऽ	प	
		सां		ध		प						
प	-सां	नि	ध	प	-धप	ग	पम	-	ग	रेसा	ऩि	II II
ज	ऽय	ते	रा	हो	ऽऽ	त	मऽ	हो	वि	फल	ऽ	

***

बाग्ला

शीतेर हावार लागल नाचन आम्लकिर एइ डाले डाले।
पातागुलि शिर्शिरिये झरिये दिल ताले ताले॥
उड़िये देवार मातन एसे कांगाल तारे करल शेषे,
तखन ताहार फलेर बाहार रइल ना आर अंतराले॥
शून्य करे भरे देओआ याहार खेला
तारि लागि रइनू बसे सकल बेला।
शीतेर परश थेके थेके याय बुझि ओइ डेके डेके,
सब खोवाबार समय आमार हबे करवन कोन् सकाले।

हिन्दी

शीतल हवा नाचे नाचे नाचे नाचे
आँचले की डाली-डाली॥
पात-पात सिहर-सिहर, सिहर-सिहर
तालो-ताल झरे झरे ॥
उड़ा ले इस पागलपन में
सूने उन्हें करते चले।
तब वो बहार फलों की बहार
छूपा न पाई डाली डाली॥
सूना बना के भर देना, जिसकी लीला।
उसके लिए हम बैठे सारी बेला
ठंडक भरी छूअन उसकी
रह-रह कर आज पुकारे।
सब खो जाये अपने वो पल-
कब आये रे कौन सबेरे ?

स्वरलिपि

				गं			सां					
II	गं	गं	गं	रें	सां	-	नि	-	सां	सरें	रेंसां	-
	शी	त	ल	ह	वा	ऽ	ना	ऽ	चे	नाऽ	चे	ऽ
	धप	-	म॑	म॑ध	प	-	प	-	म	ग	गरे	-
	ना	ऽ	चे	नाऽ	चे	ऽ	आँ	ऽ	व	ले	की	-
			ध									॥
	ग	ग	म॑	म	प	-	-	-	-	-	-	-
	डा	ऽ	ली	डा	ली	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
	मं	प	ध	ध	नि	-	निसं	-	रें	रें	गं	-
	पा	ऽ	त	पा	ऽ	त	सिऽ	ह	र	सि	ह	र
							गं			रें		
	सांगं	-	गं	गं	गं	-	रें	रें	रें	सां	सां	-
	सि	ह	ऽर	सि	ह	र	ता	लो	ऽ	ता	ऽ	ल
	सां											
	नि	नि	-	ध	प	-	II					
	झ	रे	ऽ	झ	रे	ऽ						
II{	म॑	म॑	प	ध	नि	-	सां	रें	-	रें	गं	-
	उ	ड़ा	ऽ	ले	इ	स	पा	ग	ल	प	न	में
										पं		
	-	-	-	-	-	-	गंपं	पं	-	मं	गं	-
	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	सूऽ	नें	ऽ	उ	न्हें	-

	गं			म									
	रें	-	मं	गं	रेंसां	-	-	-	-	-	-	-	}
	कर	ते	ऽ	च	लेंऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
				प							ध		
	प	प	-	म	प	-	म	प	-	पध	प	-	
	त	ब	वो	ब	हा	र	फ	लों	की	ब	हा	र	
	प									गं			
	म	-	प	ध	नि	सां	सां	ग	ग	रें	सां	-	II
	छु	पा	न	पा	ई	ऽ	डा	लो	ऽ	डा	लि	ऽ	
				प				ध					
II{	प	-	प	म	प	-	पध	प	-	म	ग	-म	
	सु	ना	ब	ना	के	ऽ	भर	ऽ	ऽ	दे	ना	ऽ	
	रे	ग	-	म	प	-	रे	ग		म	प	-	
	जि	स	की	ली	ला	ऽ	उ	स	के	लि	ये	ऽ	
	-	-	-	-	-	सां	निसां	-	नि	ध	प	-	
	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	हम	ऽ	बै	ऽ	ठे	ऽ	
								ध					
	-	-	-	-	-	-	पध	प	-	म	-ग	म	
	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	सारी	ऽ	ऽ	बे	ला	ऽ	
	रे	ग	-	म	प	- }	{म	र	-	ध	नि	-	
	उ	सी	के	लि	ये	ऽ	ठं	ड	क	भ	री	ऽ	
	सं	रें	रें	रें	गं	-	-	-	-	-	-	-	
	छू	व	न	ऽ	स	की	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	

प						म					
गं	पं	पं	मं	गं	-	रें	रें	मं-	गं	रेंसां	-
र	ह	र	ह	क	र	आ	ज	ऽपु	का	रे	ऽ
									प		
-	-	-	-	-	-}	प	-	प	म	प	-
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	स	ब	खो	जा	ये	ऽ
प				ध							
म	प	-	पध	प	-	म	प	-	ध	नि	-सां
अ	प	ने	बोऽ	प	ल	क	ब	ऽ	आ	ये	रे
सा	गं	गं	^गरें	सां	-	II II					
कौ	न	स	वे	रे	ऽ						

***

बांग्ला

पौष तोदेर डाक दियेछे, आय रे चले, आ य आ य आय
डाला ये तार भरेछे आज पाका फसले, मरि हा य हा य हाय ॥
हावार नेशाय उठल मेते-दिग्‌वधूरा धानेर क्षेते-
रोदेर सोना छड़िये पड़े माटिर आँचले, मरि हाय हाय हाय ॥
माठेर बाँशि शुने शुने आकाश खुशि हलो।
घरेते आज के रवेगो, खोलो खोलो दुआर खोलो।
आलोर हासि उठल जेगे धानेर शिषे शिशिर लेगे
धरार खुशि धरेना गो, ओइ- ये उथले मरि, हाय हाय हाय ॥

हिन्दी

सुनो पुकार पूस की ये, आओ चले आओ रे
डलिया उसकी भरी-पूरी पके फसल से अहा फूली न समाये ॥
धान खेत में मस्त पवन, दिग्वधुयें हैं मन मगन
धूप में सोना-सोना बरसे, माटी-अंचरा-पे, अहा फूली न समाये ॥
माठ-घाट की बंसी सुन खुशी आकाश छुए, घर में आज कौन रहे रे?
खोलो द्वार खोलो-खोलो खोलो, द्वार खोलो ॥
धान बालियों पर ओस बरसे लगे सुभग ज्योत हंसे - उथलपुथल मंची-धूम,
धरा की खुशी-अहा फूली न समाए ॥

स्वरलिपि

II	ध	स	-	स	स	र	ग	प	प	प	म	प
	सु	नो	ऽ	पु	का	र	पू	ऽ	स	की	ये	ऽ
			रे				रे		II			
	ग	-	स	र	ग	म	ग	-	-	र	-	गर
	आ	वो	ऽ	च	ले	ऽ	आ	ऽ	ऽ	वो	ऽ	ऽऽ
							ग					
	सा	-	-	-	-	-	प	प	प	प-	प	प
	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	डलि	या	ऽ	उस	की	ऽ
	म	प	-	ध	न	-	प	प	न	ध	ध	नध
	भ	री	ऽ	पु	री	ऽ	प	के	ऽ	फ	स	लऽ
						र				र		
	प-	ध	प	म	ग	स	स	-	र	ग	-	र
	सं	ऽ	ऽ	अ	हा	ऽ	फू	ली	ऽ	न	ऽ	स
	स	स	-	-	-	-	II					
	मा	ये	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ						
II{	प	ध	सं	सं-	सं	-	सं-	नरं	सं	सं	सं	रंसं
	धा	न	खे	ऽत	में	रे	म	स्	त	प	व	न
	सं			सं								
	न	-	सं	न	-ध	न	प	प	ध	ध	न	-
	दि	ग	व	धु	ये	ऽ	हे	म	न	म	ग	न
	-	-	-	-	-	-}	प	ध	ध	सं	न	-
	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	धू	प	मे	सो	ना	ऽ
	ध	प	प	ध-	प	-	प	प	न	ध-	ध	नध
	सो	ना	ऽ	वर	से	ऽ	मा	टी	ऽ	अंच	रा	ऽऽ

						र				र		
	प	ध	प	म	ग	स	स	-	र	ग	ग	र
	पे	ऽ	ऽ	अ	हा	ऽ	फू	ली	ऽ	न	स	ऽ
	स	स	-	-	-	-	II					
	मा	ये	ऽ	ऽ	ऽ	र						
	ग											
II {	प	प	प	प	प	-	म॑	प	-	म॑	प	-
	मा	ठ	धा	ट	की	ऽ	सु	न	ऽ	बं	सी	ऽ
	^पन	न	न	न	ध	न	^निध	प	-	-	-	-
	खु	शी	ऽ	आ	का	श।	छू	ये	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
	प	ध	-	सं	न	-	प	-	ध	न	ध	न
	ध	र	ऽ	मे	आ	ज	कौ	ऽ	न	र	हे	ऽ
							ग					
	धप	-	-	प	प	प	प	प	प	प	प	प
	रे	ऽ	ऽ	खो	लो	ऽ	द्वा	ऽ	र	खो	लो	ऽ
							प					
	म॑	प	प	ध	न	प	न	न	न	न	ध	न
	खो	लो	ऽ	खो	लो	ऽ	द्वा	ऽ	र	खो	लो	ऽ
	प											
	ध	प	प	-	-	- }	{प	ध	सं	सं	सं	सं
	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	धा	न	बा	लि	यों	पे
	सं	नरं	सं	सं-	सं	रंसं	न	सं	-	न	ध	न
	ओ	ऽ	स	ब	सें	ऽ	ल	गे	ऽ	सु	भ	ग
	प	प	ध	ध	न	-	-	-	-	-	- -	}
	ज्यो	ऽ	त	हं	से	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

प	ध	ध	सं	न	न	ध	ध	न	ध	प	प	
उ	थ	ल	पु	थ	ल	म न	ची	ऽ	धू	ऽ	म	
प	न	न	ध	ध	न	प	ध	प	म	ग	रेस	
ध	रा	ऽ	की र	ऽ	खु	शी	ऽ	ऽ	अ	हा	ऽऽ	
स	-	र	ग	-	र	स	स	-	-	-	-	II II
फू	ली	ऽ	न	ऽ	स	मा	ये	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	

***

बांग्ला

नूपुर बेजे याय रिनिरिनि ।।
आमार मन कय, चिनि चिनि ।।
गंध रेखे याय मधुवाये माधवी वितानेर छाये छाये,
धरणी शिहराय पाये पाये, कलसे कंकणे किनिकिनि ।।
पारूल शुधाइल, के तुमि गो, अजाना काननेर मायामृग।
कामिनी फूलकुल वरषिछे, पवन एलोचुल परशिछे,
आंधारे तारागुलि हरषिछे, झिल्लि झनकिछे झिनिझिनि ।।

हिन्दी

नूपुर गुंजन रून् रून् रून् , रून् रून् नूपुर गुंजन
जानी चीन्हीं कहे मेरा मन ।। नूपुर गुंजन रून रून रून।
सौरभ ढारि चले मधुर बयार माधवी वितान की छैया तलै
धरती सिहरे पग पग पे, कलस कंगन छननछनन्
रून् झून् रून् झून् जानी चीन्ही कहे मेरा मन ।।
पारूल सुधे ओरी कौन तुम हो
अंजाने बन की मायामृग हो, कौन तुम कौन हो
कामिनी फूल दल बरसे रे, पवन खुले केश परसे रे
तमघिरे तारादल हरष हंसे झींगुर झनकारे
रिम रिम रिम,
रून् रून् रून् रून् जानी चीन्ही कहे मेरा मन ।।

स्वरलिपि

	[ध]	सं		॥	
II	प सं सं सं	नि ध प म	म म म गे	गप - - प	
	नू ऽ पु र	गु न ज न	रु न् रू न्	रुन् ऽ ऽ ऽ	
				ध	
	स स र ग	म प ध न	प सं सं नि	धनी न प-	}
	रु न रु न	रु न रु न	नू ऽ पु र	गुन ज नऽ	
	म म म -	म म म म	म म म ग	गं गं - -	
	जा नी ची ऽ	न्ही ऽ क हे	में ऽ रा ऽ	म न् ऽ ऽ	
	रें -सं सं सं	न ध प म	म म म ग	गप --	
	नू ऽऽ पु र	गु न ज न	रु न रु न	रुन ऽ ऽ ऽ	
		प			
{	प म ध प	न ध न सां	सं संगं रें संन	सं - - -	
	सौ ऽ र भ	ढा रि च लें	म धुऽ र बऽ	या ऽ र ऽ	
			न स		
	स - रे ग	म प -ध न	ध न नसं न	धप - - (मं)	}I -I
	मा ऽ ध वी	वि ता न की	छैं या त ऽऽ	लेऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ
	सं न ध प	प मंध प म	म म म -ग	म - - -	
	ध र ती ऽ	सि हऽ रे ऽ	प ग प ग	पे ऽ ऽ ऽ	
	सम म म -	गम प म म	म म म ग-	गप - - -	
	कऽ ल स ऽ	कऽ ऽ ग न	छ न न छऽ	नन् ऽ ऽ ऽ	
	स स रे रे	ग र ग ग	ग म प ध	प प म म	
	रु न झु न	रु न झु न	जा नी ची ऽ	न्ही ऽ क हे	

	सम म मि ग	ग- पे ध न	I[ ]I		
	मS S रा S	मन S S S			
			ग	प	
II	{स - र -	र गर ग ग	मं -ध प प	म - - -	
	पा S रु ल	सु धेS ओ री	कौ नS तु म	हो S S S	
				ध	
	(सम म म -	म म म ग	र प प -मे	प- ध न	
	अं जा ने S	व न की S	मा या मृ ग	हो S S S	
	न				
	ध-सं सं सनि	ध नध प प)}	{ प -मध	प न ध न	सां
	कौ Sन तु Sम	को Sन हो S	का S मी नी	फू ल दल	
	सं संगं गरें संनि	सं - - -	सं - रे ग	म प ध न	
	बेS र सेS SS	रे S S S	प S व न	खु ले के श	
	ध न नसं न	धप - - (मं)}I -I	सं न ध -प	पम धप प प	
	प र से SS	ठे SS S S	त म घि रे	ताS राS ढ ल	
	म म मि ग	पम - - -	स -म म म	म म म म	
	ह र ष हं	से S S S	झीं S गु र	झ न क रे	
	म म मं -गे	गप - - -	स स र र	ग र ग ग	
	रि म् रि म्	रिम् S S S	रु न् रु न्	रु न् रू न्	
	ग म प ध	प प म म	म म म -ग	प - ध न	II [ ] II
	ज नी ची S	न्ही S क हे	मे S रा SS	म न् S S	

***

बांग्ला

एकटुकू छोंआ लागे, एकटुकू कथा शुनि
ताइ दिये मने मने रचि मम फाल्गुनी ॥
किछु पलाशेर नेशा, किछु बा चाँपाय मेशा,
ताइ दिए सुरे सुरे रंगे रसे जाल बुनि ॥
येटुकू काछेते आसे क्षणिकेर फाँके फाँके
चकित मनेर कोणे स्वपनेर छवि आँके।
येटुकू जाय रे दूरे भावना कांपाय सुरे,
ताइ निये याय बेला नूपुरेर ताल गुनि ॥

हिन्दी

छोटी छोटी ये बातें जरा जरा सी छुअन
वही मेरे अंतर में रचे-रंगे फागुन ॥
कुछ पलाश नशा कुछ चंपक रंग है
वही मेरे सुर-सुर में जाल, रंग-रस भरी बिने
रचें-रंगे फागुन ॥
जब कभी पास वो आएं, पल भर चुपके-छुपके
चकित हो मन सपने संज़ोए, मन के कोने में
जरा जो हो जाते दूर यादों में काँपे सुर
यों ही ढल जाती बेला, घुंघरुन ताल गिनगिन
रचें-रंगे फागुन ॥

***

बाग्ला

यदि तारे नाइ चिनि गो से कि आमाय नेबे चिने
एइ नव फाल्गुनेर दिने–जानि ने, जानि ने ।।
से कि आमार कुँड़िर काने कबे कथा गाने गाने,
पराण ताहार नेबे किने ए इनब फाल्गुनेर दिने
जानि ने, जानि ने ।।
से कि आपन रंगे फुल रांगाबे ।
से कि मर्मे एसे घुम भांगाबे ।
घोमटा आमार नतुन पातार हठात ढोला पाबे कि तार,
गोपन कथा नेबे जिने एइ नव फाल्गुनेर दिने
जानि ने, जानि ने ।।

हिन्दी

यदि मैं उनको पहचान न पाऊं क्या वे मुझे पहचान लेंगे ।
नवल इस फागुन के दिन में जानूं ना, जानूं ना ।।
मेरी कली के कानों में क्या करेंगे बातें वे गीतों-गीतों में-
मोल लेंगे जिया कली का नवल इस फागुन के दिन में-
जानूं ना, जानूं ना ।।
क्या वे, अपने रंग में फूल रंगेंगे ।
क्या वे भेद मर्म नींद हरेंगे ।
घूंघट मेरे नये पत्तों के, क्या वे अचानक हिलोर देंगे,
जान लेंगे राज़ दिल की नवल इस फागुन के दिन में-
जानू ना, जानू ना ।।

***

बाग्ला

आजि कमलमुकुलदल खुलिल, दुलिल रे दुलिल -
मानससररसे रसपुलके पलके पलके ढेउ तुलिल ॥
गगन मगन हल गंधे समीरण मूर्छे आनंदे,
गुन् गुन् गुंजनछंदे मधुकर घिरि घिरि वंदे -
निखिलभुवनमन भूलिलो।
मन भूलिलो रे मन भुलल॥

हिन्दी

आज कमलमुकुलदल है खिले झूम झूलना झूले रे।
मानसनद में रस उमड़े लहरें पल ही पल जागें रे॥
महक से नभ होवे मगन हरषित मूर्छित समीरण
गुन गुन गुंजन छंदों में मधुकर घेर धिर वंदे-
निखिल-भुवन-मन भूले रे भूले रे मन भूले, भूले रे॥

स्वरलिपि

	न सं ॥	(0) {न (ध) न प म	(3) प प मग म
	आ ज	क म ल मु	कु ल दऽ ल
(+) नध न नसं न	(2) (सं ध न सं)	(0) सं सं न ध	(सं) न- (+) सं न
हैऽ ऽ ऽऽ खि	ले ऽ आ ज	ले ऽ ऽ ऽ	झू ऽ ऽ म
			सं -रं सं न
			झूऽ ल ना ऽऽ
न सं रं (न) सं	नध नध सं -	न -न प (ध) म	प मग म म
झू ऽ ऽ ले	रेऽ ऽऽ ऽ ऽ	मा न स न	द मेंऽ र स
र र स -	- - - -	म म म म	प प मग म
उ म ड़ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ल ह रे प	ल ही पऽ ल

| नध न न न | सं नध न सं | II
| जाऽ ऽ गे ऽ | रे ऽऽ आ ज |

[न सं सं सं]

II{ ध न न न | सं सं रं सं |
म ह क से | न भ हो ये |

| न - सं- - | - - - - | न सं रं रं | रं गं सं सं |
| म ऽ गन् ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ | मू ऽ र्छि त | ह र षि त |

प न

| नसं रंसं नध - | (- - - न)I | - - - -I{न- | पम पम ग- मप
| सऽ मीऽ रण ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ गुन् | गुन गुन जन जन

ग म

| म - र रे | स - - -} | म म म म | म प ग म
| छ ऽ न्दों ऽ | में ऽ ऽ ऽ | म धु क र | धे रि धि रि

म

| नध - - न | सं - - - | सं गं गं गं | गं गं मं पं
| बं ऽ ऽ ऽ | दे ऽ ऽ ऽ | नि खि ल भु | व न म न

मं मं

| मं पं पंमं - | - गं गं गं | गं मं मं - | मंगं - रं सं |
| भू ले रेऽ ऽ | ऽ ऽ म न | भू ले रे ऽ | ऽऽ ऽ म न |

| न सं - ध | नसं - न सं | II II
| भू ऽ ऽ ऽ | ले ऽ आ ज |

***

बांग्ला	हिन्दी
आज खेला भांगार खेला खेलबि आय,	आज खेल समापन खेल खेलें आओ
सुखेर बासा भेंगे फेलबि आय ॥	आओ हो सब मिल ॥
मिलनमालार आज बांधन तो टुटबे,	सुख के नीड़ तोड़े। आओ हो सब मिल
फागुन-दिनेर आज स्वपन तो छुटबे	मिलन हार के बंधन जो टूट फागुन बेला के सपने जो छूटे
उधाओमनेर पाखा मेलबि आय ॥	उड़ जाने को पाँखें मन की खुलें।
अस्तगिरिर आइ शिखरचूड़े,	आओ हो सब मिल ॥
झड़ेर मेघेर आज ध्वजा उड़े।	अस्ताचल के शिखर चूड़ पे मेहा तूफां के ध्वजा उड़े रे
कालवैशाखीर हवे ये नाचन,	कालवैशाखी नाचे झनाझन साथ नाचे रे मरण औ जीवन
साथे नाचुक तोर मरण बाँचन-	हसना रोना अहा हँसना रोना पैरों तले दल
हासि काँदन पाये ठेलबि आय ॥	आओ हो सब मिल ॥

स्वरलिपि

		रं			न								॥		ध		
प ध॥	{नोर	सं	-	नो	धी	प	ग	म	(प	-	-	-	(-	ध	पध	)	}।
आ ज	खेऽ	ल	ऽ	स	मा	ऽ	प	न	खे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ल	आ	ज	
					ध		ध				रे				ध		
	प	-	प	ध	प	ध	प	ध	धन	नर	सं-		न	ध	प	ध	
	खे	ऽ	ल	खे	लें	ऽ	आ	ओ	आऽ	वोऽ	होऽ		स	ब	मि	ल	
		रें			न												
	नरं	सं	सं	न	ध	प	ग	म	प	-	-	-	-	-	-	-	
	खेऽ	ऽ	ल	स	मा	ऽ	प	न	खे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ल	
{	न	न	-	न	न	-	नध	न	(नसं	-	-	-	न	ध	प	म)	}
	सु	ख	के	ऽ	नी	ऽ	ड़	तो	ड़ेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
	स		रे		ध				रे								
	नसं	-	न	रं	सं	नध	प	ध	न	रं	सं	-	न	ध	प	ध	II
	ड़ेऽ	ऽ	ऽ	तो	ड़े	ऽऽ	आ	ओ	आ	ओ	हो	ऽ	स	ब	मि	ल	

पं

----II{गं गं - गं | गं - गं - | गंपं मं गं रं | नी - सं -
ऽऽ ऽऽ | मि ल न हा | ऽ र के ऽ | वंऽ धन् जो ऽ | टू ऽ टे ऽ

स ध न
न सं - न | सं न रंसं - | म- प - ध | प न ध - }
फा गु न बे | ला ऽ कीऽ ऽ | सप न ऽ जो | छू ऽ टें ऽ

रे सं
न न रें सं | न ध पम गम | प - - - | - - - -
ठड जा ऽ ने | को ऽ अऽ ऽ | हा ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ

गं स स ध
गं- ग - - गं | गंमं मगं रं सं- | नी - रें सं | नी ध प ध
ठड़ जा ऽ ने | कोऽ ऽ पाँ ऽ | खें ऽ म न | की ऽ खु लें

न रें रेंसं - | न ध धप ध | II
आ ओ हो ऽ | स ब मि ल

ग
----II {स - स स | रे - ग - | रे ग - ग | गम - - -
ऽऽऽऽ | आ स् ता ऽ | च ल के ऽ | शि ख र चू | ड़ पे ऽ ऽ

प ध
म प - प | प - म ग- | म म ध प | ध - - - }
मे हा ऽ तु | फाँ ऽ की ऽऽ | ध्व जा ऽ उ | ड़े ऽ रे ऽ

प रें
{ गं - गं - | गं - गं - | गंपं मं गं रें | न - सं -
का ल वै ऽ | शा ऽ खी ऽ | नाऽ ऽ चे झ | ना ऽ झ न

सं ध न
न सं - न | सं न रेंसं - | म प - ध- | प धन ध - }
सा ऽ थ ना | चे ऽ रेऽ ऽ | म र ण और | जी ऽऽ व न्

रें
न- न रें सं | न ध पम गम | प - - - | - - - -
हस ना ऽ रो | ना ऽ अऽ ऽऽ | हा ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ

						म				स		रं	ध		
गं	गं	-	गं	गं	-	गंमं	गं	रेंसं	-	न	रं	सं	नध	प	ध
हंस	ना	ऽ	रो	ना	ऽ	पैऽ	ऽऽ	रोऽ	ऽ	त	ले	द	लऽ	आ	ओ
		रे		सं		ध									
न	रें	सं	-	न	ध	प	ध	II II							
आ	ओ	हो	ऽ	स	ब	मि	ल								

***

बांग्ला

ओगो बधू सुंदरी, तुमि मधुमंजरी,
पुलकित चंपार लहो अभिनंदन
पर्णेर पात्रे फाल्गुनरात्रे मुकुलित मल्लिका-माल्येर बंधन।
एनेछि वसंतेर अंजलि गंधेर,
पलाशेर कुंकुम चांदिनिर चंदन
पारुलेर हिल्लोल, शिरीषेर हिन्दोल,मंजुल वल्लरी बंकिम कंकण
उल्लास उतरोल बेणुवनकल्लोल   कंपित किशलये मलयेर चुंबन।
तव आँखि पल्लवे दियो आंकि बल्लभे
गगनेर नवनील स्वपनेर अंजन॥

हिन्दी

ओरी वधु सुन्दरी, तुम मधुमंजरी
पलकित चंपक लो अभिनंदन।
पर्ण-पात्र ये फागुन-रात में
मुकुलित मल्लिका हार का बंधन॥
वासंती की लोरी सौरभ अंजली भर
पलाश-कुमकुम चांदनी-चंदन
पारुल पे हिलोर, शिरीष- हिंडोला
मंजुल-बल्लरि बांधे कंगना॥
उल्लास-उतावल वेणुवन-कल्लोल
तव आँखि-पातों पे आंको हिय-वल्लभ
नभ का नभनील स्वपन-काजल॥

स्वरलिपि

II

म	म	ग	म	प	-	म	प	नध	-	-	-	-	-	-	-
ओ	री	व	धु	सुं	ऽ	ऽ	द	रीऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	ध	ध	प	म	प	ध	प	मग	-	-	-	-	-	-	-
तु	म	म	धु	मं	ऽ	ऽ	ज	रीऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग	म	ग	रे	ग	-	म	-	म	प	म	ग	म	न	न	न
पु	ल	कि	त	चं	ऽ	प	क	लो	ऽ	अ	भि	नं	द	द	न
न ध	प	मग	म	प	-	म	प	नध	-	-	-	-	-	-	-
ओ	री	व-	धू	सुं	ऽ	ऽ	द	रीऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
न	-	सं	सं	रे	-	सं	-	न	-	सं	सं	नसं	न	न ध	प
प	ऽ	र्ण	पा	ऽ	त्र	ये	ऽ	फा	ऽ	गु	न	राऽ	त	मे	ऽ
प	ध	न	ध	प	-	ध	प	म	-	प	प	पध	प	म	ग
मु	कु	लि	त	म	ऽ	ल्लि	का	हा	ऽ	र	का	बंऽ	ऽ	ध	न
ग	ग	म	म	प	-	म	प	नध	-	-	-	-	-	-	-
ओ	री	व	धु	सुं	ऽ	ऽ	द	रीऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
{ ध	ध	ध	ध	न	-	सं	-	रे	-	रें	स-	संन	-	सं	-
ला	ऽ	रे	व	सं	त	की	ऽऽ	सौ	ऽ	र	भअं	ज	ली	भ	र
सग	ग	ग	रें	गं-	-	ग	गं	सं	रे	गं	गं	रेंग	रे	सं	सं }
पऽ	ला	ऽ	श	कुंम	ऽ	कु	म	चाँ	ऽ	द	नी	चंऽ	ऽ	द	न
संमं	मं	मं	मं	मं-	-	पं	मं	गं	रें	गं	रें	गं	रे	गं	मं
पाऽ	रू	ल	पें	हिंऽ	ऽ	ल्लो	रे	शि	री	ऽ	ष	हिं	ऽ	डो	ला

ग	-	ग	गं	रें	-	रें	रें	सं	-	सं	सं	न	-	न	न
मं	ऽ	जु	ल	व	ऽ	ल	री	बाँ	ऽ	धे		कं	ऽ	ग	ना
ध	प	मग	ग	प	-	ग	प	नध	-	-	-	-	-	-	-
ओ	री	वऽ	धु	सुं	ऽ	ऽ	द	रीऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
{ स	म	म	म	म	प	मप	ध	प	म	ग	रे	ग	रे	ग	म
उ	ऽ	ला	स	उ	ता	वऽ	ल	वे	णु	व	न	क	ऽ	लो	ल
ग	-	रे	स	स	रे	ग	म	ग	म	(म) ग	ग	र	-	स	स }
का	ऽ	पे	ऽ	कि	स	ल	य	चू	में	ऽ	जो	म	ऽ	ल	य
ध	ध	न	सं	सर	-	-	न	सं	-	-	-	-	-	-	-
तौ	ऽ	आँ	खि	पाऽ	ऽ	ऽ	तों	पे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ध	ध	न	सं	संग	-	र	सं	ध	न	सं	र	र	न	सं	-
आँ	को	हि	य	वऽ	ऽ	ल	भ	आँ	ऽ	ऽ	ऽ	को	ऽ	ऽ	ऽ
(स) गं	ग	गं	[illegible]	र	र	सं	सं	न	सं	न	न	ध	-	प	प
न	भ	का	ऽ	न	भ	नी	ल	स	प	ने	का	काऽ		ज	ल ||
म	ग	म	म	प	-	म	प	नध	-	-	-	-	-	-	-
ओ	री	व	धु	सुं	ऽ	ऽ		रीऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ || ||

***

बाग्ला

चले याय मरि हाय बसंतेर दिन।
दूर शाखे पिक डाके विरामविहीन॥
अधीर समीर-भरे उच्छ्वसि बकुल झरे,
गंध-सने हल मन सुदूरे विलीन।
पुलकित आम्रवीथि फाल्गुनेरइ तापे,
मधुकरगुंजरने छायातल काँपे।
केन आजि अकारणे सारा बेला आनमने
पराणे बाजाय वीणा के गो उदासीन॥

हिन्दी

चला जाये रे ओरी हाय, बीत जाये बासंती ये दिन बीते हाय॥
दूर शाखों पे, पिक कूके विराम विहीन कूके हाथ चला जाय॥
अधीर समीरण-में उच्छसि हो वकुलझरे चंचल रे,
महक-संग ये मन खोए सुदूर खोये ओरी हाय।
ये चला जाए ...
पुलकित-आम्रवीथि फागुन की मीठी तपन।
मधुकर-गुन-गुन-गुन, काँपे ये छाया-वन,
आज क्यों अकारण ही सारी बेला सूधि भूलूँ
सारी बेला प्राण-वीणा बजाए कौन, उदासी,
ओरी हाय, चला जाये वासंती यह दिन बीता जाये॥

स्वरलिपि

ध नII	नरं	-	-	-	-	-	सं	न	सं	-	-	-	-	-	स	म
च ला	जा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ये	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ओ	री
	म	-	-	-	-	-	म	मग	गप	-	-	-	-	-	-	-
	हा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	य	बी	ताऽ	जाये	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
	प	-	पम	ध	ध	-	ध	न	न	सं	ध	न	सं	-	-	-
	वा	ऽ	संऽ	ऽ	ती	ऽ	ये	ऽ	दिन्	ऽ	बी	ता	जाये	ऽ	ऽ	ऽ

न	ध	ध	न	नरं	-	-	-	-	-	सं	न	सं	-	-	-
ऽ	ऽ	च	ला	जा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ये	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ
संरं	-	-	-	सं	न	सं	-	न	ध	धन	न	प	-	म	-
दूऽ	ऽ	ऽ	र	शा	खों	पे	ऽ	ऽ	ऽ	पिऽक		कू	ऽ	के	ऽ
स	र	ग	ग	म	-	स	म	म	-	-	-	-	-	म	मग
वि	रा	म	वि	ही	न	कू	के	हा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	य	च	लाऽ
गप	-	-	-	-	-	-	-	प	-	पम	ध	ध	-	ध	न
जा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ये	ऽ	वा	ऽ	संऽ	ऽ	ती	ऽ	ये	ऽ
न-	सं	ध	न	सं	-	-	-	न	ध	ध	न	नरं	-	-	-
ढिन	ऽ	बी	ते	हा	ऽ	ऽ	ऽ	य	ऽ	च	ला	जाऽऽ		ऽ	ऽ
-	-	सं	न	सं	-	-	-	म	ध	ध	ध	न	-	न	न
ऽ	ऽ	ये	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	अ	धी	र	स	मी	ऽ	र	ण
सं	-	सं	रं	(रं) ग	-	सं	-	न	सं	रं	(रं) सं	न	ध	ध	न
मे	ऽ	उ	ऽ	च्छु	सि	हो	ऽ	व	कु	ल	झ	रे	ऽ	चं	ऽ
न	-	सं	-	-	-	-	-	सं	मं	मं	मं	मं	-	मं	मं
च	ल	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म	ह	क	सं	ऽ	ग	ये	ऽ
मंपं	मं	गं	-	-	-	गं	-	गं	मं	मं	गं	रंसं	-	स	म
मऽ	न	खो	ऽ	ये	ऽ	ऽ	सु	दू	ऽ	र	खो	येऽ		ओ	री
म	-	-	-	-	-	म	मग	गप	-	-	-	-	-	-	-
हा	ऽ	ऽ	ऽ	य	ऽ	च	लाऽ	जा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ये	ऽ

	प	-	पम	ध	ध	-	ध	न	न	सं	ध	न	सं	-	-	-	
	वा	ऽ	संऽ	ऽ	ती	ऽ	य	ह	दिन्	ऽ	बी	ता	जाये	ऽ	ऽ	ऽ	
	न	ध	ध	न	नरं	-	-	-	-	-	सं	न	सं	-	-	-	
	ऽ	ऽ	च	ला	जाऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ये	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	
{	संरं	सं	न	ध	प	-	म	ग	म	-	म	-	स	-	र	-	
	पुऽ	ल	कि	त	आ	ऽ	प्र	वि	थी	ऽ	फा	ऽ	गुन	ऽ	की	ऽ	
	ग	-	ग	-	म	-	-	-	म	प	प	प	प	-	ध	न	
	मी	ऽ	ठी	त	पन	ऽ	ऽ	ऽ	म	धु	क	र	गु	न	गु	न	
	न								ध		न						
	-ध	-	ध	न	पध	प	प	ध	प	धन	-ध	-	-	-	(न)}		I -
	गु	न	ऽ	ऽ	काँ	ऽ	पे	ऽ	छा	ऽऽ	या	ऽ	व	न	ऽ		ऽ
									रं								
	म	ध	ध	न	न	-	सं	रं	न	-	सं	-	न	ध	ध	न	
	आ	ज	क्यों	ऽ	अ	ऽ	का	ऽ	र	ण	ही	ऽ	ऽ	ऽ	सा	री	
									सं			रं					
	न	-	सं	-	-	-	-	-	न	सं	रं	सं	न	ध	ध	न	
	बे	ऽ	ला	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	सु	धि	भू	ऽ	लूँ	ऽ	सा	री	
	न	-	सं	-	-	-	-	-	सं	मं	मं	मं	मं	-	म	-	
	बे	ऽ	ला	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प्रा	ऽ	ण	वी	णा	ऽ	ऽ	ब	
	मं	-	मं	-	मंपं	मं	गं	-	गं	-	गंमं	गं	रंसं	-	स	म	
	जा	ऽ	ये	ऽ	कौऽ	ऽ	न	उ	ढा	ऽ	ऽऽ	ऽ	सीऽ	ऽ	ओ	री	
	म	-	-	-	-	-	म	मग	गप	-	-	-	-	-	-	-	
	हा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	य	च	लाऽ	जाये	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	

प	-	पम	ध	ध	-	ध	न	न	सं	ध	न	सं	सं	-	-	
वा	ऽ	संऽ	ऽ	ती	ऽ	य	ऽ	दि	ऽन	बी	ता	जा	ऽ	ऽ	ऽ	
न॒	ध	ध	न॒	नरं	-	-	-	-	-	सं	न	सं	-	-	-	II II
ये	ऽ	च	ला	जाऽ ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ये	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	

* * *

बांग्ला

नाइ नाइ भय, हबे हबे जय, खुले याबे एइ द्वार
जानि जानि तोर बंधनडोर छिंड़े याबे बारे-बार ॥
खने खने तुइ हाराय आपना सुप्तिनिशीथ करिस यापना
बारे बारे तोरे फिरे पेते हबे विश्वेर अधिकार ॥
स्थले जले तोर आछे आह्वान, आह्वान लोकालये
चिरदिन तुइ गाहिबि ये गान सुखे दुखे लाजे भये।
फूलपल्लव नदीनिर्झर सुरे सुरे तोर मिलाइबे स्वर
छंदे ये तोर स्पंदित हबे आलोक अंधकार ॥

हिन्दी

नहीं करो भय, जय होगी जय खुल जाएंगे द्वार।
जान गए तेरे बंधनडोर टूटेंगे बारबार ॥
छन ही छन तू आप खोए- सोकर ही रातें गंवाए,
बार-बार तुझे फिर पाना है, विश्व का अधिकार ॥
स्थल और जल से तेरी पुकार, पुकार लोकालय से
हरदम तू गाए जा गीत सुखदुख लाज भय में-
फूल-पल्लव नदी निर्झर सूर में तेरे मिलायेंगे सुर,
छन्द में तेरे दम भरेंगे आलोक-अंधकार ॥

स्वरलिपि

II संगं - - -	रं - सां -	सांरं रें -सां सां	निसां - नि -ध
नहीं ऽ ऽ क	रो ऽ भ य	जऽ य हो ऽ	गीऽ ऽ ज यऽ
प प -नि ध	ध -प मग -म	प - - -	- - - -
खु ल जा ऽ	एं ऽऽ गेऽ ऽऽ	द्वा ऽ ऽ ऽ	र ऽ ऽ ऽ
सा रे ग म	प ध धसां ध	गं - - -	रं - सां -
खु ल जा एं	गे ऽ द्वाऽ र	न हीं ऽ क	रो ऽ भ य
सांरं रं - सां	सांरें - सां -	(रं) सां रं निं निं	निं ध धं प
जाऽ न ऽ ग	एऽ ऽ ते रे	बं ऽ ध ऽ	न ऽ डो र
प प नि ध	ध -प मग म	प - - -	- - - -
टू ऽ टें ऽ	गे ऽबा ऽऽ र	बा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ र
मं मं ग रं	रं सां (सां) ध नि	सां -गं - -	रं - सां -
टू ऽ टें गे	बा र बा र	न हीं ऽ क	रो ऽ भ य
ध ध - ध	नि - सा -	सारं रं रं -	सा नि सा -
क्ष ण ही ऽ	क्ष ण तू ऽ	आऽ ऽ ऽ प	खो ऽ ये ऽ
सां -रें रें रें	रें - - -	सां सां -गं -	रें रं सां -
सो ऽ क र	ही ऽ ऽ ऽ	रा तें ऽऽ ग	वा ऽ ये ऽ
मं मं - मं	मं मं पं (पं) मं	रे ग - रे	ग - र ग
बा ऽ र बा	ऽ र तु झे	फि र पा ऽ	ना ऽ है ऽ
गं मं - गं	गं -र र रं	सां -ध -नि	सां गं - -
वि ऽ ऽ श्व	का ऽऽ अ धि	का ऽऽ ऽर	न हीं ऽ क

र	-	सां	-	-	-	-	-	स	रे	म	म	म	-	म	-
रो	ऽ	भ	य	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	स्थ	ल	औ	र	ज	ल	में	ऽ
म	म	ग	-प	म	-	-	-	स	-म	म	-	-	-	म	म
ते	री	ऽ	पु	का	ऽ	र	पु	का	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	लो	का
म ग	प	म-	-	-	-	-	-	ग	म	मध	-	नि	-	सां	-
ल	य	से	-	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ह	र	दऽ	म	तू	ऽ	ऽ	ऽ
नि	निगं	रं	सां	नि	-	-ध	-	प	पसां	नि	ध	प	नि	ध	-
गा	येऽ	जा	ऽ	गी	ऽ	ऽऽ	त	सु	खऽ	दु	ख	ला	ज	भ	य
प	-	-	-	-	-	-	-	ध	-	-	ध	नि	-	सां	सा
में	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	फू	ऽ	ऽ	ल	प	ल	ल	व
सारं	रं	-	सां	नि	-	सां	-	सार		र	-र	-	र	रें	-
नऽ	दी	ऽ	ऽ	नि	र	झ	र	सुर		में	ऽऽ	ते	ऽ	रे	ऽ
सां	सां	-ग	गं	र	-	सां	-	मं	-	-	मं	मं	-	मंपं	मं
मि	ला	ऽऽ	यें	गे	ऽ	सु	र	छं	ऽ	द	में	ते	ऽ	रेऽ	ऽ
रें	-	-	रें	गं	-	रें	ग	गंमं	गं	-	गं	सां	-	गं	रें
द	म	ऽ	भ	रें	ऽ	गे	ऽ	आऽ	लो	ऽ	क	अं	ऽ	ऽऽ	ध
															॥
सां	-	ध	नि	साग	-	-	-	रे	-	सा	-	-	-	-	- ॥ ॥
का	ऽ	ऽ	र	नहीं	ऽ	ऽ	ऽ	क	रो	भ	य	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

***

बांग्ला

ओगो नदी, आपन वेगे पागल-पारा,
आमि स्तब्ध चाँपार तरू गंधभरे तंद्राहारा ॥
आमि सदा अचल थाकि, गभीर चला गोपन राखि,
आमार चला नवीन पाताय, आमार चला फूलेर धारा ॥
ओगो नदी, चलार वेगे पागल-पारा,
पथे पथे वाहिर हये आपन-हारा
आमार चला याय ना बला-आलोर पाने प्राणेर चला
आकाश बोझे आनंद तार, बोझे निशार नीरव तारा ॥

हिन्दी

ओहो नदिया की वेगधार, मतवाली चाल
मैं नीरव चम्पा तरु, सौरभ भरे रे, निंदिया हारे- !!
मैं हू सदा अटल राही, गहरी चाल मेरी छुपी छुपाई
राह चलूं मैं नए पत्तों संग, मेरी चाल, जैसे फूलों की धारा-ओहो !!
ओहो नदिया की वेगधार, मतवाली चाल
राह-बाट-घाट फिरे बहकी-बहकी, मेरी यह चाल-
कही-न जाए, आलोक-धारा में ज्यों प्राण बहे,
आकाश जाने, आनंद उसकी, जानें निशा के नीरव तारे ओहो !!

स्वरलिपि

	+			0			+			0		
							सां					
सा ऩि॥	सा	-	सा	सां	सां	-रें	नि॒	-	-	ध	प	धप
ओ हो	न	दि	या	ऽ	की	ऽऽ	वे	ऽ	ग	धा	ऽ	ऽर
	+			0			+			0		
	प						म		॥			
	म	-	प	-धप	म	-प	ग॒	-	-	रे	सा	-
	म	त	बा	ऽऽऽ	ली	ऽऽ	चा	ऽ	ल	मैं	ऽ	ऽ
							म					
	रे	-	रे	-ग॒	ग॒	-रे	ग॒	-	-	रे	सा	-
	नी	ऽ	र	ऽव	च	ऽम्	पा	ऽ	ऽ	त	रु	ऽ

	- - रे	- ग -	रेम ग -रे	सा स -
	- - सौ	- र भ	भ ऽ रे	ऽ रे ऽ
	- - रे	- ग -	रेग मग रे	सा - -
	ऽ ऽ नि	दि या ऽ	हाऽ ऽऽ ऽ	रे ऽ ऽ
	- सा -	सा सा -नि	II	
	ऽ ऽ ऽ	ओ हो ऽ		
रे सा -II	{नि - नि	- नि -	नि - -	- - प
ऽ ऽ ऽ	मैं ऽ हूं	ऽ स ऽ	दा ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ
			रें	
	नि - सां	निरें सां -नि	सां - -	- - -
	अ ऽ ट	ऽल रा ऽऽ	ही ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ
			सां	
	सां रें सां	- नि ध	नि - -	- - धप
	ग ह री	ऽ चा ऽ	ऽ ऽ ऽ	ल मे री
	प ध मप	ध पम प	मग - -	- - - }
	छू पी छुऽ	पा ईऽ ऽ	ऽऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ
		म	मं	
	सां - रें	- रेंसां रें	गं - -	- - -
	रा ऽ ह	ऽ ऽऽ च	लूं ऽ ऽ	ऽ मैं ऽ
	गं - गं	मं रें -सां	रें- सां- -नि	सां - -
	न ऽ ए	ऽ प ऽऽ	तोंऽ ऽऽ ऽसं	ऽ ग ऽ
	सा रें सां	- नि ध	नि - -	- ध प
	मे ऽ री	ऽ चा ऽ	ऽ ऽ ल	जै से ऽ

	प ध मप	ध पम प	^मग - -	रे सा- ऩि	
	फू ऽ लोंऽ	ऽ कीऽ ऽ	धा रा ऽ	ओ होऽ ऽ	
			म		
II {	रे - ग	- ग रे	ग - -	रे सा -	
ओ हो	न दि या	ऽ की ऽ	वे ऽ ग	धा ऽ र	
				सा	
	रे ग रग	म ग रे	सा - -	सां सां -	
	म त वाऽ	ऽ ली ऽ	चा ऽ ल	रा ह ऽ	
			सां		
	सां - सां	- सां रे	नि - -	ध प धप	
	बा ऽ ट	ऽ घा ऽ	ट ऽ ऽ	फि रें ऽऽ	
			म		
	म - प	धप म प	ग - -	(रे सा -)}	I रे सा - I
	ब ह की	ऽऽ ब ह	की ऽ ऽ	ओ हो ऽ	ऽ ऽ ऽ
{	नि - नि	- नि -	नि - -	- - प	
	मे री ऽ	ऽ य ह	चा ऽ ऽ	ऽ ऽ ल	
	नि - सां	रें सां नि	सां - -	- - -	
	क ऽ ही	न जा ऽ	ये ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	
			सं		
	सां रें सां	- नि ध	नि - -	- ध- प	
	आ ऽ लो	ऽ क धा	रा ऽ ऽ	में ज्यों ऽ	
			म		
	प -ध मप	ध पम प	ग - -	- - -	}
	प्रा ऽऽ णऽ	ऽ ऽऽ ऽ	हे ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	
			मं		
	सां - रें	रे रेंसां रें	गं - -	- - -	
	आ ऽ का	श जाऽ ऽ	ने ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	

रें						सां					
गं	-	ग	मं	रें	सां	रें-	सां-	नि	सां	-	-
आ	ऽ	नं	ऽ	ऽ	द	उस	की	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
						सा					
सां	रें	सां	-	नि	ध	नि	-	-	नि	ध	प
जा	ऽ	ने	ऽ	नि	ऽ	शा	ऽ	ऽ	केऽ	ये	ऽ
प	ध	मप	ध	पम	प	मग	-	-	रे	सां	नि़ II II
नी	ऽ	ऽर	व	ताऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ओ	हा	ऽ

***

बांग्ला

यदि तोर डाक शुने केउ ना आसे तबे एकला चलो रे।
एकला चलो, एकला चलो,एकला चलो एकला चलो रे।।
यदि, केउ कथा ना कय ओरे ओरे ओ अभागा,
यदि सबाइ थाके मुख फिराये, सबाइ करे भय
तबे परान खुले
ओ तुइ मुख फुटे तोर मनेर कथा एकला बलो रे।।
यदि सबाइ फिरे याय, ओरे ओरे ओ अभागा,
यदि गहन पथे याबार काले केउ फिरे ना चाय-
तबे पथेर कांटा
ओ तुइ रक्तमाखा चरणतले एकला दलो रे।।
यदि आलो ना धरे ओरे ओरे ओ अभागा,
यदि झड़ बादलेर आँधार राते दुआर देय घर
तबे बज्रानले
आपन बुकेर पाँजर ज्वालिये निये एकला ज्वलो रे।।

हिन्दी

जो तेरी पुकार पे कोई न आए, तो अकेले चलो रे
अकेले चलो, अकेले-चलो,अकेले चलो, अकेले चलो रे ।।
यदि कोई बाते न करें, ओरे ओरे ओ अभागे,
यदि सभी तुझसे मुंह फेर लें और सभी डरें, तो प्राण खोल के
ओ तू मन की बातें मन ही मन अकेले बोलो रे ।।
यदि सब लौट ही चलें, ओरे ओरे-ओ अभागे
यदि राह गहन चलते कोई गौर न करे, पथ के काँटे-
अपने लहु-लोहित चरण तले, अकेले दलो रे ।।
यदि कोई दिया न धरे, ओरे ओरे ओ अभागे
यदि बादल और तूफानी रातों में द्वार बंद करें, तो वज्र-अनल में
तू हृदय-पंजर आप जलाए, अकेले चलो रे ।।

स्वरलिपि

			रे	
ऩ ऩ ऩ - II	{ सा - सा	रे रे -	प - -	म - -
जो ते री पु	का ऽ र	पे को ई	न ऽ ऽ	आ ऽ ऽ
	गम -ग -	रे सा -	रे - ग	ग रे -गरे
	येऽ ऽ ऽ	तो ऽ अ	के ऽ अ	च लो ऽऽ
				II
	(सा - ऩ	ऩ ऩ -)}	सा - -	- म म
	रे ऽ जो	ते री पु	रे ऽ ऽ	ऽ तो अ
			म	प
	{ म - प	प प -	प [	न न ध
	के ऽ ले	च लो अ	के ऽ ले	च लो अ
		रे		
	प - म	ग सा -	रे - ग	ग रे गरे
	के ऽ ले	च लो अ	के ऽ ले	च लो ऽऽ

	(सा रे म	म प -)}	सा - ऩ	ऩ ऩ -	II
	रे ऽ ऽ	तो अ ऽ	रे ऽ "जो	ते री पु"	
म म II	{म म प	प धन ध	प प -	(- सा सा	
य दि	को ई बा	तें ऽना ऽ	क रे ऽ	ऽ•अ रे	
	रे म म	प ध नि	ध सां न	ध प धप)	}I
	ओ ऽ ऽ	रे ऽ ऽ	ओ ऽ अ	भा गे ऽऽ	
	ध		नि		
I- प ध I	सां- सां -	सा सा रे	सां - न	ध प धप	
ऽ य दि	सब ही ऽ	तुझ से ऽ	मुं ह फे	र लें ऽऽ	
	म प -	प धन ध	प - -	- सा सा	
	औ र स	भी ऽऽ इ	रें ऽ ऽ	ऽ य दि	
	रे म -	प ध न	ध सा न	ध प धप	
	स भी ऽ	तुझ से ऽ	मुं ह फे	र लें ऽऽ	
	म प -	प धन ध	प - -	- म म	
	औ र स	भी ऽऽ इ	रे ऽ ऽ	ऽ तो ऽ	
	प प न	ध न -	- - -	ध प म	
	प्रा ण खो	ल के ऽ	ऽ ऽ ऽ	ओ तू ऽ	
		प		रे	
	{म - प	न न -ध	प म -	ग- सा -	
	म न की	बा तें ऽऽ	म न ही	मन ऽ अ	
	रे - ग	ग रे -गरे	(सा - -	- म म)}	
	के ऽ ले	बो लो ऽऽ	रे ऽ ऽ	ऽ ओ तू	

	सा - न रे ऽ "जो	न न - ते री पु"	II	
म म II य दि	{म प - स ब ऽ	प धन॒ ध- लौ ऽट हीच	प - - लें ऽ ऽ	(- सा सा ऽ अ रे
	रे -म - ओ ऽऽ ऽ	प ध न॒ रे ऽ ऽ	ध सां न॒ ओ ऽ अ	ध प धप भा गे ऽऽ
I - प ध I ऽ य दी	सां सां सां रा ऽ ह	सां सां रें म ह न	सां न - च लते ऽ	ध प धप को ऽ ईऽ
	म - प गौ ऽ र	प धन -ध न ऽऽ ऽक	प - - रें ऽ ऽ	- सा सा ऽ य दि
	रे म - रा ऽ ह	प ध न॒ ग ह न	धसां न - च लते ऽऽ	ध प धप को ई ऽऽ
	म - प गौ ऽ र	प धन॒ ध न ऽऽ क	प - - रें ऽ ऽ	- म म ऽ तो ऽ
	प प न॒ प थ के	ध न॒ - कां टे ऽ	- - - ऽ ऽ ऽ	ध प म अ प ने
	म - प लो ऽ हू	पन॒ न॒ ध लो हि त	प म - च र ण	ग सा - त ले अ
	रे - ग के ऽ ले	ग रे गरे द लो ऽऽ	(सा - - रे ऽ ऽ	- म } ऽ ओ तू

	सा	-	ऩ	ऩ	ऩ	-	II						
	रे	ऽ	जो	ते	री	पु							
म मII{	म	प	-	प	धन	ध	प	-	-	(-	सा	सा	
य दि	दि	या	ऽ	न	ऽऽ	ध	रे	ऽ	ऽ	ऽ	अ	रे	
	रे	म	म	प	ध	ऩ	धसा	ऩ	-	ध	प	धप	)}
	ओ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ओऽ	अ	ऽ	भा	गे	ऽऽ	
I - प ध I	"सां	-	सां	सां	सां	रे	धसां	न	-	ध	म	धप	
ऽ य दि	बा	द	ल	औ	र	तू	फाऽ	नी	ऽ	रा	तों	मेंऽ	
	म	प	-	प	धन	ध	प	-	-	-	सा	सा	
	द्वा	ऽ	र	बं	ऽऽ	द	क	रें	ऽ	ऽ	य	दि	
	रे	म	म	प	ध	न	धसा	न	-	ध	प	धप	
	बा	द	ल	औ	र	तू	फाऽ	नी	ऽ	रा	तों	मेंऽ	
	म	प	-	प	धन	धा	प	-	-	-	प	म	
	द्वा	ऽ	र	बं	ऽऽ	द	क	रें	ऽ	ऽ	तो	ऽ	
	प	-	ऩ	ध	ऩ	-	-	-	-	ध	प	म	
	ब	ज्र	ऽ	अ	न	ल	ऽ	ऽ	ऽ	में	तू	ऽ	
{	म	प	-	न	ऩ	धप	प	म	म	ग	सा	सा	
	हृ	द	य	पं	ज	ऽर	आ	प	ज	ला	ये	अ	
	रे	-	ग	ग	रे	गरे	(सा	-	-	-	म	म	)}
	के	ऽ	ले	ज	लो	ऽऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ओ	तू	
	सा	-	ऩ	ऩ	ऩ	-	II II						
	रे	ऽ	"जो	ते	री	पु"							

* * *

बांग्ला

आलो आमार, आलो ओगो, आलो भुवन-भरा,
आलो नयन-धोया आमार, आलो हृदय-हरा ॥
नाचे आलो नाचे, ओ भाइ, आमार प्राणेर काछे
बाजे आलो बाजे, ओ भाइ, हृदयवीणार मांझे
जागे आकाश, छोटे बातास, हासे सकल धरा ॥
आलोर स्रोते पाल तुलेछे हाजार प्रजापति।
आलोर ढेउये उठलो नेचे मल्लिका मालती।
मेघे मेघे सोना, ओ भाइ, याय ना मानिक गोना
पाताय पाताय हासि, ओ भाइ, पुलक राशि राशि
सुरनदीर कूल डूबेछे सुधा निझर-झरा ॥

हिन्दी

आलोक तू है आलोक मेरा, आलोक भरे भुवन।
आलोक नैन धोये मेरा, करे हृदय-हरण ॥
नाचे आलोक, नाचे ओ-भाई घेरे प्राण मेरे ।
गर्जे आलोक बरजे ओ भाई मन-वीणा झंकारे
जागे आकाश धाए वातास हँसे धरा जीवन ॥
आलोक-धारा की पतवार ऐसी हजारों तितलियाँ।
नाचे आलोक लहरों पर मालती-मल्लिका।
मेघ से सोना-सोना बरसे- रे भाई मणि अनगिने-,
पात-पात हंसे रे भाई खुशी अझर झरे ।
तीर डूबे, सुरसरि की-निर्झर सुधातरंग ॥

स्वरलिपि

II	स स -	सऩ स -	र र -	स र -	
	आ लो क	तूऽ है ऽ	आ लो क	मे रा ऽ	
				॥	
	ग ग ग	म प -	ध न -	- - -	II
	आ लो क	भ रे ऽ	भु व न	ऽ ऽ ऽ	

	न			न	सं		न			प			
	ध	न	-	सं	न	-	ध	प	धप	म	ग	म	
	आ	लो	क	नै	य	न	धो	ये	SS	मे	रा	S	
	र						प						
	ग	र	-	ग	ग	प	म	ग	-	-	-	-	”
	क	रे	S	उ	द	य	ह	र	ण	S	S	S	
II	प	प	-	ध	ध	-	न	न	-	न	न	-	
	ना	चे	S	आ	लो	क	ना	चे	S	ओ	भा	ई	
	प	प	-	ध	न	-	न	सं	-	-	-	-	
	घे	रे	S	प्रा	S	ण	मे	रे	S	S	S	S	
	सं						गं	म					
	गं	गं	-	गं	गं	-	मं	गं	-	रं	रं	-	
	गर	जे	S	आ	लो	क	ब	जे	S	ओ	भा	ई	
							प	रे					
	सं	न	-	प	ध	-ध	रं	सं	-	-	-	-	
	म	न	S	वी	णा	Sझं	का	रे	S	S	S	S	
	सं			ग									
	गं	गं	-	रं	रं	-	सं	सं	-	न	न	-	
	जा	गे	S	आ	का	श	धा	ये	S	वा	ता	स	
				ध									
	ध	ध	-	प	प	-	म	ग	-	-	-	-	II
	हँ	से	S	ध	रा	S	जी	व	न	S	S	S	
				प						न			
II {	गप	प	-	म	प	म	प	न	न	ध	ध	-	
	आ	लो	क	ध	रा	की	प	त	वा	ऐ	सी	S	
	प	म	-	ग	र	गम	म	ग	-	-	-	-	
	हा	जा	रों	ति	त	लिS	याँ	S	S	S	S	S	

सग	ग	-	ग	ग	र	र	प	प	पम	म	-	
ना	चे	ऽ	आ	लो	क	ल	ह	रों	ऽ	पे	ऽ	
म			ग									
ग	-	ग	र	र	म	म	ग	-	-	-	-	}
मा	ऽ	ल	ती	म	ल	लि	का	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
						ध						
प	प	-	ध	ध	-	न	न	-	न-	न	प	
मे	घ	से	सो	ना	ऽ	सोऽ	ना	ब	रसे	भा	ई	
प	प	-	ध	न	-	न-	सं-	-	-	-	-	
झ	रे	ऽम	णि	अ	न	गिऽ	न	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
						गं	म					
संगं	गं	-	गं	गं	-	मं	गं	-	रं	रं	-	
पाऽ	ऽ	त	पा	ऽ	त	हं	से	ऽ	रे	भा	ई	
सं	न	न	प	ध	-	धरं	रंसं	-	-	-	-	
खु	शी	ऽ	अ	झ	र	झाऽ	रेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
			गं			रं						
संगं	गं	गं	रं	रं	-	सं	-	सं	न	न	-	
तीऽ	ऽ	र	डू	बे	ऽ	सु	र	स	री	की	ऽ	
ग						प						
ध	ध	-	प	पम	प	म	ग	-	-	-	-	II II
नि	र्झ	र	सु	धा	ऽ	त	रं	ऽ	ऽ	ऽ	ग	

***

बाग्ला

मम चित्ते निति नृत्ये के ये नाचे
ताता थैथै, ताता थैथै, ताता थैथै
तारि संगे कि मृदंगे सदा बाजे
ताता थैथै ताता थैथै ताता थैथै ॥
हासि कान्ना हीरा पान्ना दोले भाले
काँपे छंदे भालो मंद ताले ताले।
नाचे जन्म, नाचे मृत्यु पाछे पाछे
ताता थैथै, ताता थैथै, ताता थैथै ॥
कि आनंद कि आनंद कि आनंद
दिवारात्रि नाचे मुक्ति, नाचे बंध
से तरंगे छुटि रंगे पाछे पाछे
ताता थैथै, ताता थैथै, ताता थैथै ॥

हिन्दी

मेरे चित्त में नित नृत्त ये
कोई नाचे, ताता थेई थेई
सोई संगे मिरदंग ये
सदा बाजे रे ताता थेई थेई ॥
रोना-हंसना हीरा-पन्ना झूले भाले
काँपे छंद में बुरा -भला ताले-ताले
नाचे जनम नाचे मरण पाछे-पाछे ताता थेई-थेई ॥
हो आनंद, हो आनंद, हो आनंद
दिन राति नाचे मुक्ति नाचे बंधन
वो तरंग में मन-मौज में
धाए पाछे ताता थेई थेई ॥

स्वरलिपि

(ताल कश्मीरी खेमटा धि गे ना। धा ति ना)

स स II{	स - रे	- रे रे	रे - ग	- रे स
मे रे	चि त मे	ऽ नि त	नृ त्य ये	ऽ को ई
	रे - प	- म ग	प म प	म ग रे
	नाऽ चे	ऽ ता ता	थे ई थे	ई ता ता
	म ग म	ग रे सा	रे ग रे	‖ -(स स)}{ न न
	थे ई थे	ई ता ता	थे ई थे	ई म रे सो ही
	न - सं	- न न	न - सं	- न न
	सं ऽ गे	ऽ मि र	दं ग ये	ऽ स दा
	नी - सं	प प प	(प ध) नो - नो	ध प प
	ब जे रे	ऽ ता ता	थे ई थे	ई ता ता
	ध प ध	प म ग	(म) प - म	- }{ स स
	थे ई थे	ई ता ता	थे ई थे	ई रो ना
	सा - रे	- रे रे	रे - ग	- रे स
	हं स ना	ऽ ही रा	प न ना	ऽ झू ले
	ग - रे	- ग ग	ग - म	- ग ग
	भ ऽ ले	ऽ कां पे	छं दऽ मे	ऽ बु रा
	ग - म	- ग रे	ग - र	- }{ प प
	भ ऽ ला	ऽ ता लों	ता ऽ लों	ऽ ना चे

प - प	- प प	प - प	- प ध
ज ऽ न	म ना चे	म ऽ र	ण पा छे
		प न	
न - सं	प प प	न - ध	ध प प
पा ऽ छे	ऽ ता ता	थे ई थे	ई ता ता
		म	
ध प ध	प म ग	प - म	- }{प प
थे इ थे	ई ता ता	थे इ थे	ई हो आ
प - प	- प प	प - प	- प ध
नं ऽ द	ऽ हो आ	नं ऽ द	ऽ हो आ
न - सं	- सनं सं	रें - रे	- रेंसं रें
नं ऽ द	ऽ दिऽ न	रा ऽ ति	ऽ नाऽ चे
म			
ग रें गं	- रे सं	रे न सं	-}{न न
मु क ति	ऽ ना चे	बं ऽ ध	न वो त
न - सं	- न न	न - सं	- न न
रं ग में	ऽ म न	मौ ज मे	ऽ धा ये
		प ध	
न - सं	प प प	न - न	ध प प
पा ऽ छे	ऽ ता ता	थे ई थे	ई ता ता
		म	
ध प ध	प म ग	प - म	-} स स II II
थे ई थे	ई ता ता	थे ई थे	ई मे रे

* * *

बाग्ला

चोख ये ओदेर छुटे चले गो
धनेर बाटे, मानेर बाटे, रूपेर हाटे, दले दले गो ।।
देखबे बले करेछे पण, देखबे कारे जाने ना मन
प्रेमेर देखा देखे यखन चोख भेसे जाय चोखेर जले गो ।।
आमाय तोरा डाकिस ना रे
आमि याब खेयार घाटे अरुप- रसेर पारावारे ।
उदास हावा लागे पाले, पारेर पाने याबार काले
चोखदुटोरे डुबिये याब अकूल सुधा-सागर-तले गो ।।

हिन्दी

आँखें उनकी धाएं चंचल रे-
धनरी राहों पे, मानरी राहों पे, रूपमेले में, ये भीड़ चली रे !!
देखने को पन है- ठानें, देखे किसे मन ना जाने,
प्रेम का दरस मिले जब ही, नयना ढारे ढारे आंसू रे !!
मुझे अब तुम पुकारो ना मैं तो जाऊं खेवन घाट रे
अरुप-रस-सागर-तीरे उदास हवा पतवार चूमें
पार जाउं वो छन जो आए नैन दाउ डूबोते चलूं,
तीर-खोई-सुधा सागर तले-रे !!

स्वरलिपि

II	प	सं	न॒	ध	प	-	-	-	-	-	-	-	ग	ग	म	प	ध	न॒
	आ	खें	ऽ	उन	की	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	धा	यें	ऽ	चं	च	ल
				सं														॥
	पध	प	सं	न	-	ध	प	सं	न॒	ध	प	-	-	-	-	-	-	-
	रेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	आ	खें	ऽ	उन	की	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
											र					स		
	न	न	-	न	न	-	न	सं	-	न	सं	न	ध	ध	सं	न	ध	-
	ध	न	री	रा	हों	पे	मा	न	री	रा	हों	पे	रू	प	मे	ले	में	ऽ

	- - -	पम ग -	ग ग ग	प ध म	पध प सं	(सं)न - ध	II
	ऽ ऽ ऽ	ऽऽ ऽ ये	भी ऽ इ	च ली ऽ	रे ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	
II{	म ध ध	ध ध न	न सं -	संरं संन -	सं - -	- - -	
	दे ऽ ख	ऽ ने ऽ	प न है	ठा ऽ ऽ	ने ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	
	सं मं गं	रं सं -	ग ग म	प - धन	पध - -	- (पम)}	I-I
	दे खें ऽ	कि से ऽ	म न ना	जा ऽ ऽऽ	नें ऽ ऽ	ऽ ऽऽ	ऽ
	ग ग म	ग ग म	प ध -	न सं -	न - न	न सं -	
	प्रे म का	द र स	मि ले ऽ	ज ब ही	नै ऽ ना	ढा रे ऽ	
	न सं नरं	सं न ध	पध प सं	(सं)न - ध	II		
	ढा रे ऽऽ	आं सू ऽ	रेऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ			
II{	स स -	र र ग	म म धप	मग म -	म म प	प प -	
	मु झे ऽ	अब तु म	पु का ऽऽ	रोऽ ना ऽ	मैं तो ऽ	जा ऊं ऽ	
	प प ध	प - धन	पध - -	पम ग -	ग म ध	(ध)प म ग	
	खे व न	घा ऽ टऽ	रेऽ ऽ ऽ	ऽऽ ऽ ऽ	अ रु प	र स ऽ	
	स र ग	ग म -}	I{न न -	न न -	न सं -	न सं -	
	सा ग र	ती रे ऽ	उ दा स	ह वा ऽ	पत वा र	चू में ऽ	
	न न न	न सां -	नं रेंसं नसं	न ध -	सं मं गं	रं सं -	
	पा र जा	ऊँ वो ऽ	छ न जो	आ ये ऽ	नै ऽ न	दो ऊ ऽ	
	स स स	र र ग	म प ध	(ध)प मग -	म म न	न ध न	
	ड़ वो ते	च लूँ ऽ	ती र खो	ई सु धा	सा ग र	त ले ऽ	
	पध प सं	(सं)न - ध	II II				
	होऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ					

***

बांग्ला

दूरदेशी सेइ राखाल छेले
आमार बाटे बटेर छायाय सारा बेला गेल खेले ॥
गाइल की गान सेइ ता जाने, सुर बाजे तार आमार प्राणे
बलो देखि तोमरा कि तार कथार किछु आभास पेले ॥
आमि तारे शुधाइ यबे 'कि तोमारे दिब आनि'
से शुधु कय, 'आर किछु नय, तोमार गलार मालाखानि
दिइ यदि तो की दाम देबे याय बेला सेइ भाब्ना भेबे
फिरे एसे देखि धुलाय बाँशिटि तार गेछे फेले ॥

हिन्दी

दूर देश का वो छैला- गोपाला
बाट मोरे पीपल-छांहें, सारी बेला रचे लीला-गोपाला !
गाए गीत क्या, सो वही जाने।
सुर वो बजे, प्राण में मेरे।
बोलो वो क्या कहना चाहे समझ यदि जरा भी पाए ॥
जानना चाहूं, जब कभी मैं
"क्या तम्हें मैं, ला दूँ-बोलो"
कहे बस यही, ना देना कुछ भी-
तेरे ही गले की माला देना।
यदि मैं दे ही-दूं, दाम क्या वो देगा?
सारी बेला सोच सोच के बीते
लौटे तो दिखा बंसी अपनी
धूलि पर ही छोड़ गया गोपाला ॥

स्वरलिपि

II	सं	-	सं न	ध ध	प	-	म म	र	-	र	स	-
	दू	र	दे	श	का	वो	छै	ला	गो	पा	ला	ऽ
	ऩ	स	-	र	म	र	म	प	-	पन	प	-
	बा	ऽ	ट	मो	रे	ऽ	पी	प	ल	छाँऽ	हें	ऽ
	न	स	न	नरं	सं न	-	ध	प	-	मग	र	-
	सा	री	ऽ	बेऽ	ला	ऽ	र	चे	ऽ	लीऽ	ला	गो
	ऩ	स	र	म	प	ध	न	-	-	र	-	सं II
	पा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ला	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
II{	न	-	न	न	-	सं	सं	-	-	-	स	प
	गा	ये	ऽ	गी	ऽ	त	क्या	ऽ	ऽ	ऽ	सो	ऽ
	प	न	न	न	-	सं	सं	-	-	-	-	-
	व	ही	ऽ	जा	ऽ	ऽ	ने	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
	सं	रं	सं	संरं	रं स	प	न	नध	न	प	प	(न)} I - I
	सुर	ऽ	वो	बजे	ऽ	ऽ	प्रा	णऽ	में	मे	रे	ऽ ऽ
	म	र	-	म	प	-	म	-	प	न	सं	-
	बो	लो	ऽ	वो	क्या	ऽ	क	ह	ना	चा	हे	ऽ
	नरं	स न	-	नध	प	-	म	मग	म	र	स	स
	सऽ	म	झ	यऽ	दि	ऽ	ज	राऽ	भी	पा	ये	गो

	ऩ	स	र	म	प	ध	न॒	-	-	र	-	सं	II
	पा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ला	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
II{	म	प	-	प	प	म	न॒ध	संन॒	-	ध	प	म	
	जा	न	ना	चा	हूं	ऽ	जऽ	बऽ	क	भी	मैं	ऽ	
	प	न॒	न॒	ध	न॒	-	धसं	न॒	-	ध	प	(ध)}	I - I
	क्या	ऽ	तु	म्हे	मैं	ऽ	लाऽ	दूं	ऽ	बो	लो	ऽ	ऽ
I{	स	ऩ	स	र	स	-	स	ऩ	स	रे	स	-	
	क	हे	बस	य	ही	ऽ	न	दे	ना	कुछ	भी	ऽ	
	ऩ	स	-	र	र	स	रेप	मप	-	र	स	(र)}	I - I
	ते	रे	ग	ले	की	ऽ	भा	ला	ऽ	दे	ना	ऽ	ऽ
I{	न	-	-	न	न	सं	नसं	-	-	-	सं	प	
	य	दि	मैं	दे	ऽ	ही	दूंऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
	पन	न	-	न	-	सं	सं	-	-	-	-	-	
	दा	म	क्या	वो	दे	ऽ	गा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
	सं	रं	सं	संरं	सं	प	न॒	प	न॒	धन॒	प	(न)}	I - I
	सा	री	बे	लाऽ	सो	च	सो	च	के	बीऽ	ते	ऽ	ऽ
	म	र	-	म-	प	-	म	प	-	न-	सं	-	
	लौ	टे	तो	दि	खा	ऽ	बं	सी	ऽ	अप	नी	ऽ	

						प					
सं॑र॑	सं॑	-	नध	प	-	म	मर	म	र	स	-
धूऽ	ली	ऽ	पर	ही	ऽ	छो	ड़	ग	या	ऽ	गो
ऩ	स	र	म	प	ध	ऩ	-	-	र	-	सं॑
पा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ला	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

II II

***

बांग्ला

हे नूतन,

देखा दिख आर-बार जन्मेर प्रथम शुभक्षण
तोमार प्रकाश होक कुहेलिका करि उद्घाटन
सूर्येर मतन ।।
रिक्ततार वक्ष भेदि आपनारे करो उन्मोचन।
व्यक्त होक जीवनेर जय,
व्यक्त होक तोमा-माझे असीमेर चिरविस्मय।
उदय दिगंते शंख बाजे, मोर चित्त-माझे
चिरनूतनेरे दिल डाक
पँचिशे वैशाख ।।

हिन्दी

हे नवीन फिर से दिखा दो,
जन्म का प्रथम शुभ क्षण ।।
तेरा प्रकाश हो, कुहक भेद दो दर्शन
सूरज सा बन ।।
रिक्तता का वक्ष भेदो, अपने को करो उन्मोचन
व्यक्त हो-जीवन का जय
व्यक्त हो तुझही में असीम का चिर विस्मय
उदय-दिगंत में शंख बजे रे
उर में मेरे, चिर नूतन को पुकारा तूने
पच्चीस बैसाख, हे नवीन ।।

स्वरलिपि

II | स -ध - ध | प - - - | प प प -न | ध प म ग- |
| हे SS S न | बी S S न | फि र से दि | खा S दो SS |
II

| प - न ध | प ग म ग | रे - सा सा- | - - - - |
| ज S न्म का | प्र थ म शु | भ S क्ष ण | S S S S |

| {ध ध न सा | सां - रें न | सां - - - | - - - - |
| ते रा S प्र | का S S श | हो S S S | S S S S |

| सं गं ग ग | रे रें र - | रें - सं - | न गं गं गं |
| कु ह क भे | S दे दो S | द र श न | सू S र ज |

| रें - सां सां | - - - }II
| सा S ब न | S S S

II | {प - - प | प - - प | प - प प | प - ध - |
| रि S S क्त | ता S S का | व S क्ष भे | दो S S S |

| प प म म | म म म -प | म ध प - | - - - -} |
| अ प ने को | क रो उ Sन | मो S च न | S S S S |

| {ध - - नि | सां - - - | नि ग र -र | सां - - - |
| व्य S S क्त | हो S S S | जी S वन का | ज य S S |

गं - - र	गं - - -	गं मं मं गं	रें सं नि ध
व्य S S क्त	हो S S S	तु झी में अ	सी म का S
		[मं मं मं मं	म - - म]
सां गं र -	सां सां - -}	{गं ग ग ग	रे - सं -
चि र वि S	स्म य S S	उ द य दि	गं त में S

गं   गं
[मं - - मं | रें - सां -]

| ध - - नि | न - सां सां | - - ध ध | ध - - न |
| शं ऽ ऽ ख | ब ऽ जे ऽ | ऽ ऽ उ र | ऽ ऽ ऽ में |

| न - सां - | - - - -} | गं गं गं गं | गं गं गं गं |
| मे ऽ रे ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ | चि र जू ऽ | त न को पु |

| ग - - - | र - सां - | I सां ग रें - | सां - नि ध |
| का ऽ रा ऽ | तू ऽ ने ऽ | प च्ची ऽ स | वै ऽ शा ऽख |

| ध -गं - रें | सां - - - ||| II
| हे ऽऽ ऽ न | वी ऽ ऽ न |

***

बांग्ला	हिन्दी
बड़ो आशा क'रे एसेछि गो, काछे डेके लओ,	बड़ी आशा बांधे आए हैं हम
फिरायो ना जननी ॥	पास रख लो, फेरो ना-जननी ॥
दीनहीने केह चाहे ना,	दीन-हीनों को कोई न चाहे,
तुमि तारे राखिबे जानि गो।	तुम ही केवल आश्रय उनके हो।
आर आमि-ये किछु चाहि ने,	आज और हम कुछ न चाहें,
चरणतले बसे थाकिब।	चरण तले आश्रय दो-
आर आमि-ये किछु चाहि ने	आज और हम कुछ न चाहें
जननी बले शुधु डाकिब।	जननी पुकार स्वीकारो-
तुमि ना राखिले, गृह आर पाइब कोथा,	तुम ना रखो तो घर अब पाएं कहाँ,
केंदे-केंदे कोथा बेड़ाब	रो-रो कहां फिरा करें
ओइ ये हेरि तमसघनघोरा गहन रजनी ॥	देखो छाई है तमस घनघटा गहन रजनी ॥

स्वरलिपि

															सा	रे	
															ब	ड़ी	
									ग				रे				
II	ग	-	ग	-	ग	मग	रे	-ग	प	म	ग	रेग	सा	सा	रे	गरे	
	आ	ऽ	शा	ऽ	बाँ	ऽऽ	धे	ऽऽ	आ	ये	है	हम	पा	स	र	खऽ	
									र					॥			
	स	-	-	-	ऩिसा	ध़	स	रे	पा	-	धप	म	ग	रेग	स	रे	II
	लो	ऽ	ऽ	ऽ	फेऽ	ऽ	रो	ऽऽ	ना	ऽ	ऽऽ	ज	न	नीऽ	ब	ड़ी	
	प	-	ध	नि	सां	-	-	निध	प	ध	प	म	ग	-	-	मग	
	ढी	ऽ	न	ही	ऽ	ऽ	नों	कोऽ	को	ई	न	चा	हे	ऽ	ऽ	ऽऽ	
					ग								ध		ग		
	रे	-	ग	सा	रे	-	-	-	सा	ऩि	प़	ध़	सा	-	रे	-	
	तु	म	ही	के	वल	ऽ	ऽ	ऽ	आ	ऽ	श्र	य	उ	न	के	ऽ	

सा	-	-	-	-	-	-	-	सा	-	ग	रे	ग	-	-	-	
हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	आ	ज	औ	र	ह	म	ऽ	ऽ	
				रे								ऩि				
प	म	ग	रे	ध	-	-	-	सा	ऩि	ध़	ऩि	रे	-	-	-	
कु	छ	न	चा	हे	ऽ	ऽ	ऽ	च	र	ण	त	ले	ऽ	ऽ	ऽ	
				ध़												
सा	ऩि	ध़	ऩि	प़	-	-	-	सा	-	ग	रे	ग	-	-	-	
आ	ऽ	श्र	य	दो	ऽ	ऽ	ऽ	आ	ज	औ	र	ह	म	ऽ	ऽ	
ग				रे				ध				ध				
प	म	ग	रे	ध	-	-	-	नि	ध	प	ध	रे	-	-	-	
कु	च	न	चा	हें	ऽ	ऽ	ऽ	ज	न	नी	पु	का	ऽ	ऽ	र	
सां	नि	ध	निध	प	-	-	-	ध	नि	सां	-	प	प	प	-	
स्वी	ऽ	का	ऽऽ	रो	ऽ	ऽ	ऽ	तु	म	ना	ऽ	र	खो	तो	ऽ	
								रे								
ध	नि	प	-	प	-ग	रे	रे	ध	-	-	-	-	-	-	-	
घ	र	अ	ब	पा	ऽऽ	यें	क	हां	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
प	म	ग	रे	सा	ऩि	ध़	ऩि	नि रे	-	-	गरे	सा	-	-	-	
रो	ऽ	रो	ऽ	क	हाऽ	ऽ	फि	ऽरा	ऽ	ऽ	ऽक	रें	ऽ	ऽ	ऽ	
प़	-	-	-	सा	-	-	-	रे	-	-	-	ग	-	-	-	
दे	ऽ	ऽ	ऽ	खो	ऽ	ऽ	ऽ	छा	ऽ	ई	ऽ	है	ऽ	ऽ	ऽ	
ग								ध								
प़	म	ग	रे	सा	ऩि	ध़	-	ध	प	म	ग	रेग	सा	सा	रे	II II
त	म	स	ध	न	घ	टा	ऽ	ग	ह	न	र	जऽ	नी	ब	ही	

***

बांग्ला

पुरानो सेइ दिनेर कथा भुलबि कि रे हाय।
ओ सेइ चोखेर देखा, प्राणेर कथा, से कि भोला याय।
आय आर-एकटिबार आय रे सखा, प्राणेर माझे आय।
मोरा सुखेर दुखेर कथा कब, प्राण जुड़ाबे ताय।
मोरा भोरेर बेला फूल तुलेछि, दुलेछि दोलाय
बाजिए बाँशि गान गेयेछि बकुलेर तलाय।
हाय माझे हल छाड़ाछाड़ि, गेलेम के कोथाय
आबार देखा यदि हल, सखा, प्राणेर माझे आय ॥

हिन्दी

बीते बिताए दिनों की बातें भूलूँ कैसे हाय
वो तो देखी दिखाई
मन की बातें भुलाई न जाएं
आओ बस एक बार आओ साथी प्राण में समाओ,
हम सुख-दुख की
बातें करें हल्का हो ये मन।
हम भोर भोर जो फूल चुने थे झूला थे झूले
बजा बंसी गीत गाए थे बकुल के तले
अचानक हम बिछड़ गए, गए कोई कहीं
फिर ये मिलन जो अब हो गया साथी प्राण में समाओ ॥

स्वरलिपि

II	सा	सा	-नि़	सा	ग	-	रे	सा	-	रे	ग	-
	बी	ते	ऽऽ	बि	ता	ए	दि	नों	की	बा	तें	ऽ
	सा	-	सा	ग	प	-	ध	-	सां	सां	सां	-
	भू	लूँ	ऽ	कै	से	ऽ	हा	ऽ	य	वो	तो	ऽ
	ध	प	-	ग	सा	-	रे	सा	-	रे	ग	-
	दे	खी	ऽ	दि	खा	ई	म	न	की	बा	तें	ऽ

प़	प़	प़	ध़	ध़	ऩिसरे	सा	-	-	-	प	-
भु	ला	ऽ	ई	ऽ	ऽऽन	जा	ए	ऽ	ऽ	आ	ओ
प	ग	-	ग	सा	-	रे	-	सा	रे	ग	-
बस	ए	ऽ	क	बा	र	आ	ओ	ऽ	सा	थी	ऽ
प	ग	-	सा	ग	-प	ध	-	-	सां	सां	-
प्रा	ण	में	स	मा	ऽऽ	ओ	ऽ	ऽ	ह	म	ऽ
ध	प	-	ग-	सा	-	रे	सा	-	रे	ग	-
सु	ख	ऽ	दुख	की	ऽ	बा	तें	ऽ	क	रें	ऽ
प़	-	प़	ध़	ध़	ऩिसरे	सा	-	-	-	सा	सा
ह	ल	का	हो	ऽ	ऽऽये	म	न	ऽ	ऽ	ह	म
सा	सा	-ऩि	सा	ग	-	रे	-	सा	रे	ग	-
भो	र	ऽभो	र	जो	ऽ	फू	ल	चु	ने	थे	ऽ
सा	सा	सा	ग	रे	म-	ग	-	-	-	-	-
झू	ला	ऽ	थे	झू	ऽऽ	ले	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
सां	सां	सां	ध	प	-	ग	-रे	सा	रे	ग	-
ब	जा	ऽ	बं	शी	ऽ	गी	ऽत	गा	ए	थे	ऽ
प़	प़	-	धऩि	सर	रे	सा	-	-	-	प	-
ब	कु	ल	केऽ	ऽऽ	त	ले	ऽ	ऽ	ऽ	हा	य
प	ग	-	प-	ध-	-	प	ध	-	प	ध	-
अ	चा	ऽ	नक	हम	ऽ	बि	छु	ड़	ग	ये	ऽ

सां	सां	-	सां	निसां	-रे	सां	-	-	प	प	-	
ग	ए	ऽ	को	ऽई	ऽक	हीं	ऽ	ऽ	फि	र	ये	
ध	ध	सा	नि	रे्स	-	ध	प	-	ग	प	-	
मि	ल	न	जो	अ	ब	हो	ग	या	सा	थी	ऽ	
ग	रे	रे	ग	रे	गरे	सा	-	-	-	-	-	II II
प्रा	ऽ	ण	में	ऽ	सऽ	मा	ऽ	यें	ऽ	ऽ	ऽ	

***

बांग्ला

दुजने देखा हल मधुयामिनी रे
केन कथा कहिल ना, चलिया गेल धीरे ॥
निकुंजे दखिनाबाय करिछे हाय-हाय,
लतापाता दुले दुले डाकिछे फिरे-फिरे ॥
दुजनेर आंखिबारि गोपने गेल बये
दुजनेर प्राणेर कथा प्राणेते गेल रये।
आर तो हल ना देखा, जगते दोहें एका
चिरदिन छाड़ाछाड़ि यमुनातीरे ॥

हिन्दी

दोनों के नयन मिले, मधुयामिनी में-रे ॥
बातें कुछ कहे बिना चले वो गए धीरे मधुयामिनी में-रे ॥
निकुंज में दक्षिन बयार, कहे रे, हाय हाय
लता गुल्म झूम झूम, पुकारें बार-बार मधुयामिनी में-रे ॥
दोनों के नयन नीर छुप छुप बहे-डहे
दोनों के मन की बातें मन ही मन में रहे।
फिर तो मिलन बिना अकेले जग में दोनों
सदा ही बिछड़े रहे यमुना तीरे मधुयामिनी में-रे ॥

स्वरलिपि

स ||
सां | नि ध II| प पधप मप| म ग - | - - - | - ग म |
दो | नो के | न यऽऽ ऽन| मि ले ऽ |ऽ ऽ ऽ| ऽ म धु|

| प -न -न | ^नि^रें सारेंसां सांनि| ^ध^नि नि - | - - धप |
| या ऽऽ ऽऽ| मि नीऽऽ मेऽ | रे ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽऽ |

| प ध नि | ध नि - | धनिसा निसांनि - | ध प धप|
| बा तें ऽ | कु छ ऽ | कहेऽ ऽऽऽ ऽ | बि ना ऽऽ|

म
| प - म | ग ग -म | प प -सां| सां नि -|
| ऽ ऽ च | ले वो ऽऽ | गये ऽऽ | थी रे ऽ|

नि
| - - - | नि नि - | नि -ध -नि| रे सारेसां -नि|
| ऽ ऽ ऽ | म धु ऽ | या ऽऽ ऽऽ | मि नीऽऽ ऽऽ|

ध सां
| नि - - | - - धप | -पध पधनसां सां| सां नि -ध| II
| मे ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽऽ | रेऽ ऽऽऽऽ दो| नों के ऽऽ|

[नि निध प] नि नि
- - -II{प प - | नि - नि | सां सां निंसारें| सारेंसां - - |
ऽऽऽ | नि कुं ज | में ऽ ग | क्षि ण ऽऽऽ | बऽया ऽ ऽ |

सं ध ध
| - - सां| रे सारेसां - | नि -ध प| (पध निसां -न)}|
| ऽ र क | हे रेऽऽ ऽ | हा ऽ ऽय| हाऽ ऽऽ ऽय |

प
| ध नि नि| प प -म| ग ग म | प प - | ध नि -|
| हा ऽ य | ल ता ऽऽ| गु ऽ ल्म| झू ऽ म | झू ऽ म|

ध   प
| नि ध प | ध पधप - | म म -ग | प म - |
| ऽ ऽ पु | का रेऽऽ ऽ | बा ऽ ऽर | बा र ऽ |

| - - - | नि नि - | निसांनि ध नि | रें सरेसां -नि |
| ऽ ऽ ऽ | म धु ऽ | याऽऽ ऽ ऽ | ऽ मिनीऽऽ ऽऽ |

सं
| नि - - | - - -धप | -पध निसां सं | सां नि ध | II
| में ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽऽ | रेऽ ऽऽ दो | नों के ऽ |

- - - II | - - सां | प प - | प प - | प प - |
ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ दो | नों के ऽ | न य न | नी ऽ र |

| - - प | ध नि नि | ध नि - | ध नि - |
| ऽ ऽ छु | प छु प | ब हे ऽ | इ हे ऽ |

म
| - - ध | प ग म | प प सां | सां नि - |
| ऽ ऽ दो | नों के ऽ | म न की | बा तें ऽ |

| - - नि- | नि नि - | निसां धनि धनिसां | सां नि सां |
| ऽ म नऽ | ही ऽ ऽ | मन मेंऽ ऽऽऽ | र हें ऽ |

नि नि
{| नि -ध -प | नि - नि | सा सा निसारें | सांनि सां - |
| फि ऽर ऽतो | ऽ ऽ मि | ल न ऽऽऽ | बिना ऽ ऽ |

सा   सां
| - - सां | रें सारेंसा - | नि निध प | ध नि (सां) | } [-]
| ऽ ऽ अ | के लेऽऽ ऽ | प्रा ऽण ये | दो नों ऽ | ऽ

ध
{ - - प | प ग -म | प प सां | सां -नि - | }
ऽ ऽ स | दा ही ऽऽ | वि छु ड़े | र ऽहे ऽ |

- - नि	नि नि -	निसंनि -ध -नि	सां - -
ऽ ऽ य	मु ना ऽ	तीऽऽ ऽरे ऽऽ	ऽ ऽ ऽ

- - -	नि नि -	निसनि -ध -नि	रें सारेंसां -नि
ऽ ऽ ऽ	म धु ऽ	याऽऽ ऽऽ ऽ	मि नीऽऽ ऽऽ

ध

नी - -	- - धनिध	प धनिसां सां	सां नि -ध	II II
में ऽ ऽ	ऽ ऽ रेऽऽ	ऽ ऽऽऽ दो	नों के ऽऽ	

***

बांग्ला	हिन्दी
तब प्रेम सुधारसे मेतेछि,	तेरी प्रेमसुधा धारा में
डूबछे, मन डूबेछे ॥	मत्त मैं डूबी हूं, मन डूबे रे ॥
कोथा के आछे नाहि जानि	कौन कहाँ है मैं न जानूं
तोमार माधुरीपाने मेंतेछि	माधुरी तेरी पिये री मत्त मैं
डुबेछे मन डूबेछे ॥	डूबी हूं, मन डूबे रे ॥

स्वरलिपि

		0	3
म- -ध	II {	ग - - म	ध नि सा सा
तेऽ ऽऽ		री ऽ ऽ प्रे	म सु धा धा

+	2	0	3
सारेंसां नीसां - -	(- - म -प) }	- - नी ध	नी - - - - - - धम ध
राऽऽ ऽऽ ऽ में	ऽ ऽ ते ऽरी	ऽ ऽ म त्त	मैं ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ डूऽ बी

निसां रसां नीसां -	- नी धम -	ध - - नी	- - निसंर नि
हूँऽ ऽऽ ऽऽ ऽ	ऽ म नऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ डू	ऽ ऽ ऽऽऽ बे

ध
| म - - - | गम गमप | II -
| रे ऽ ऽ ऽ | ऽऽ ऽऽऽ "तेऽ ऽऽ" |

II | - - - - |
| ऽ ऽ ऽ ऽ |

0 3 + 2
| {ध ध पम ध | नि - सा - - | नि - सा | रसा निसा नि- | } I
| कौ ऽ ऽन क | हाँ ऽ है ऽ ऽ | मैं ऽ ने | जाऽ ऽऽ नूंऽ |

0 3 + 2 0
| - गग ग ग | धम -ध नि सा | निसा -ग रेस निसा | - - निध | नि - - -
| ऽ माधु री ते | रीऽ ऽऽ पी ऽ | एऽ ऽऽ रीऽ ऽऽ | ऽ ऽ मत्त | मैं ऽ ऽ ऽ

+ + 2 0
| - - धम ध | निसा रसा निस - | - नि धम - | ध - - नि |
| ऽ ऽ डू बी | हूंऽ ऽऽ ऽऽ ऽ | ऽ म नऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ डू |

3 + 2
| - - निसरें नि | धम - - - | गम गमप म- पऽ | II II
| ऽ ऽ ऽऽऽ वे | रे ऽ ऽ ऽ | ऽऽ ऽऽऽ तेऽ ऽऽ |

* * *

बांग्ला

दे लो, सखी, दे पराइये गले साथेर वकुलफूलहार।
आधफुट जूंहिगुलि यतने आनिये तूलि
गांथि गांथि साजाये दे मोरे कवरी भरिये फूलभार।
तुले दे लो चंचल कुंतल, कपोले पड़िछे बारेबार।
आजि एत शोभा केन, आनंदे विवशा येन
बिम्बाधरे हासि नाहि धरे, लावण्य झरिया पड़े धरातले,
सखी तोरा देखे या, देखे या
तरुण तनु एत रूपराशि वहिते पारे ना बुझि आर।

हिन्दी

देरी सखी दे- डाल गले मेरे, मनभाइ
बकुलफूलहार
अधखिली जूही-कली जतन से चुन ले,-
गूंथ-हार दो शृंगार बेणी बांध, फूल-डाल॥
सरका दे ये चंचल कुंतल
कपोल, छेड़ोना बार-बार॥
आज ऐसी शोभा कैसी आनंद विवश हो जैसे
बिम्बअधर-में हँसी न समाए
लुनाई झरे, झरि, जाए धरातल पे।
सखी सब-मिल आओ देख जाओ
तन ये तरुण, ये रूप-राशि
ढो न सकूं-लगे भार।

स्वरलिपि

II{ म र म प	प सं - - - ‖	संरं संनं ध- प-	पध पम धप मग
दे री स खी	दे ऽ ऽ ऽ	डाऽ लग लेऽ मेरे	मनभा ईब कुल फूल
र - - -	- - -(म)}I-I	र म र स	र - सन स
हा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ रऽ ऽ	अ ध खि ली	जूं ही कऽ ली
र म म म	प प प पध	म प न सं	संरं ꠳नं ध प
ज त न से	चु न ले ऽऽ	गूं थ हा र	ढोऽ शृंऽ गा र
पध पम धप मग	र - - -	रन न न न	नसं संसं सं संसं
वेऽ णीबां ऽध फूल	डा ऽ ऽ लऽ	सर का दे ये	चंऽ चल कुं तल
संरं संन रंसं नध	मा प - र ग	II	
छेड़ो नाऽ ऽऽ बार	डा ऽ ऽ र		
[गंरं सं रंसं]			[रं]
II{ स प न न	सं नरं संन सं	सं नरं सं न	सं नसंरं रं रंगं }
आ ज ऐ सी	शो भाऽ कैऽ सी	आ नंऽ द वि	व शऽहो जै सीऽ
म न सं सं	संरं संन ध नध	प धप म ध	ध नध ध धप
बिं बअ धर में	हंसी नस मा येऽ	लू नाऽ ई झरे	झ रीऽ जा येऽ
म मध प मग	रम म म मग	रग ग ग र	सर र र -
ध राऽ तल पेऽ	सऽ खी स बऽ	मिऽ ल आ ओ	देऽ खि जा ओ
रम र म प	प सं सं - -	संरं संन ध प	पध पम धप मग
तऽ न ये त	रूऽ ण ऽ ऽ	येऽ रूप राऽ शि	ढोऽन नस कूं ऽ लगे
रे - - -	- - - गम	II II	
भा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ र ऽऽ		

***

बांग्ला

फूले फूले ढले ढले वहे किबा मृदु वाय,
तटिनी हिल्लोल तुले कल्लोले चलिया याय।
पिक किबा कुंजे कुंजे कुहु कुहु कुहु गाय,
की जानि किसेरइ लागि प्राण करे हाय-हाय॥

हिन्दी

झूम झूम फूल फूल पे- मचल रही मृदुल- बयार॥
नदिया हिंडोला झूले
छलछलाती बहे रे धारा
कोयलिया कुंज-कुंजन
कूके-कुहु-कुहु-गाए-
न जानू किस कारण-मेरा
जियरा अकुलाए हाय॥

स्वरलिपि

	स												
II {	म	-	म	प	धपम	प	ध	संनसं	ध	प	धपम	प	
	झू	ऽ	म	झू	ऽऽऽ	म	फू	ऽऽऽ	ल	फू	ऽऽल	पे	
									रे				
	ध	नधप	म	म	रे	स	स	रे	म	म	-	-	}
	म	च लऽ	ऽ	र	ही	ऽ	मृ	दुल	ब	या	ऽ	र	
	स	-	स	सरेम	-	म	म	गमप	प	म	मपध	प	
	न	दि	ऽ	याऽऽ	ऽ	हिं	डो	ऽऽऽ	ला	झू	ऽऽऽ	ले	
	म	-	मग	म	गमध	प	म	ग	म	रे	-	स	
	छ	ल	छऽ	ला	ऽऽऽ	ती	ब	हे	रे	धा	ऽ	रा	
	प												
	सं	-	नसंरं	सं	न	धपध	न	-	धनसं	न	धन	प	}
	को	ऽ	यऽऽ	लि	ऽ	याऽऽ	कुं	ऽ	जऽ	कुं	जऽ	न	

सं	ध	म	सं	ध	म	सं	न	नध	प	-	स	
कू	ऽ	के	कू	ऽ	हू	कू	ऽ	हूऽ	गा	ऽ	ये	
स	म	म	पम	पम	प-	ध	संनि	संध	पधप	म	प	
न	ऽ	जा	नूऽ	ऽऽ	किस	का	रऽऽ	णऽ	मेऽऽ	रा	ऽ	
ध	नधप	म	म	रे	स	सा	रे	सरम	म	-	म	II II
जि	यऽऽ	रा	अ	कु	ऽ	ला	ये	ऽऽऽ	हा	ऽ	य	

***

बांग्ला

प्रमोदे ढालिया दिनु मन, तबू प्राण केन काँदि रे।
चारि दिके हासिराशि, तबू प्राण केन काँदि रे॥
आन सखी, वीणा आन् प्राण खुले कर् गान
नाच्, सबे मिले घिरि घिरि घिरिये, तबू प्राण केन काँदे रे॥
वीणा तवे रेखे दे, गान आर गास ने केमने याबे वेदना ।
कानने काटाई राति, तुलि फूल माला गाँथि,
जोछना केमने फुटेछे तबु प्राण केन काँदे रे॥

हिन्दी

उमंग में डूबो डालें मन तो भी प्राण अब क्यों रोए रे?
खुशहाली चहुंओर तो-भी प्राण अब क्यों रोए रे॥
ला री सखी वीणा-ला
भर प्राण गाए- जा नाचो सब-मिल घेर-घिर-घिर-रे॥
वीणा अब रख दे, गीत मत गा रे कैसे मिटे ये दुख मेरे
फिरूं रैन वन-वन फू ल चुन हार बुन
चांदनी कैसी है खिली रे
तो भी प्राण अब क्यों रोए रे॥

स्वरलिपि

II	सा सागग ग	ग गम रे गप	प- - - -	- - - -	
	उ मंऽ ग में	डु बोऽ डा लेंऽ	मन ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	
	पधन - - ध-	प - - धप	म - - पम	-ग - - रे-	
	तोऽऽ ऽ ऽ ऽ	भी ऽ ऽ ऽऽ	प्रा ऽ ऽ ऽऽ	ऽऽ ऽ ऽ ण	
	सा -रे सा ऩि	प़ - ऩ -	सा - - -	- - - -	
	अ बऽ कि ऊं	रो ऽ एं ऽ	रे ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	
	म प				
{	ग़ म प सा	न धनिध प प}	प ध ऩ - - -ध	प - - धप	
	खु श हा ली	च हूंऽऽ ओ र	तो ऽ ऽ ऽ ऽ ऽऽ	भी ऽ ऽ ऽऽ	
	म - - पम	-ग - - -रे	सा -रे सा ऩि	प़ - ऩ -	
	प्रा ऽ ऽ ऽऽ	ऽऽ ऽ ऽ णऽ	अ ऽब कि यूं	रो ऽ यें ऽ	
	स - - -	- - - -	II		
	रे ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ			
		नि			
II	{प - नि नि	सा निसरे स -	सा - निसरे सरेस	निध प नि}	
	ला रे स खी	पी णाऽऽ ला ऽ	भ र प्राऽऽ ऽऽण	गा ये जा	
	सां - सां सां	नि निध प नि	ध संनि ध निध	प - - -	
	ना चें स ब	मि लऽ घे र	घिर रऽ घि रऽ	रे ऽ ऽ ऽ	
	पधऩि - - ध	प - - धप	म - - पम	-ग - - -रे	
	तोऽऽ ऽ ऽ ऽ	भी ऽ ऽ ऽऽ	प्रा ऽ ऽ ऽऽ	ऽ ऽ ऽ ण	
	सा -रे सा -ऩि	प - ऩ -	सा - - -	- - - -	II
	अ ऽब कि ऊंऽ	रो ऽ यें ऽ	रे ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	

				ध	
II	पम गमग रे	ग पम प -	नि ध नि सानि	न ध प -	
	वीणा अऽऽ ब	र खऽ दे ऽ	गी त म ऽत	गा ऽ रे ऽ	
{	ग -म प धप	म पम ग रेग	स -ग रेग -म	ग - - -	}
	कै ऽऽ से ऽऽ	मि टेऽ ये ऽऽ	दु ऽख मेऽ ऽऽ	रेऽ ऽ ऽ ऽ	
			नि		
	प प नि नि	निसा - सा सा	सा सा सारेसा -	नि निध प नि	
	फि रूं रै न	बऽ न ब न	फू लऽ चु न	हा रे बिऽन ऽ	
{	सा सा ऩिसारे सा	नि- ध- प ध	नि - संनि	ध निध प -	}
	चां द नीऽऽ कै	सीऽ ऽऽ है खि	ली ऽ ऽऽ	ऽ ऽऽ रे ऽ	
	पधनि - - ध	प - - धप	म - - पम	-ग - - रे	
	तो ऽ ऽ ऽऽ	भी ऽ ऽ ऽऽ	प्रा ऽ ऽ ऽऽ	ऽ ऽ ऽ ण	
	सा रे सा नि	प़ - ऩि -	सा - - -	- - - -	II II
	अ ब कि ऊं	रो ऽ ये ऽ	रे ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	

***

बांगला

सहे ना यातना
दिवस गणिया गणिया बिरले
निशिदिन बसे आछि शुधु पंथ पाने चेये
सखा हे एले ना।
सहे ना यातना
दिन याय रात याय सब याय
आमि बसे हाय !
देहे वल नाइ, चोखे घूम नाइ
शुकाये गियाछे आँखिजल।
एके एके सब आशा झ'रे झ'रे पड़े याय
सहे ना यातना ॥

हिन्दी

सही न जाए रे यातना
दिवस गिन गिन अकेली
बात जो हती रही दिन रैन यों ही बैठी ॥
साथी हो आये ना ॥
दिन बीते रात ढले
सब खोई मैं बैठी हाय
देहा बल हारे टूटे नैनन नींद
सूखे रे मेरे नयन-नीर
धीरे धीरे सारी आशा
झरी मरी टूटी हाय ॥

स्वरलिपि

II	प	मपम	ग	रे	सरे	ऩ	स	-	ग	म	प	-	प	ध	न॒	ध
	स	हीऽऽ	न	ऽ	जाऽ	ये	रे	ऽ	या	त	ना	ऽ	दि	व	स	ऽ
	प	ध	न॒	ध	पध	मप	ग	-	ग	गप	म	मप	ग	गरे	स	सरे
	गि	न	गि	न	अऽ	केऽ	ली	ऽ	बा	टऽ	जो	हऽ	ती	ऽऽ	र	हीऽ

	स ऩिस धृ ऩि	स ऩसऩ धनधप़	स रेगम ग -	स रेगम म -	II
	दि नऽ रै न	यों हीऽऽ बैऽऽठी	सा थीऽऽ हो ऽ	आ येऽऽन ऽ	
II	प- - सं -	सं - सं -	संरेंसं - सं -	नि निध प पधप	
	दिन्ऽ बी ते	रा त ढ ले	सऽऽ ब खो ई	मैं ऽऽ बै ठीऽऽ	
	म प ग -	ग ग गमप-	मपम - ग गरे	सऩि रे स -	
	हा ऽ ऽ य	दे हा बऽऽल	हाऽऽ रे टू टेऽ	नय न नीं द	
	ग म प -	प ध धऩ ध	प धप म पम	ग - - -	
	सू खे रे ऽ	मे ऽ रेऽ ऽ	न ऽऽ य नऽ	नी ऽ ऽ र	
	प - (प)सं -	प - (प)सं -	संगंरं - - -	(नि)सं - नि संनि	
	धी ऽ रे ऽ	धी ऽ रे ऽ	सऽऽ ऽ ऽ री	आ ऽ शा ऽऽ	
	ध न सं रें	सं न ध प	प न ध सं	न - - -प	II II
	झ ऽ री ऽ	म ऽ री ऽ	टू ऽ टी ऽ	हा ऽ ऽ य	

***

बांग्ला

गहन कुसुमकुंज- माझे, मृदुल मधुर बंशि बाजे,
विसरि त्रास लोकलाजे सजनी, आओ-आओ लो ।।
पिनह चारु नील वास, हृदये प्रणयकुसुमराश,
हरिणनेत्रे विमल हास, कुंजबनमें आओ-लो ।।
ढाले कुसुम सुरभभार, ढाले विहगसुरवसार,
ढाले इन्दु अमृतधार विमल रजतभाति रे ।
मंद मंद भृंग गूंजे, अयुत कुसुम कुंजे कुंजे
फुटल सजनी पुंजे पुंजे वकुल यूथि जाति रे ।।
देख, लो सखि, श्यामराय नयने प्रेम उथल जाय
मधुर वदन अमृतसदन चन्द्रमाय निंदिछे !
आओ आओ सजनिबृंद, हेरब सखि श्रीगोविंद
श्यामको पदारबिंद भानुसिंह बंदिछे ।।

हिन्दी

गहन कुसुम कुंजमाझ, मृदुल मधुर बन्सी बाजे
विसरि त्रास लोक-लाज सजनी आओ आओ हो ।।
पहन चारु नील वसन, हिय में प्रणय कुसुम राशि
हिरण नेत्र बिमल हास कुंज बन में आओ हो
ढाले कुसुम सुरभी धारा, ढाले विहग सु-रव -सार,
डारे इन्दु अमृत वारि विमल रजत भाति-रे ।।
मंद-मंद भृंग गूंजे अयुत कुसुम कुंजे कंजे
खिलत सजनी, पुंज-पुंजे बकुल -जूही-जाति रे ।।
देख हो सखी साँवरा यही नयन प्रेम उछलि धाए
मधुर वदन अमृत सदन यही लजाए इंदु-रे ।।
आओ आओ स्वजनवृंद, हेरो हो सखी श्री गोविन्द
श्याम के पदारविंद भानुसिंह वन्दे रे ।।

स्वरलिपि

	[ध न नध]				
	ग				
II	प प प	प प धप	म प म	ग र ग	
	ग ह न	कु सु मऽ	कुं ऽ ज	मा ऽ झ	
	ग		ध		
	प प प	प प ध	न - न	न - न	
	मृ दु ल	म धु र	बं ऽ सी	बा ऽ जे	
	न		प		
	सं सं सं	सं - सं	सं - सं	सं रं सं	
	वि स रि	त्रा ऽ स	लो ऽ क	ला ऽ ज	
	न न न	न संन ध	ध नध न	संरंसं - न	I [ ] I
	स ज नी	आ ऽऽ ओ	आ ऽऽ वो	होऽऽ ऽ ऽ	
	[ध न नध]	ध			
II{	प प प	प प ध	धन - न	न - न	
	प हि न	चा ऽऽ रू	नी ऽ ल	व स न	
	न				
	सं सं संन	सं सं रं	सं सं सं	न - संन}	
	हि य मेंऽ	प्र ण य	कु सु म	रा ऽ शऽ	
I{	ध रं सं	रं - गंरं	सं रं सं	न - न}	
	हि र ण	ने ऽ त्रऽ	वि म ल	हा ऽ स	
	न - न	न नसं ध	ध नध न	नरं सं न	I [ ] I
	कुं ऽ ज	व नऽ में	आ ऽऽ ओ	होऽ ऽ ऽ	
II	प - प	प प धप	म प म	गम र ग	
	ढा ऽ ले	कु सु मऽ	सु र भी	धाऽ ऽ र	

	प	-	प	प	प	प	प	ध	ध	ध	-	ध	
	ढा	ऽ	ले	वि	ह	ग	सु	र	व	सा	ऽ	र	
	ध						प						
	सं	-	सं	सं	-	सं	सं	सं	सं	सं	नरं	सं	
	डा	ऽ	रे	इं	ऽ	दू	अ	मृ	त	वा	ऽऽ	रि	
										ध			
	न	न	नध	प	प	प	ध	-	न	प	-	-	
	वि	म	लऽ	र	ज	त	आ	ऽ	ति	रे	ऽ	ऽ	
	[ध	-	न]				ध						
I{	प	-	ध	प	-	ध	न	-	न	न	-	न	
	मं	ऽ	द	मं	ऽ	द	भृं	ग	गृं	ऽ	ऽ	जेऽ	
	सं	सं	न	सं	सं	रं	संरं	सं	सं	न	-	नसं	}
	अ	यू	त	कु	सु	म	कुंऽ	ज	कुं	ऽ	ऽ	जेऽ	
{	ध	रं	सं	रं	रं	गंरं	सं	रं	सं	नसंन	-	न	}
	खि	ल	त	स	ज	नीऽ	पुं	ऽ	जे	पुंऽऽ	ऽ	जे	
	न	न	न	न	संन	ध	ध	नध	न	संरं	सं	न	I [ ] I
	व	कु	ल	जूं	ऽऽ	ही	जा	ऽऽ	ति	रेऽ	ऽ	ऽ	
						प							
II	प	-	प	प	प	ध	पम	प	म	गम	र	ग	
	दे	ख	हो	स	खी	ऽऽ	सां	व	रा	यही	ऽ	ऽ	
	प	प	प	प	-	प	प	ध	ध	ध	-	-	
	न	य	न	प्रे	ऽ	म	उ	छ	लि	धा	ऽ	ये	
	सं	सं	सं	सं	सं	सं	पसं	सं	सं	संरं	सं	सं	
	म	धु	र	ब	द	न	अ	मृ	त	स	द	न	

	न	-	नध	प	-	ध	धप	-	-	धप	-	-	
	य	ही	लऽ	जा	ऽ	ये	इं	ऽ	दू	रे	ऽ	ऽ	
	[ध	-	न]										
I{	प	-	ध	प	-	ध	न	न	न	न	-	न	
	आ	ऽ	ओ	आ	ऽ	ओ	स्व	ज	न	वृं	ऽ	द	
	न		सं										
	सं	न	न	सं	सं	रं	संरं	सं	सं	न	-	संन	}
	हे	रो	हो	स	खी	ऽ	श्रीऽ	गो	ऽ	विं	ऽ	दऽ	
{	ध	रं	सं	रं	-	गं	रं	सं	सं	न	-	सन	}
	श्या	ऽ	म	को	ऽ	प	दा	ऽ	र	वृं	ऽ	दऽ	
	न	-	न	न	सं	ध	ध	नध	न	संरं	सं	न	II [ ] II
	भा	ऽ	नु	सिं	ऽ	ह	वं	दिऽ	ऽ	रेऽ	ऽ	ऽ	

***

बांगला (चित्रांगदा)

संत्रांसेर विह्लता निजेरे अपमान,
संकटेर कल्पनाते होयो ना म्रियमाण।
मुक्त करो भय, आपना-माझे शक्ति धरो, निजेरे करो जय॥
दुर्बलेरे रक्षा करो दुर्जनेरे ह्ानो,
निजेरे दीन निःसहाय येन कभू ना जानो।
मुक्त करो भय, निजेर परे करिते भर ना रेखो संशय।
धर्म यबे शंखरबे करिबे आह्वान
नीरव हये नम्र हये पण करियो प्राण।
मुक्त करो भय, दुरुह काजे निजेरइ दियो कठिन परिचय॥

हिन्दी

संत्रास से डर जाना निज का अपमान
संकट की कल्पना से थके क्यों ये प्राण - हो प्राण।
मुक्त करो भय, अपने बीच शक्ति धरो
अपना हो जय, हो जय॥
दुर्बलों की रक्षा करो, दुर्जन संहारो
खुद को दीन असहाय, कभी भी न मानो
मुक्त करो भय, अपने पे भरोसे में
न करो संशय हो जय!
शंखध्वनि धर्म की जो करे आह्वान
नीरव हो नम्र बने- पण धरो ये प्राण
मुक्त करो भय,
कठिन काम खुद ही करो
अपने आनबान तू मान॥

स्वरलिपि

II

सं	-	सं	न	-	न	ध	-	ध	धप	प	-
सं	ऽ	ऽ	त्रा	स	से	इ	र	जा	ऽ	ना	ऽ
स	र	ग	ग	-	र	स	-	-	-	-	-
नि	ज	का	ऽ	अ	प	मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न
स											
ग	-	ग	ग	-	ग	ग	-	ग	रे	-	स
सं	ऽ	क	ट	की	ऽ	क	ऽ	ल्प	ना	ऽ	से
स	र	ग	ग	-	र	प	-	-	प	-	-
थ	के	ऽ	क्यों	ऽ	ये	प्रा	ऽ	ण	हो	ऽ	ऽ
स	र	ग	म॑	प	ध	धप	-	-	-	-	-
प्रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ण
ध											
सं	-	सं	सं	न	रं	सं	-	-	-	-	-
मु	क्	त	क	रो	ऽ	भय	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
सं	गं	गं	रं	-	रं	सं	-	सं	न	-	ध
अ	प	ने	बी	ऽ	च	श	ऽ	क्ति	ध	रो	ऽ
ध	सं	न	न	-	ध	प	-	-	-	-	-
अ	प	नी	हो	ऽ	ऽ	जय	ऽ	ऽ	हो	ऽ	ऽ
						ध					
स	र	ग	म॑	प	ध	प	-	-	-	-	-
ज	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	य	जय	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

प	-	ग	प	-	ध	प	-	ग	प	-	ध
दु	र	व	लों	ऽ	की	र	क	क्षा	क	ऽ	रो
पध	-	ध	प	म॑	प	प	ध	-	-	-	-
दुर	ऽ	ज	न	सं	ऽ	हा	रो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	न	न	धन	-	न	धन	-	ध	ध	प	प
खु	द	को	दीऽ	ऽ	न	अ	स	ऽ	हा	ऽ	य
प	नी	नी	संन	-	न	ध	-	-	-	-	-
क	भी	ऽ	भी	ऽ	न	मा	नो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
सं	-	सं	सं	न	रं	सं	-	-	-	-	-
मु	कृ	त	क	रो	ऽ	भ	य	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
सं	गं	ग	रें	-	रें	सं	सं	सं	न	-	सं
अ	प	ने	पे	ऽ	भ	रो	ऽ	से	भें	ऽ	ऽ
ध	सं	नि	(ध)न	-	ध	प	प	प	प	-	-
न	क	रो	ऽ	रां	ऽ	श	य	ऽ	ह	ऽ	ऽ
स	र	ग	म॑	प	ध	(ध)प	-	-	-	-	-
हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ज	य	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	-	ग	प	म॑	ध	प	-	ग	प	म॑	ध
शं	ऽ	ख	ध्व	ऽ	नी	ध	ऽर	म	की	ऽ	जो
प	प	ग	प	प	म	ध	-	-	-	-	-
क	रे	ऽ	आ	ऽ	ह	वा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न

न												
प	ध	न	न	-	न	धन	-	न	न	ध-	प	
नी	ऽ	र	व	हो	ऽ	नऽ	ऽ	प्र	ब	नेऽ	ऽ	
प	न	नध	ध	न	ध	प	-	-	-	-	-	
प्र	ण	धऽ	रो	ऽ	ये	प्रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ण	
पसं	-	सं	सं	न	रं	सं	-	-	-	-	-	
मु	ऽ	क्त	क	रो	ऽ	भ	य	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
									ध			
सं	गं	गं	रं	-	रं	सं	सं	सं	न	-	ध	
क	ठि	न	का	ऽ	म	खु	द	ही	क	रो	ऽ	
ध	सं	नि	धन	नी	ध	प	-	-	प	-	-	
अ	प	नी	आ	ऽ	न	बा	ऽ	ऽ	न	तू	ऽ	
						ध						
स	रे	ग	म	प	ध	प	-	-	-	-	-	II II
मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न	मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न	

* * *

बाग्ला

नव बसंतेर दानेर डालि
एनेछि तोदेरइ द्वारे,
आय, आय, आय
परिबि गलार हारे ॥
लतार बांधन हाराये माधबी मरिछे केंदे,
बेणिर बांधने राखिबि बेंधे,
अलकदोलाय दोलाबि तारे
आय, आय, आय ॥
बनमाधुरी करिबि चुरि आपन नबीन माधुरिते
सोहिनी रागिणी जागाबे से तोदेर
देहेर वीणार तारे तारे,
आ य, आ य, आय ॥

हिन्दी

नव बसंती में डालिया भरे दान लाये हैं,
तेरे ही द्वारे-आओ, आओ, आओ रे
पहन लो गले का हार-रे ॥
लता के बंधन में खोई वो माधवी रोए हो रोए
वेणी के बंधन में बांधे रख ले तू
अलक-झूले में झुलाना उसे
आओ आओ आओ रे ॥
वनमाधुरी कर लेगी चोरी-
अपने नव मन-माधुरी
सोहिनी रागिनी जगी तेरे ही
देह वीणा के तारों में-रे
आओ आओ आओ रे ॥

***

बाग्ला

खरबायु बय बेगे, चारि दिक छाय मेघे,
ओगो नेये, नाओखानि बाइयो।
तुमि कसे धरो हाल, आमि तुले बांधि पाल
हाँइ मारो, मारो टान हाँइयो ॥
शृंखले बारबार झंन्झन झंकार
नय ए तो तरणिर क्रंदन शंकार
बंधन दुर्बार सह्य ना हय आर,
टलोमलो करे आज ताइ ओ।
हाँइ मारो, मारो टान हांइयो ॥
गणि गणि दिन क्षण चंचल करि मन
बोलो ना याइ कि ना याइ रे।
संशयपारावार अंतरे हबे पार,
उद्बेगे ताकायो ना बाइरे।
यदि माते महाकाल, उद्दाम जटाजाल
झड़े हय लुंठित, ढेउ उठे उत्ताल,
होयो नाको कुंठित, ताले तार दियो ताल
जय-जय जय गान गाइयो।
हाँइ मारो, मारो टान हांइयो ॥

हिंन्दी

हवा वहे जोर शोर मेघा छाए चहुं ओर
नाविक हो बढ़ाओ नैया ॥
तुम कस धरो डाँड़, हम बांधे पतवार
जोर और जोर बहे नैया ॥
जंजीर झनकारे झननन झन्-झन्
नहीं नहीं नाव का डर या क्रंदन
बंधन जोरदार सहन से बाहर
डगमग-डग हो खेवैया ॥
जोर और जोर बहे नैया ॥
गिन गिन दिन छन, चंचल होवे मन
कहो नहीं, जाऊं या न जाऊं रे ।

संशय सागर मन ही मन हो ले पार
देखो न तुम भय से बाहर।
यदि मस्त महाकाल खोले निज जटाजाल
लुंठित जड़ से उर्मि हो उच्छ्ल
कुंठित न होना तालों ताल देना ताल
जय जय जय गीत गाये जा
जोर और जोर वहे नैया॥

बांग्ला

भांगो! बांध भेंगे दाओ, बांध भेंगे दाओ, बांध भेंगे दाओ,
बंदी प्राण मन होक उधाओ शुकनो गांगे आसुक
जीवनेर बन्नार उद्दाम कौतुक
भांगनेर जयगान गाओ॥
जीर्ण पुरातन याक भेसे याक
याक भेसे याक, याक भेसे याक।
आमरा शुनेछि ओइ,
मांभैः मांभैः मांभैः
कोन नुतनेरइ डाक।
भय करिना अजानारे,
रुद्ध ताहारि द्वारे दुर्दाइ बेगे धाओ॥

हिन्दी

तोड़ो! तोड़ो बंधन, तोड़ो बंधन, तोड़ो बंधन
बंदी प्राण-मन हो आजाद
तोड़ो! सूखे नद में जागें, जीवन ज्वार की मस्त
लीला सूखे नद में जागे।
टूटन का जय गाओ, टूटन का जय गाओ, टूटन का जय गाओ
जीर्ण पुरातन बह जाने दो, बह जाने दो, बह जाने दो
हमने सुनी है रे -माँ जय माँ, माँ जय नहीं भय।
कौन नवीन पुकारे
अंजाने का डर नहीं रे,
बंध उसी के दर पे वेग से आगे बढ़ो हो, तोड़ो!

***

बांग्ला

चरण धरिते दियो गो आमारे, नियो ना, नियो ना सराये
जीवन मरण सुख दुख दिये बक्षे धरिब जड़ाये ॥
स्खलित शिथिल कामनार भार बहिया बहिया फिरि कत आर
निज हाते तुमि गेंथे नियो हार,
फेलो ना आमारे छड़ाए ॥
चिरपिपासित वासना वेदना बांचाओ ताहारे मारिया।
शेष जये येन हय से विजयी तोमारि काछेते हारिया।
बिकाये बिकाये दीन आपनारे पारिना फिरिते दुयारे दुयारे
तोमारि करिया नियो गो आमारे
वरणेर माला पराये ॥

हिन्दी

शरण चरण की मंगू मैं तुझसे
सरका यूं- उन्हें ना ले -तू
जीवन मरण में सुख हो या दुख हो
दिल से उन्हें मैं लगाऊं ॥
हारे थके भार वासनाओं के ढोते फिरें हम कब तक उन्हें
निज हाथों से ही गूंथलो ये हार
बिखरो न तोड़ के हमे यों ॥
पल-पल के प्यासे ये वासना और ग़म
मार कर दे इन्हें नव जीवन
जीत आखरी वो जीत हो उसी की
हार कर तुझी से जयी हो
बिकता फिरूं दीन-हीन बन के
ठोकरें सहूँ कितनी दरों पे
ऐ रब तू अपना बना ले अब मुझको
जयमाल से वर ले मुझे तू।

बांग्ला

भालोबेसे, सखी, निभृते यतने
आमार नामटि लिखो तोमार मनेर मंदिरे।
आमार पराणे ये गान बाजिछे
ताहार तालटि शिखो तोमार चरणमंजिरे ।।
धरिया राखियो सोहागे आदरे
आमार मुखर पाखि तोमार प्रासाद प्रांगणे ।।
मने करे सखि, बांधिया राखियो
आमार हातेर राखी तोमार कनक कंगणे ।।
आमार लतार एकटि मुकुल
भुलिया तुलिया रेखो तोमार अलकबंधने।
आमार स्मरण शुभ सिंदुरे एकटि बिंदु एंको तोमार ललाट चंदने ।।
आमार मनेर मोहेर माधुरी
माखिया राखिया दियो तोमार अंग सौरभे
आमार आकुल जीबनमरण
टुटिया लुटिया नियो तोमार अतुल गौरवे ।।

हिन्दी

प्यार-प्यार में जतन से, तनहा में
नाम मेरा लिखलो सखी मन-मंदिर में
मेरे मन में गूंजे जो गीत सखी
ताल उसी का सीखो तेरे पग घूंघरू में ।।
सम्हाले रखना प्यार-प्यार से बातूनी पंछी मेरा,
तेरे महल-अंगना में। याद रहे सखी, बांधे रखना मेरे
हाथ की राखी तेरे कनक कंगना में ।।
मेरे लता की एक कली तुम भूल से लगा लो, अपने कुंतल-बंधन में।
मेरी यादें भरी मंगल रोली की आंक लो बिंदिया तेरे भाल-चंदन में।
मोहमयी मन माधुरी मेरी
चढ़ा ले, तेरे तन के सुरभि में
व्याकुल हो मेरा जीना मरना
टूट लुट जाये तेरे अतुल गौरव में ।।

बांग्ला

मने रबे किना रबे आमारे से आमार मने नाइ।
क्षणे-क्षणे आसि तब दुआरे, अकारणे गान गाइ॥
चले जाय दिन, यतोक्षण आछि
पथे येते यदि आसि काछाकाछि
तोमार मुखेर चकित सुखेर हासि देखिते ये चाइ ताइ अकारणे गान गाइ
फागुनेर फुल जाय झरिया फागुनेर अवसाने
क्षणिकेर मुठि देय भरिया, आर किछु नाहि जाने।
फुराइबे दिन, आलो हबे क्षीण,
गान सारा हबे, थेमें जाबे बीन,
यतक्षण थाकि-भरे दिबे नाकि
ए खेलारइ भेलाटाइ
ताइ अकारणे गान गाइ॥

हिन्दी

मन में रहूं या न रहूं मैं तेरे यादें बन जानूं ना, ना जानूं॥
घड़ी घड़ी दर पे तेर आऊँ, अकारण गीत गाऊँ॥
बीते शुभ दिन जब तक पास हूँ हमराही बन 'गर पास कभी आऊँ
मुख पे तेरे मैं चाहूं-देखूं..चंद सुखहास
सो ही अकारण गीत गाऊँ॥
फागुन के फूल लगे झरने, फागुन के विदाई से
छन-काल मुट्ठी भर दे चले मानो कुछ भी न जानें।
बीतते ही दिन आलोक विहीन, गीत होंगे समापन हो न बजेंगी बीन
जब तक पास हूँ भर क्यों न देते ये लीलारी मेरी नाव
सो ही अकारण गीत गाऊं॥

बांग्ला	हिन्दी
तुमि रबे नीरबे हृदये मम	तुम रहो तन्हाई में इस दिल में मेरे
निविड़ निभृत पूर्णिमानिशीथिनी-सम॥	ज्यों पूनम की रात घनी खड़ी खामोश है
मम जीवन यौवन मम अखिल भुवन	मेरी जिंदगी और शबाब मेरे सारे-सारे जहां
तुमि भरिबे गौरबे निशीथिनी सम॥	तुम भर दो शोहरत से उस रात की जैसे॥
जागिबे एकाकी तब करुण आँखि,	तन्हा मे जागेंगी तेरी दर्दे-निगाहें,
तब अंचल छाया मोरे रहिबे ढाकि।	तेरी आंचल-शाया मुझे ढकेगी शाये से।
मम दुःख वेदन मम सफल स्वपन।	मेरे रंज और ये गम
तुमि भरिबे सौरभे निशीथिनी सम॥	मेरे सपने कामयाब तुम महका देना
	उस रात की जैसे॥

बांग्ला	हिन्दी
विश्व साथे योगे येथाय बिहारो।	विश्वबंधु बन तू जहाँ विचरे।
सेइखाने योग तोमार साथे आमारो॥	वहीं बंधे हम, हम साथी बन तेरे॥
नयको बने नय बिजने नयको आमार आपन मने	ना तू वन में न विजन में ना तू केवल मेरे मन में
सबार येथाय आपन तुमि हे प्रिय	सबके मन में आत्मा बने तू है प्रेमी।
सेथाय आपन आमारो॥	वहीं बसूँ तेरे संग मैं॥
सबार पाने येथाय बाहु पसारो	सबके खातिर बाहें ज्यों तू पसारे,
सेइखानेतेइ प्रेम जागिबे आमारो।	प्रेम हिया में जाग उठे हो, हमारे।
गोपने प्रेम रयना घरे आलोर मतो छड़िये पड़े	छुप कर प्रेम बसे ना घर में आलोकधारा सी फैले रे
सबार तुमि आनंद धन हे प्रिय, आनंद सेइ आमारो॥	सबके मन का उमंगधन हो प्रेमी
	वही आनंद धन हो मेरे॥

जलज भादुडी

जन्म : इलाहाबाद में। शिक्षा : स्नातकोत्तर- इलाहाबाद विश्वविद्यालय से।
संगीत शिक्षा : प्रभाकर बीटी मियुज़िकः प्रयाग संगीत समिति इलाहाबाद ।
विवाह उपरांत बंगाल की मिट्टी से जुडी। भाषाई सौहर्द-संपर्क के लिये अनुवाद तथा मौलिक द्विभाषी लेखन शुरू किया। १९७१ में अपनी, पंजीकृत संस्था 'पारिजात इस्टीच्यूट', के अंतर्गत अनेक सांस्कृतिक तथा साहित्यिक कार्यक्रम, दूरदर्शन, रेडियो एवं मंचों पर किया।
मानव-संसाधन-विकास मंत्रालय से फेलोशिप की प्राप्ति के दौरान शोधकार्य हिन्दी अनुवाद में नजरूल तथा रवीन्द्र के गीतों पर किया।

हिन्दी में सृजन (अनुवाद):-
१. रवींद्र गीतवितान केंद्र द्वारा पुरस्कृत प्रथम संस्करण १९९०
२. मानवतावादी नजरूल के गीत (१९९२)
३. नजरूल : विविध- प्रसंग गीत-कविता-लेख (अनुवाद, मौलिक निबंध एवं संपादन) २००२ में प्रकाशित।
४. सुनील गंगोपाध्याय की प्रतिनिधि कहानियां (२००१ में)।
५. टूटा पियानो (मौलिक कथा संग्रह -२००१ में)।

बांग्ला में सृजन :
१. 'संगीत संगीत' निबंध ग्रंथ संपादन एवं लेखन प्रकाशित १९८६
२. अनेक बांग्ला कहानी, कविता एवं लेख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित
३. बांग्ला लिपि में हिन्दी अनुवाद के तीन ग्रंथः-
   १. नजरुल श्रद्धांजली, २. बोई मेला संख्या (रवीन्द्र संगीत) १९९७
   ३. हिन्दी में नजरूल गीति शिखुन ओ शेखान (स्वरलिपि सहित २००१)
४. आमार एकान्नोटी कविता। (प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की 'मेरी इक्यावन कविताएं' का अनुवाद)

संगीत सृजन :
रवीन्द्र तथा नजरूल के गीतों के हिन्दी में आठ कैसेट, तुलसी विनय पत्रिका, कल्पतरु रामकृष्ण आदि का हिन्दी में कैसेट।
संप्रति : अनुवाद व मौलिक लेखन, संगीत शोधकार्य एवं मौलिक गीत-संगीत निर्माण में व्यस्त।